राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, शुक्रवार, 02 मई 2025
वर्ष 06, अंक 213, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

किसान पर टाइगर का हमला इलाके में दहशत, वन विभाग के हाथ 03

गोंडा में जानलेवा हो रहे पुल- रेलिंग के अभाव में मौत को दावत, बरसात से पहले खतरे की घड़ी....12

एक ही अदालत की विभिन्न पीठों द्वारा असंगत फैसले न्यायपालिका में विश्वास को हिला देंगे- सुप्रीम कोर्ट

स्वतंत्र प्रभात

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि न्यायालय की विभिन्न पीठों के असंगत निर्णय न्यायपालिका में जनता के विश्वास को हिला देते हैं तथा मुकदमेबाजी को जुआ खेलने का खेल बना देते हैं।न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ वैवाहिक क्रूरता के एक मामले की सुनवाई कर रही थी, जिसमें कर्नाटक उच्च न्यायालय की एक पीठ ने पति के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही को रद्द कर दिया था, लेकिन एक समन्वय पीठ ने कुछ ससुराल वालों के खिलाफ मामला जारी रखने की अनुमति दी थी। सर्वोच्च न्यायालय ने पाया कि यह समझ से परे है कि यद्यपि कुछ ससुराल वालों के खिलाफ कार्यवाही रद्द करने से इनकार करने वाला आदेश पहले ही पारित किया जा चुका था, लेकिन उच्च न्यायालय ने पति के खिलाफ कार्यवाही रद्द करते समय इसका संदर्भ नहीं दिया।

न्यायालय ने कहा कि न्यायाधीश के लिए यह आवश्यक है कि वह समन्वय पीठ के पूर्व निर्णय का संदर्भ लें तथा उसमें दिए गए कारणों को स्पष्ट करते हुए किसी भिन्न निष्कर्ष पर पहुंचें।" ऐसा न करने से न्यायिक मर्यादा और अनुशासन का उल्लंघन होता है। न्यायिक नतीजों में एकरूपता एक जिम्मेदार न्यायपालिका की पहचान है। अलग-अलग बेंचों से आने वाले असंगत फैसले जनता के भरोसे को हिला देते हैं और मुकदमेबाजी को सट्टेबाजों के खेल में बदल देते हैं। इससे फोरम शॉपिंग जैसी कई कपटी और तीखी प्रथाओं को बढ़ावा मिलता है जो न्याय की स्पष्ट धारा को बिगाड़ती हैं। विवादित आदेश न्यायिक सनक और मनमानी के दोष से ग्रस्त है और इस आधार पर भी इसे रद्द किया जा सकता है ," इसने जोर दिया।

यह निर्णय शिकायतकर्ता पत्नी द्वारा दायर अपील पर पारित किया गया, जिसका पति के खिलाफ भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 498ए और अन्य प्रावधानों के तहत मामला उच्च न्यायालय ने 2024 में रद्द कर दिया था।इस जोड़े की शादी 2012 में हुई थी और उनके दो बच्चे हैं। 2020 में, उसके और उसके मायके के अन्य रिश्तेदारों के साथ ससुराल वालों ने कथित तौर पर मारपीट की, जिसके बाद मामला दर्ज किया गया। इसके बाद महिला के ससुराल वालों ने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जिसने 70 वर्षीय सास-ससुर के खिलाफ कार्यवाही रद्द कर दी, लेकिन अन्य ससुराल वालों के खिलाफ मामला जारी रखने की अनुमति दे दी।जब पति ने भी बाद में हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया तो एक समन्वय पीठ ने उसके खिलाफ कार्यवाही रद्द कर दी। इसके बाद महिला ने सुप्रीम कोर्ट का रुख किया।

उच्च न्यायालय के विरोधाभासी निर्णयों पर आपत्ति जताते हुए शीर्ष अदालत ने कहा,÷वर्तमान मामला एक विचलित करने वाली तस्वीर पेश करता है। जबकि एक न्यायाधीश ने ससुराल वालों के खिलाफ कार्यवाही को रद्द करने से इनकार कर दिया, अन्य बातों के साथ-साथ, घाव प्रमाण पत्र का अवलोकन करते हुए कि अपीलकर्ता पर हमला किया गया था और उसे सामान्य चोटें आई थीं, एक अन्य न्यायाधीश ने विवादित आदेश द्वारा प्रतिवादी-पति के खिलाफ कार्यवाही को रद्द कर दिया, जिसमें चिकित्सा प्रमाण पत्र शिकायत में आरोपों के अनुरूप नहीं था, अर्थात घाव प्रमाण पत्र यह नहीं दर्शाता है कि चोटें किसी कुंद हथियार से आई थीं।" इसके बाद न्यायालय ने अपील के गुण-दोष पर विचार किया और पाया कि पति के

खिलाफ कार्यवाही को रद्द करने वाले न्यायाधीश ने एफआईआर/आरोपपत्र में आरोपों की विश्वसनीयता के संबंध में जांच शुरू करके कानूनी गलती की थी।

न्यायालय ने कहा,"न्यायाधीश ने एफआईआर में वर्णित हमले की प्रकृति की तुलना घाव प्रमाण पत्र से की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि आरोप झूठे हैं। ऐसा करते हुए, न्यायाधीश ने कार्यवाही को रद्द करने के लिए एक लघु परीक्षण किया, जो कानून में अस्वीकार्य है। "इस संदर्भ में, शीर्ष अदालत ने इस बात पर जोर दिया कि उसने उच्च न्यायालयों को आपराधिक कार्यवाही को रद्द करने के लिए अपने अंतर्निहित अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए 'मिनी ट्रायल' शुरू करने से बार-बार मना किया है।

उच्च न्यायालय के निष्कर्षों से असहमति जताते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने पाया कि महिला पर उसके पति और अन्य ससुराल वालों द्वारा मिर्च पाउडर फेंकने और मारपीट करने के आरोप का समर्थन न केवल घाव प्रमाण पत्र से होता है, बल्कि एक पड़ोसी के बयान से भी होता है।

इस प्रकार, न्यायालय ने कहा कि यह कोई कानूनी साक्ष्य न होने का मामला नहीं था, जहां उच्च न्यायालय कार्यवाही को रद्द कर सकता था।इसमें कहा गया है," आरोपों को खारिज करने के समर्थन में न्यायाधीश ने यह भी कहा कि आरोपों से यह स्पष्ट नहीं है कि हमला किसने किया और वैवाहिक मुकदमे के लंबित रहने के दौरान अभियोजन पक्ष द्वारा किया गया आरोप अदालत की प्रक्रिया का दुरुपयोग मात्र था। ये आधार भी समान रूप से अस्वीकार्य हैं। " इसके अलावा, न्यायालय ने उच्च न्यायालय की इस बात के लिए भी आलोचना की कि यह कार्यवाही दुर्भावनापूर्ण थी तथा न्यायालय की प्रक्रिया का दुरुपयोग थी, क्योंकि कार्यवाही वैवाहिक न्यायालय में भी लंबित थी।इसमें कहा गया है," पत्नी पर क्रूरता से संबंधित अपराध हमेशा वैवाहिक विवादों से उत्पन्न होते हैं। तदनुसार, पक्षों के बीच वैवाहिक कार्यवाही के लंबित रहने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि चिकित्सा साक्ष्य और स्वतंत्र गवाह द्वारा समर्थित हमले का आरोप लगाते हुए आपराधिक कार्यवाही शुरू करना दुर्भावना और अदालत के दुरुपयोग का परिणाम है। "इस प्रकार न्यायालय ने उच्च न्यायालय के आदेश को रद्द कर दिया और पति के खिलाफ कार्यवाही पुनः शुरू कर दी।

राज्यों के लिए केंद्र से राशन लेना और उसे मुफ्त में बांटना आसान है, लेकिन बोझ करदाताओं पर पड़ता है- सुप्रीम कोर्ट

स्वतंत्र प्रभात

खाद्य सुरक्षा पर याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए न्यायालय ने कहा कि रोजगार सृजन और बुनियादी ढांचे का विकास भी महत्वपूर्ण है; पूछा कि क्या देश अभी भी गरीबी के उसी स्तर पर अटका हुआ है, जिस स्तर पर 2011 में था, जब पिछली जनगणना की गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार (30 अप्रैल, 2025) को कहा कि राज्यों के लिए केंद्र से खाद्यान्न प्राप्त करना और राजनीतिक लोकप्रियता हासिल करने के लिए इसे लोगों के बीच मुफ्त में वितरित करना "बहुत आसान" है। हालांकि, न्यायमूर्ति सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि अंततः करदाताओं को ही गरीबों को मुफ्त राशन वितरित करने का बोझ उठाना पड़ता है। अदालत ने कहा कि रोजगार सृजन और बुनियादी ढांचे का निर्माण जैसी अन्य गतिविधियां भी मुफ्त राशन वितरण जितनी ही महत्वपूर्ण हैं।

न्यायालय खाद्य सुरक्षा, विशेष रूप से प्रवासी श्रमिकों के लिए, पर स्वतः संज्ञान मामले की सुनवाई कर रहा था। यह मामला मूल रूप से कार्यकर्ता अंजलि भारद्वाज, हर्ष मंदर और जगदीप छोकर द्वारा दायर याचिकाओं पर आधारित था, जिनका प्रतिनिधित्व अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने किया था, जिसमें केंद्र और राज्यों को कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के दौरान संकटग्रस्त प्रवासी श्रमिकों के लिए खाद्य सुरक्षा, नकद हस्तांतरण और अन्य कल्याणकारी उपाय सुनिश्चित करने के निर्देश देने की मांग की गई थी। न्यायमूर्ति कांत ने टिप्पणी की, "अब, 2025 में, क्या हम अभी भी 'गरीबी' का टैग ढो रहे हैं? राज्य कहते हैं कि हम राशन कार्ड, मुफ्त राशन जारी करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते केंद्र इसे दे... केंद्र देगा, लेकिन किसकी कीमत पर? बोझ करदाता पर है... हम बुनियादी ढांचे, रोजगार सृजन के लिए पैसा कहां से लाएंगे... ये भी ऐसे मुद्दे हैं जिन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।"

न्यायमूर्ति कांत ने पूछा कि क्या 2025 में भी देश गरीबी के उसी स्तर पर अटका हुआ है, जिस पर 2011 में था, जब पिछली जनगणना हुई थी। श्री भूषण ने कहा कि पिछले दशक में जनसंख्या में वृद्धि के साथ ही गरीब लोगों की संख्या भी बढ़ी होगी। इससे पहले की सुनवाई में शीर्ष अदालत ने कहा था कि खाद्य सुरक्षा की समस्याओं का दीर्घकालिक समाधान रोजगार पैदा करना है। श्री भूषण ने तर्क दिया था कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) अभी भी 2011 की जनगणना के आंकड़ों से प्रेरित है। उन्होंने बताया था कि हस्र्न्र के तहत 75% ग्रामीण आबादी और 50% शहरी आबादी को दो श्रेणियों के लाभार्थियों - अंत्योदय अन्न योजना परिवारों और प्राथमिकता वाले परिवारों के तहत अत्यधिक सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्राप्त करने का अधिकार है। हालाँकि, यह कोटा 2011 की जनगणना पर आधारित था। केंद्र की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने भी श्री भूषण की दलीलों पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा था कि एनएफएसए के 81.35 करोड़ पात्र लाभार्थी हैं।

संक्षिप्त ख़बरें

पुलिस प्रशासन की नाक के नीचे सफाईयों ने फूंका सी.एम. का पुतला

लखीमपुर खीरी समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन पर हुए हमले के विरोध में सैकड़ो की संख्या में सपाइयों ने कलेक्ट्रेट पहुंच कर विरोध प्रदर्शन किया। और सपा नेत्री प्रख्यात खरे के नेतृत्व में सीएम का पुतला दहन किया गया। बताते चलें समाजवादी पार्टी के प्रस्तावित विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर प्रशासन ने पूरी तैयारी कर रखी थी पुलिस प्रशासन पूरी तरह से अलर्ट मोड पर रहा और भारी पुलिस बल तैनात किया गया कलेक्ट्रेट एक तरह से छावनी में तब्दील दिखाई पड़ रही थी।इसके बावजूद सपाई सीएम का पुतला फुकने में सफल हो गए। सूत्र बताते हैं कुछ सफाई कलेक्ट्रेट के अंदर विरोध प्रदर्शन करते रहे तब तक कलेक्ट्रेट गेट पर सपाईयों ने फूंक दिया सी.एम का पुतला वीडियो हुआ वायरल।

बालाजी बेकरी दुकान का ब्लॉक प्रमुख ने फीता काट किया उद्घाटन

बरेली/क्यों लड़कियां में स्थित मैं मार्केट में बालाजी बेकरी की दुकान खोली गई है इसका उद्घाटन ब्लॉक प्रमुख रवि शंकर गंगवार ने पिता काट कर किया यहां पहुंचने पर ब्लॉक प्रमुख का जोरदार स्वागत किया गया इस मौके पर महामही राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार की पुत्री अर्बन कोऑपरेटिव बैंक की अध्यक्ष श्रुति गंगवार बाल श्रम बोर्ड के सदस्य भोजेंद्र गंगवार ठाकुर विनय सिंह प्रधान सत्येंद्र मोहन गंगवार आकाश गंगवार ओमप्रकाश गंगवार समेत भारी संख्या में लोग उपस्थित थे इस दुकान के खुलने से ग्रामीणों को अब खाने पीने की वस्तुओं को लेने के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

CM सचिवालय के नाम पर ठगी का जाल, BSF जवान लुटा, धमकाया गया

मुख्यमंत्री कार्यालय और सचिवालय के नाम पर बीएसएफ जवान से 10 लाख की ठगी की गई है और अब जान से मारने की धमकी दी जा रही है।

स्वतंत्र प्रभात

अयोध्या/बीकापुर। मुख्यमंत्री कार्यालय और सचिवालय के नाम पर नौकरी दिलाने का झांसा देकर बीएसएफ के जवान से 10 लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। पीड़ित जवान ने अब थाने में तहरीर देकर आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की मांग की है। जवान ने कहा है कि ठगों के झांसे में आकर न केवल उसकी जमा पूंजी लुट गई, बल्कि अब जान से मारने की धमकी भी दी जा रही है। पीड़ित लाल जी यादव, जो कि वर्तमान में भारत-बांग्लादेश सीमा पर बीएसएफ में तैनात हैं, ने बताया कि 2021 में बीकापुर थाना क्षेत्र के अहिरौली निवासी नमित यादव नामक व्यक्ति से उनकी मुलाकात हुई थी। उसने खुद को उच्च राजनीतिक संपर्कों वाला बताते हुए कहा कि वह यूपी पुलिस में सब इंस्पेक्टर की भर्ती में 'जुगाड़' से नौकरी लगवा सकता है।

ठग ने अपने साथ एक अन्य व्यक्ति हरिकेश पटेल को भी मिलवाया, जिसने खुद को मुख्य सचिव का पर्सनल सेक्रेटरी बताते हुए सचिवालय का फर्जी पहचान पत्र और मुख्यमंत्री व अधिकारियों के साथ फोटो दिखाए। दोनों ने मिलकर पीड़ित से कहा कि 10 लाख रुपये में उसके भाई की नौकरी सुनिश्चित कर देंगे। विश्वास में लेकर ठगों ने लाल जी यादव से 10 लाख रुपये नकद ले लिए, जिसमें 6 लाख का उन्होंने सर्विस पर लोन लिया और बाकी रिश्तेदारों से उधार लिया। लेकिन जब परिणाम आया तो उनके भाई का चयन नहीं हुआ।

शुरुआत में बहाने बनाते रहे, बाद में जब पीड़ित ने पैसे वापस मांगे तो जान से मारने की धमकी देने लगे। 25 अप्रैल 2025 को जब

वह दोबारा हरिकेश की दुकान पर पैसे मांगने गया, तो उसे गालियां दी गई, धमकाया गया और फर्जी मुकदमों में फंसाने की धमकी दी गई।

लाल जी यादव ने कहा कि वह मानसिक रूप से टूट चुके हैं और इलाज करवा रहे हैं। उन्होंने आरोपितों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है और जानमाल की सुरक्षा की गुहार लगाई है। आज हमारे संवाददाता विपिन शुक्ला ने बीकापुर एस ओ से बात की तो दारोगा से मामले को दिखवाने की बात कर के फ़ोन काट दिए। बड़ा सवाल ये है कि मुख्यमंत्री ऑफिस के नाम पर किए गए इतने बड़े फ्रॉड पर पुलिस क्यों सुस्ती दिखा रही है?

पुलिसिया कार्रवाई पर प्रश्न चिन्ह.......?

● पुलिस बूथ के सामने हुई दिनदहाड़े कॉस्मेटिक दुकान में चोरी , सीसीटीवी में वारदात हुई कैद

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

मोहनलालगंज, लखनऊ, राजधानी लखनऊ के थाना क्षेत्र मोहनलालगंज कस्बे में बुधवार शाम उस समय हड़कंप मच गया जब एक कॉस्मेटिक की दुकान में दिनदहाड़े चोरी की घटना सामने आई। यह वारदात मौरावां रोड स्थित काशीश्वर इंटर कॉलेज के पास रोहित कॉस्मेटिक की दुकान में शाम करीब 5¬30 बजे हुई। खास बात यह रही कि दुकान पुलिस बूथ से महज कुछ कदमों की दूरी पर स्थित है।चोरी की यह पूरी घटना दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई है। फुटेज में दिखाई दे रहा है कि चोर कैसे बेखौफ होकर दुकान में दाखिल हुआ और कुछ ही मिनटों में सामान समेट कर फरार हो गया। इस घटना ने पुलिस की कार्यप्रणाली और सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय

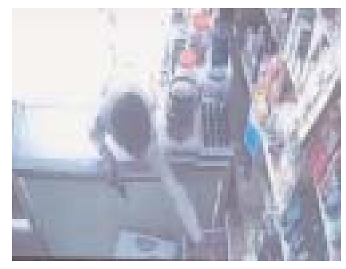

व्यापारियों में इस घटना को लेकर रोष व्याप्त है। उनका कहना है कि जब पुलिस के इतने नजदीक ऐसी वारदात हो सकती है, तो बाकी इलाकों की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। व्यापारियों ने यह भी आरोप लगाया कि पुलिस गश्त केवल कागजों तक सीमित रह गई है और असल में सुरक्षा व्यवस्था की हालत बेहद चिंताजनक है।चोरी के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल का मुआयना किया और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इस घटना के बाद क्षेत्र के व्यापारी दहशत में हैं और उन्होंने पुलिस से इलाके में सुरक्षा बढ़ाने की मांग की है।

वन और पुलिस विभाग की सर परस्ती में लकड़कट्टे ने किया हरियाली का सफाया

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

लखीमपुर खीरी मामला वन रेंज धौरहरा तथा थाना क्षेत्र शारदा नगर के ग्राम भरतपुर का है। जहां पर दबंग ठेकेदार ने वन विभाग और पुलिस से साठगांठ कर 8 शीशम के पेड़ों को अपना निशाना बना दिया। मिली जानकारी के अनुसार वन रेंज धौरहरा सहित थाना क्षेत्र शारदा नगर के अंतर्गत भरतपुर गांव में गांव के पूर्व बगैर परमिट 8 शीशम के पेड़ काट लिए जाने का मामला जन चर्चा का विषय बना है। मिली जानकारी के अनुसार काटे गए ऑठो शीशम के पेड़ों का परमिट नहीं था।

उक्त सारा खेल वन रेंज के अंतर्गत तैनात वन दरोगा और फॉरेस्ट गार्ड सहित शारदा नगर पुलिस से साठगांठ करके खेला गया है। विभागीय जिम्मेदारों की सरपरस्ती में जनपद खीरी में हरियाली की सफाया का अभियान सा चल रहा है। विभागीय जिम्मेदारों की लकड़ कट्टों के साथ चल रही सेटिंग गेटिंग के चलते लकड़कट्टे बेखौफ जब और जहां चाहते हैं हरियाली का सफाया

कर डालते हैं। धौरहरा रेंज में काटे गए इन शीशम के पेड़ों की भनक वन क्षेत्र अधिकारी धौरहरा को ना होना किसी के गले नहीं उतर रहा है। यह कोई पहली घटना नहीं है जनपद में हर दिन अवैध कटान की घटनाएं अखबारी सुर्खियां बनती हैं लेकिन जिम्मेदारों की नींद टूटने का नाम ही नहीं ले रही है। अब देखना यह है कि वन क्षेत्र अधिकारी धौरहरा उपरोक्त मामले में क्या कार्यवाही करते हैं।

4 करोड़ 53 लाख से कराये जा रहे कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के निर्माण में भारी भ्रष्टाचार के आरोप

● ठेकेदार और जे.ई. की मिली भगत से पीला ईट और घटिया मसाला लगा मानकविहीन निर्माण कार्य कराए जाने के आरोप

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

लखीमपुर खीरी विकासखंड लखीमपुर के अंतर्गत ग्राम पंचायत कोरैया जंगल में कराए जा रहे कस्तूरबा आवासीय विद्यालय में मानकों को ताक पर रखकर पीला ईट और घटिया किस्म मसाला लगा गुणवत्ता विहीन निर्माण कार्य कराए जाने का मामला प्रकाश में आया है। उक्त निर्माण के अंतर्गत विद्यालय निर्माण के साथ-साथ बच्चों के आवासों का भी निर्माण कार्य चल रहा है।सूत्र बताते हैं कि उक्त स्कूल में कक्षा 1 से कक्षा 12 तक बालिका शिक्षा ग्रहण करेंगी और वही रुकेगी भी, विद्यालय की छत पर कमरों का निर्माण कराया जा रहा है। उक्त आवासीय विद्यालय के निर्माण कार्य में एस्टीमेट जरूर बना होगा और उसमें प्रथम श्रेणी ईट रोडा,सीमेंट, सरिया के साथ-साथ मौरंग बालू का उपयोग किए जाने की बात सूत्रों ने बताई है।लेकिन यहां पर जे.ई और ठेकेदार की मिली भगत से मानकों को ताक पर रखकर मानक विहीन निर्माण कराकर खुद की तिजोरिया बढ़ाने में लगे देखे जा सकते हैं।शायद इन लोगों को जिला अधिकारी दुर्गा शक्ति नागपाल की सख़्ती का जरा सा भी डर नहीं है जो उनके रहते मानक विपरीत निर्माण कार्य कराया जा रहा है।उपरोक्त मानक विपरीत निर्माण से आक्रोशित ग्राम प्रधान का कहना है कि इतनी बड़ी बिल्डिंग का मानक विहीन निर्माण हो रहा है इस तरह से तो इसके चंद माह में ही छत टपकने लगेगी और इमारत गिरने लगेगी।कई जगह इसी तरह के हादसे हो चुके हैं इनका जिम्मेदार कौन होगा यदि कहीं कुछ इस तरह का हुआ हादसा तो? ग्रामीणों का आरोप है ठेकेदार मोटी कमाई के फेर में दो मंजिल पर कई कमरे पिला ईट से बनवा चुका है उक्त खेल में जे.ई.की संलिप्तता नजर आ रही है।

क्या कहते हैं ग्राम प्रधान कोरैया जंगल

ग्राम प्रधान ने बताया कि जब उक्त मामले पर ठेकेदार से कहा गया तो ठेकेदार ने कहा ईट सब जगह ऐसे ही लगती है। आपको जो करना है कर लो ठेकेदार के कार्य व्यवहार से ग्रामीणों व ग्राम प्रधान सहित जनता में जनाक्रोश व्याप्त है।

संक्षिप्त खबरें

ठेकेदार टूर एण्ड ट्रेवल्स मुम्बई ने पैसे भी लिए और बस में बैठने भी नहीं दिया

बस वालों की हठधर्मिता से जिले के 4 लोग मुम्बई में फंसे

बलरामपुर। पुलिस को हफ्ता देता हूं आर टी ओ को लाइन देता हूँ। तुम्हारे जैसे 200 लोगों को मुम्बई लाता व ले जाता है। फेसबुक इंस्टाग्राम तथा व्हाटसप ग्रुप पर डाल कर मेरा कुछ भी उखाड़ नहीं पाओगे। यह शब्द हैं ठेकेदार टूर एण्ड ट्रेवल्स की बस न 0 एम पी 70 जेड सी 5068 बस जो भिन्गा से मुम्बई तक सवारियों को लाती ले जाती है उसके मुम्बई में स्थित हेड आफिस पर बैठे कार्यकर्ता की जो एक ग्राहक से बात चीत कर रहा है। मामला इस तरह से हुआ कि वलरामपुर जनपद व श्रावस्ती जनपद निवास प्रवीन गुप्ता व रामू, अमन व गौरव जो रोजी रोटी कमाने मुम्बई गये थे और चारों को वापस घर आना था पांच लोगों ने दि 28-04- 2025 को ठेकेदार टूर एण्ड ट्रेवल्स के आफिस पर बस से आने के लिये 1500/- रूपये प्रति व्यक्ति सीट बुक कराया था। बाद में किसी फोन करके पांचो लोगों से प्रति व्यक्ति 1900/- रुमये मांगे गये। जब यत्रियों ने इस पर आपत्ति जताया तो आफिस से बात करने वाले व्यक्ति उपर लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए शब्दों का प्रयास किया। दि001-05-2025 को जब यह लोग बस में बैठने गये तो बस वालों ने इन लोगों बस में बैठने भी नही दिया और जमा 1000/- रूपये भी वापिस नही किया जबकि इन चारो लोगों के पास पैसे जमा करने की रशीद बस का फोटो के तथा काल रिकार्डिंग आदि सारी चीजे मौजूद हैं

जिलाधिकारी ने गौशाला एवं सहकारी संघ कप्तानगंज गेहूं क्रय केन्द्र का किया आकस्मिक निरीक्षण

बस्ती। बस्ती जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने विकास खण्ड कप्तानगंज के ग्राम सड़वलिया में स्थित गौशाला एवं सहकारी संघ कप्तानगंज गेहूं क्रय केन्द्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। ग्राम सड़वलिया में स्थित गौशाला के निरीक्षण में उन्होने पाया कि गौशाला पर दो कर्मचारी कार्यरत है, जिनको मार्च 2025 तक मानदेय मिला है। गौशाला केन्द्र पर 42 पशु है, जिनकी टैगिंग की गयी है। उन्होने दैनिक रजिस्टर को देखा, जो अद्यतन नहीं पाया गया। उन्होने पाया कि पानी पीने के लिए टंकी बनी हुई है एवं भूसा पर्याप्त है तथा बाउन्ड्रीवाल नहीं बनी है। इस परिसर से बाहर दो बीघा में हरा चारा बोया गया है। उन्होने पशु चिकित्साधिकारी को निर्देश दिया कि परिसर के बगल स्थित बंजर भूमि में चारे को उगाये एवं दैनिक रजिस्टर को प्रतिदिन अपडेट करें तथा खण्ड विकास अधिकारी बाउन्ड्रीवाल बनाने की कार्यवाही करें। सहकारी संघ कप्तानगंज गेहूं क्रय केन्द्र के निरीक्षण में उन्होने पाया कि केन्द्र पर गेहूँ का तौल नहीं किया जा रहा है। बताया गया कि कल 29 अप्रैल को 14 कुन्तल गेहूँ का तौल ग्राम में किया गया है, किन्तु लाया नहीं गया है। उन्होने देखा कि गेहूँ का क्रय बहुत कम किया गया है। इस स्थिति पर उन्होने केन्द्र प्रभारी को निर्देशित किया कि ग्राम में जाकर कृषको से सम्पर्क कर अधिक से अधिक गेहूँ क्रय करवाया जाय। निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी विजय भान पाण्डेय एवं संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

ट्रैक्टर से 60 पेटी हरियाणा निर्मित अवैध अंग्रेजी शराब बरामद

अंतर्राज्यीय अभियुक्त गिरफ्तार

देवरिया। पुलिस अधीक्षक विक्रान्त वीर के निर्देशन में जनपद में अवैध तस्करी एवं अपराधों की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत महुआडीह पुलिस ने धनौती रजडीहा पुल के पास एक ट्रैक्टर को रोककर चेक किया गया । ट्रैक्टर के पीछे लगी भूसा मशीन के अन्दर अवैध शराब की पेटियां पायी गयी । बारिकी से छानबीन करने पर कुल 60 पेटी अवैध अंग्रेजी शराब(हरियाणा निर्मित) बरामद करते हुए अभियुक्त दिनेश पुत्र प्रताप सिंह ग्राम बदाना थाना सदर जिला सोनीपत, हरियाणा को गिरफ्तार किया है । बरामद अवैध शराब व वाहन को कब्जे में लेते हुए अभियुक्त को गिरफ्तार कर मु0अ0सं0-89/2025 धारा- 60/63 आबकारी अधिनियम के तहत केस दर्ज करते हुए विधिक कार्यवाही की जा रही है ।

14 सूत्रीय मांगों को लेकर बीएसए कार्यालय पर गरजे शिक्षक- चंद्रिका सिंह

शिक्षकों की समस्याओं को ध्यान दें सरकार अन्यथा बड़ा आंदोलन होगा

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के बैनर तले प्रदेश नेतृत्व के आह्वान पर गुरुवार को 14 सूत्रीय मांगों को लेकर बड़ी संख्या में शिक्षकों ने संघ के जिलाध्यक्ष चन्द्रिका सिंह के नेतृत्व में बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय पर धरना दिया और मांगो के समर्थन में गरजे। इसके बाद जिलाधिकारी द्वारा नामित नायब तहसीलदार कमलेन्द्र सिंह तथा प्रभारी बीएसए विनोद त्रिपाठी को ज्ञापन सौंपा।धरने को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष ने कहा कि परिषदीय विद्यालयों का शिक्षक संकट के दौर से गुजर रहा है हर रोज मनमाने आदेश जारी होने के साथ ही धीरे-धीरे सारे अधिकार छीन लिए जा रहे हैं। कहा कि शिक्षकों की मांगे यदि नहीं मानी गई तो आंदोलन तेज किया जाएगा और मांगे पूरी होने तक यह जारी रहेगा। जिला मंत्री बाल कृष्ण ओझा और जिला कोषाध्यक्ष दुर्गेश यादव ने कहा कि सरकार के तानाशाही रवैए के खिलाफ पूरे प्रदेश के शिक्षक एकजुट हैं। शिक्षकों का शोषण एवं उत्पीड़न चरम पर है जिसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि जल्द ही शिक्षकों की समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो संगठन बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होगा। धरने को जिला उपाध्यक्ष सुधीर तिवारी, शिवप्रकाश सिंह, रवीश मिश्र, विवेककांत पाण्डेय, मुक्तेश्वर यादव, सनद पटेल, अशोक यादव, सुरेश गौड़, हरिओम यादव, प्रमोद सिंह, शुभेंदु सिंह, उमाकांत शुक्ल, अखिलेश पाण्डेय, रामसागर वर्मा, बब्बन पाण्डेय, रीना कन्नौजिया, शिल्पी पाण्डेय, रामभवन यादव, शिवरतन, सत्य प्रकाश कनौजिया, शिक्षा मित्र संघ अध्यक्ष वीरेंद्र शुक्ल, अनुदेशक संघ अध्यक्ष अमित सिंह, सहित अन्य पदाधिकारी ने संबोधित किया।

वक्ताओं ने पुरानी पेंशन बहाली, कोरोना काल में बढ़ाए गए विद्यालय समय को सही करने, 12 वर्ष की सेवा पूर्ण करने वाले शिक्षकों को प्रोन्नत वेतनमान के साथ ही मानव संपदा पर त्रुटियों में सरलीकरण, 17140 व 1850 वेतनमान से शिक्षकों को लाभान्वित करने, वरिष्ठता सूची तत्काल जारी करने, नए छात्रों के प्रवेश में आधार कार्ड की अनिवार्यता समाप्त करने, सामान्य अंतर्जनपदीय और अंतः जनपदीय स्थानांतरण, चयन वेतनमान की प्रक्रिया में सरलीकरण करने, 1 अप्रैल 2014 के बाद नियुक्त शिक्षकों को सामूहिक बीमा की व्यवस्था करने, दिव्यांग वाहन भत्ते में वृद्धि करने सहित विभिन्न मांगे उठाई।धरने में मुख्य रूप से विजय यादव,पवन,शांति यादव,जय श्री पाठक,सुरभि,नंदलाल, बीनू सिंह, गिरजेश सिंह, रजनीश यादव,मंगला मौर्य,गिरजेश दुबे, शैलेश तिवारी,अविनाश दुबे, अमरेंदर सिंह,अटल बिहारी, रवि सिंह,राजेश गिरी, अनुराग श्रीवास्तव, विजय, फारिया जमाल, प्रताप नारायण, अमित सिंह, विजय भारती, उत्तम दूबे, प्रशांत श्रीवास्तव, पारुल यादव, कंचन माला, नीलू द्विवेदी, सुरेंदर यादव, नवीन सिंह, बच्चा राम, मनीष मिश्र,उमाशंकर पाण्डेय, सत्यराम वर्मा, रामपियारे, प्रदीप गुप्ता, शिवनाथ ,वाशुदेव, रमेश विश्वकर्मा, कमालुद्दीन, हरिगोपाल शुक्ल, राम स्वरूप, संतोष पाण्डेय,हीरा लाल मधुकर, लालचंद, वैभव पाण्डेय, भरत लाल,नरोत्तम सिंह,रोहित सिंह, अंकित सिंह,अशोक चौधरी, धर्मेंद्र पाण्डेय, महेंद्र कुमार, चंद्रशेखर पाण्डेय शामिल रहे।

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाला व्यक्ति गिरफ्तार

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक महोदय के निर्देशानुसार अपराध और अपराधियों पर नियंत्रण रखने के उद्देश्य से आज दिनांक 01 मई 2025, दिन गुरुवार को एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है।अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय और क्षेत्राधिकारी पिपरी के मार्गदर्शन में उप निरीक्षक सच्चिदानंद दास अपनी टीम के साथ क्षेत्र में गश्त कर रहे थे। इसी दौरान सोशल मीडिया पर एक जाति विशेष के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले व्यक्ति के संबंध में प्राप्त शिकायत पर कार्रवाई करते हुए थाना अनपरा में मुकदमा अपराध संख्या 70/2025 धारा 196(1)क, 352, 351(2) भारतीय न्याय संहिता (BNS) बनाम मो0 हाफिज फ़ुलील पुत्र मोहम्मद अमीन, निवासी ईपीआई कॉलोनी गेट नंबर 2, थाना अनपरा, सोनभद्र दर्ज किया गया। आरोपी मो0 हाफिज फ़ुलील को धारा 170/126/135 भारतीय न्याय संहिता (BNSS) के तहत शांति भंग की आशंका में गिरफ्तार कर पुलिस हिरासत में माननीय न्यायालय भेजा गया।

आकाशीय बिजली गिरने से पति-पत्नी की एक साथ हुई मौत

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के वाल्टरगंज थाना क्षेत्र के हसनपुर निवासी अपने खेत में कार्य कर रहे थे कि अचानक आकाशीय बिजली गिरने से दोनों की मौत हो गई लोग साथ जीने मरने की कसमें खाते हैं, मगर बहुत काम ही मामले ऐसे होते हैं जिसमें दोनों साथ जीते हैं और साथ मर भी जाते हैं 7ऐसी एक घटना थाना वाल्टरगंज क्षेत्र में हुई जहां पर बुजुर्ग पति- पत्नी एक दर्दनाक हादसे में एक साथ मौत के मुंह में समा गए 7जनपद के वाल्टरगंज थाना क्षेत्र में गुरुवार दोपहर एक हृदयविदारक घटना ने सभी को झकझोर कर रख दिया। जानकारी के अनुसार गरज-चमक के साथ हल्की बारिश हो रही थी, तभी अचानक आकाशीय बिजली गिरने से खेत में काम कर रहे एक दंपति की मौके पर ही मौत हो गई। यह दर्दनाक हादसा न केवल परिवार बल्कि पूरे गांव को गहरे शोक में डुबो गया। मिली जानकारी के अनुसार वाल्टरगंज थाना क्षेत्र के हसनापुर के निकट ग्राम पंचायत रेहर जंगल के रहने वाले राम चरण (55) और उनकी पत्नी चंद्रावती देवी (52) अपने खेत में मेहनत कर रहे थे। दोपहर के समय मौसम अचानक बदल गया और बारिश शुरू हो गई। दोनों अपने खेत में ही थे कि तभी अचानक तेज आवाज के साथ आकाशीय बिजली गिर गई, जिससे दोनों की मौके पर ही मृत्यु हो गई।गांव के लोगों ने जब खेत में दोनों के शव पड़े देखे तो पूरे गांव में हाहाकार मच गया। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए और मृतकों के परिजनों को सूचना दी। परिजन शवों को घर ले आए। इस असमयिक हादसे से पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है और परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।गांव के लोगों ने बताया कि राम चरण और चंद्रावती देवी बेहद मेहनती और मिलनसार थे। उनकी असमय मौत से गांव ने दो सच्चे कर्मठ किसान खो दिए हैं। प्रशासन से मांग की जा रही है कि मृतकों के परिजनों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाए ताकि उनके परिवार को कुछ राहत मिल सके। यह हादसा एक बार फिर याद दिलाता है कि प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सतर्कता कितनी जरूरी है।

यूपी की कानून व्यवस्था खतरे में, दलितों की अस्मिता पर हमला बर्दाश्त नहीं - महेन्द्रनाथ

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले मे गुरूवार को राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के आवाहन पर समाजवादी पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं ने पार्टी जिलाध्यक्ष और बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव के नेतृत्व में जिलाधिकारी कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन कर राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। मांग किया कि सपा के राष्ट्रीय महासचिव राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन को करणी सेना द्वारा लगातार दिये जा रहे जान माल की धमकी, उनके आवास और काफिले पर हमला, उत्तर प्रदेश में पीडीए समाज के उत्पीड़न की बढती घटनाओं को देखते हुये संविधान और लोकतंत्र की भावना के अनुरूप निर्णय लिये जाय। बूंदा बांदी, बारिश, ओले पड़ने के दौरान हजारों समाजवादी केन्द्र और राज्य सरकार की मनमानी के विरोध में नारे लगा रहे थे। समाजवादी नेता, कार्यकर्ता शास्त्री चौक पर एकत्र हुये और डीएम कार्यालय तक पद यात्रा कर ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन देने के बाद सपा जिलाध्यक्ष और बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि सांसद रामजीलाल सुमन पर किया गया हमला भारतीय लोकतंत्र और दलितों की अस्मिता पर हमला है। इससे उत्तर प्रदेश सरकार की दलित विरोधी मानसिकता उजागर हो गयी है। कहा कि करणी सेना द्वारा सत्ता के संरक्षण में जिस प्रकार से अराजकता फैलाया जा रहा है उस पर सरकार और प्रशासन की चुप्पी हैरान करने वाली है। प्रदेश में कानून व्यवस्था की स्थिति दयनीय है। आये दिन हत्या, लूट, छिनैती की घटनायें बढ रही हैं। थाना, अस्पताल, तहसील आदि में गरीबों की कोई सुनाई नहीं हो रही है। यूपी में कानून का राज खतरे में हैं, ऐसे में राष्ट्रपति स्वतः संज्ञान ले जिससे संविधान और कानून का राज बना रहे।

पूर्व विधायक राजमणि पाण्डेय, विधायक राजेन्द्र चौधरी, पूर्व जिलाध्यक्ष राजाराम यादव, दयाशंकर मिश्र, मो. स्वालेह, जावेद पिण्डारी, विधानसभाध्यक्ष मो. सलीम, राजेन्द्र चौधरी, रन बहादुर यादव, चेयरमैन धीरसेन निषाद, चन्द्र प्रकाश चौधरी, अरविन्द सोनकर के साथ ही समीर चौधरी, गुलाम गौस, विपिन त्रिपाठी, रहमान सिद्दीकी, अजय यादव, अखिलेश यादव, गीता भारती, इन्द्रावती आदि ने एक स्वर से मांग किया कि सपा सांसद रामजी लाल सुमन पर जान लेवा हमलों की उच्च स्तरीय जांच कराकर करणी सेना के जिम्मेदार लोगों के विरूद्ध कार्रवाई सुनिश्चित किया जाय।

ज्ञापन सौंपने वालों में मुख्य रूप से गुलाब सोनकर, प्रशान्त कुमार यादव, दिनेश तिवारी, राजेन्द्र चौरसिया, इन्द्रजीत यादव, मो. तनवीर, उदय प्रताप यादव, कक्कू शुक्ला, श्याम सुन्दर यादव, तूफानी यादव, हनुमान प्रसाद, अकबर अली, रजनीश यादव, प्रभाकर आदि लोग उपस्थित रहे।

मजबूर होता जा रहा है मजदूरों की समस्याओं का सरकार हल करें, सामईन फारूकी

● विश्व मजदूर दिवस पर गोष्ठी में विचार विमर्श

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती । विश्व श्रमिक दिवस के अवसर पर गुरूवार को कबीर साहित्य सेवा संस्थान अध्यक्ष सामईन फारूकी के संयोजन में कलेक्टेऊट परिसर में गोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि भारत सहित विश्व स्तर पर मजदूर लगातार मजबूर होता जा रहा है। गोष्ठी को मुख्य अतिथि के रूप सम्बोधित करते हुये वरिष्ठ चिकित्सक डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि काम के 8 घंटे तय किये जाने को लेकर अमेरिका से जो संघर्ष शुरू हुआ वह सिलसिला अभी तक जारी है। कहा कि जिस दिन देश के मजदूर शिकागो के अमर शहीदों के बलिदान को आत्मसात कर लेंगे दुनियां से मजदूरों पर होने वाले जुल्म, अत्याचार समाप्त होने लगेगा। वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम प्रकाश शर्मा ने दुनियां में आ रहे बदलाव, पूंजीपतियों द्वारा शोषण, श्रमिक कानूनों पर विस्तार से चर्चा करते हुये कहा कि भारत के श्रमिक सबसे बुरे दौर से गुजर रहे हैं। एकजुटता से ही श्रमिकों की समस्या का समुचित हल हो सकेगा। साहित्यकार डा. रामकृष्ण लाल 'जगमग' ने कहा कि जब तक श्रमिक वर्ग आपस में बिखरा रहेगा समस्याओं का हल निकलना संभव नहीं है। आज सबसे बड़ी जरूरत एकजुटता को मजबूत करने की है। अध्यक्षता करते हुये बी.एन. शुक्ल ने कहा कि मजदूरों की स्थिति सुधरे इसके लिये साझा प्रयास करना होगा। गोष्ठी में बाबूराम वर्मा, डा. वाहिद अली सिद्दीकी, रामचन्दर तिवारी, डा. अफजल हुसेन, बी.के. मिश्र, पं. चन्द्रबली मिश्र आदि ने कहा कि सरकार और मालिकानों की भूमिका श्रमिकों के प्रति संवेदनहीन बनी हुई है। नये श्रम कानूनों ने श्रमिकों का संकट बढा दिया है। संविदा की नौकरियां युवाओं के जीवन के साथ खिलवाड़ है। इसे बंद किया जाना चाहिये। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सरोजा देवी, दुर्गा प्रसाद, दीनानाथ यादव, कृष्णचन्द्र पाण्डेय, पेशकार मिश्र, प्रदीप श्रीवास्तव, चन्द्रमोहन लाल, आदि उपस्थित रहे।

आदमतारा गांव में मुर्गी काटने की की दुकान बना जंग मैदान

● प्रार्थना पत्र पड़ने के बाद पुलिस ने तीन फिट दूर करवा दिया दुकान

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर- पचपेड़वा थाना क्षेत्र के आदमतारा गांव में घनी आबादी के मध्य मुर्गी काटने का दुकान जंग का मैदान बना हुआ है एक माह से पुलिस निर्णय नहीं ले पा रही है कि मुर्गी काटने की दुकान हटवायें या फिर रहने दें। प्राप्त समाचार के अनुसार पचपेड़वां थाना क्षेत्र के आदमतारा गांव में कुछ माह पूर्व घनी आबादी के मध्य हयातुल्ला पुत्र खुददी खाकर चौकी इत्यादि रखकर मुर्गी काट कर बेचने लगे इस पर एक समुदाय के लोग जो बगल में स्थित शिवमन्दिर पर पूजा पाठ करने जाते है उन लोगों आपत्ति व्यक्त किया इस पर हयातुल्ला आमादा फौजदारी हो गया। इसी बात से खिन्न होकर गांव के हीरालाल पुत्र अशरफी ने थाने पर प्रार्थना पत्र दे दिया। इस पर स्थानीय पुलिस की ने जाकर मुर्गी काटने की दुकान को हटवा दिया परन्तु दस दिनो बाद ही हयातुल्ला पुनः उसी स्थान पर मुर्गी काटने लगा। हीरा लाल ने पुनः इसकी सूचना थाने पर दी और मोवाइल पर पुलिस अधीक्षक बलरामपुर को भी सूचना दिया। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर थाना प्रभारी पचपेड़वा ने हल्का दरोगा संजय पाण्डेय को मुर्गी का दुकान हटाने के लिये भेजा दि030 अप्रैल को एस आई संजय पाण्डेय ने मौके पर पहुँच कर मुर्गी की दुकान को वहाँ से कुछ फिट हटवा कर चले गये गांव के बाहर कई मुर्गी काटने की दुकान भी आवेदक के दुकान हटवा कर गांव से बाहर करवाने का आवेदन किया था। इसी मध्य 21 अप्रैल को गांव के कुछ, लोगों से मुर्गी काटने को लेकर वाद विवाद भी हो गया। उल्लेखनीय है कि इस सम्बन्ध में जब हयाततुल्लाह से पत्रकारों ने बात किया कि तो हयातुल्लाह ने बडे ताव से बात किया कि मुर्गी काटने की दूकान नही हटायेंगे इसके लिए कुछ भी करना पड़े तो कर डालूंगा उल्लेखनीय है कि मुर्गीफार्म व मुर्गी काटने की दुकान आबादी से 500 मी0 दूर होना चाहिये परन्तु धनी आबादी के मध्य गांव में मुर्गी काटने की दुकान पुलिस क्यों नही हटा पा रही है यह अपने आप में प्रश्न चिन्ह खड़ा कर रहा है। और सूत्र बताते हैं कि सत्ताधारी पार्टी के कुछ कार्य कर्ता हयातुल्ला के पक्ष में खड़े दिखाई पड़ रहे हैं।

जीवन रक्षक दवाओं को नसीली दवा घोषित कर दिया

बलरामपुर । भेद भाव पूर्ण पत्रकारिता से साहित्य जगत की मर्यादा धूल धूसरित हो रही है। बताते चलें कि पचपेड़वा विकास खंड के हरैया चन्द्रसी गांव में गिरिजेश पाण्डेय नामक व्यक्ति कुछ जीवन रक्षक दवाइयां अपने कमरे में जो बाहर स्थित है रखा हुआ था। वहाँ एक तथा कथित पत्रकार महोदय पहुँच गये और इच्छा पूर्ति न होने पर उन जीवन रक्षक दवाइ?यों को विना किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के नशीली दवा घोषित कर दिया । जबकि कोरोना काल में इन्हीं जीवक रक्षक दवा रखने वालों को स्वास्थ्य मित्र की संज्ञा देते हुये इन से विभाग ने काम लिया था। और जान को जोखिम में डालकर यही स्वास्थ्य मित्र एक योद्धा की भांति विपदा से निपटने के लिये मैदान में कूद पड़े थे परन्तु आज इनका कोई पुरषा हाल नहीं है। पूरे जनपद में एक सैकड़ा से अधिक नर्सिंग होम संचालित हैं परन्तु उनके मानकों का राजस्ट्रेशन ट् का पूर्ण अभाव है

जब कमरों का हो अकाल तो फिर कैसे पढ़े नौनिहाल

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर। विद्यालय की स्थिति कंपोजिट। कक्षाएं संचालित हो रहीं दर्जा आठ तक। कमरे सिर्फ तीन। शाह छात्रों के संख्या 141 है। ऐसी विकट अव्यवस्था में पढ़े तो कैसे पढ़े उन्हें हल जी हां बेसिक शिक्षा विभाग की बढ़ाहल व्यवस्था का जीवंत उदाहरण है विकास खण्ड गैसड़ी का कंपोजिट विद्यालय राजपुर बकौली। जहां देश के कर्णधारों के भविष्य को मजाक बना कर रख दिया गया है। ज्ञातव्य हो कि जनपद के विकासखंड गैसड़ी के अंतर्गत राजपुर बकौली में बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा कंपोजिट विद्यालय का संचालन किया जा रहा है।एक ही परिसर में कक्षा एक से आठ तक छात्रों को शिक्षा दी जा रही है।नियमतः इन छात्राओं के पढ़ने के लिए मानक अनुरूप आठ कमरों की मुकम्मल व्यवस्था होनी चाहिए। कमरे तो बने हैं लेकिन लगभग पांच कमरे इतनी जीर्ण चीर्ण अवस्था के मुकाम पर हैं जो कभी भी धराशाई हो सकते हैं। जो निहालों की जिंदगी के खतरे के मध्य नजर प्रधान अध्यापक द्वारा मात्र तीन कमरों में बच्चों को बैठने की व्यवस्था की जा रही है। कमरों के आभाव में इन 141 नन्हे मुन्ने नौनिहालों को खुले आसमान के नीचे विद्यालय परिसर में बैठाया व पढ़ाया जाता है। यह नौनिहाल परिसर के ऐसे कुकाठ पेड़ के नीचे शिक्षा ग्रहण के लिए मजबूर हैं। कदाचित पेड़ की कोई बड़ी डाली अथवा पेड़ गिरा तो बच्चों की जिंदगी बचना असंभव है। शिक्षा विभाग की इस बदहाली अवस्था से शिक्षक भी आहत हैं कि यदि दो भाग्य से पेड़ या उसकी बड़ी टहनीभी अचानक टूटकर गिरी तो बच्चों के साथ-साथ उनकी जिंदगी की भी आस टूट जाएगी। सर्दी गर्मी तथा बरसात का दुखदाई ऋतु में खुले आसमान तले शिक्षा ग्रहण करना शायद इन बच्चों के लीलार में बेसिक शिक्षा विभाग के हुक्कामरानो नें लिख ही दिया है। विद्यालय में ज्यादातर भवन के कक्ष अवस्था में बद से बदहाल हैं। वर्षा काल में एक आंशिक लहदर के बुँदे पानी रोकने में असमर्थ है। छतों से इतना पानी रिसता है कि पूरे कमरों में पानी ही पानी दिखाई देता है। छतों के टूट टूट कर गिरने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। कमरों के ऊपर बड़े-बड़े पेड़ उग आए हैं। इन पेड़ों की जड़े भवन के छत को छलनी कर दिया है। जड़ों के झुरमुट कमरों की शोभा बनकर शिक्षा विभाग को मुंह चिढ़ा रहे हैं। प्रधान अध्यापक रामकृपाल का ऑफिस कम पुस्तकालय उपकरणों का भंडार गृह में तब्दील हो गया है। ऐसे बदहाल अव्यवस्था में अभिभावकों का परिषदीय विद्यालय से मोह भंग होना तो जायज ही है।

विलासिता के आदी क्या समझे नौनिहालों की वेदना

बेसिक शिक्षा विभाग की बुक मनन को सरकार ने व्यवस्था की संपूर्ण जीवन के लिए सारी बुनियादी सुविधाएं सरकारी खर्चे पर मुहैया करा रही हैं बैठने के लिए बात को वत अनुकूलित कार्यालय। चलने के लिए तो वाहन। इन्हें क्या फर्क पड़ता है कि नन्हे मुन्ने नौनिहालों के लिए विद्यालय में एक मूलभूत व्यवस्था भी मुहैया नहीं। नन्हें नन्हें नौनिहालों को गर्मी हीट वेव के थापेड़े नाजुक शरीर पर झेलते हैं।सर्द की शीत लहरी उनके हांड कपा देती है। बरखा की फुहारें सराबोर कर बिचलित कर देती हैं। बावजूद इसके जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी विभाग का मुखिया होता है। मुखिया भी इस बदहाल नोनीहालों के बीच जाने से कतराता है। अन्यथा राजपुर बकौली तथा मिश्रौलिया के कंपोजिट विद्यालय में बालक बालिकाओं की दशा ना होती ।

अधिकारियों को अवगत कराता रहता हूं- प्रधानाध्यापक रामकृपाल

राजपुर बकौली कंपोजिट विद्यालय के प्रधान अध्यापक रामकृपाल बताते हैं कि विद्यालय में बच्चों के पढ़ाई के लिए कक्षा 8 व्यवस्थित कमरे होने चाहिए। लेकिन विद्यालय में महज तीन कमरे ही उपयोग के लायक हैं। बच्चों को स्कूल के फील्ड में पेड़ के नीचे कक्षाएं संचालित कर पढ़ाया जा रहा है।विद्यालय के अधिकांशतः अर्थात तीन कमरों को छोड़कर सभी कैमरे प्रयोग के लायक नहीं है। इस समस्या के बारे में उच्च अधिकारियों को कई बार लिखित रूप से सूचित किया जा चुका है। लेकिन समस्या का समाधान नहीं हुआ।

ठीक है दिखवाता हूं- शुभम शुक्ला

समाचार की संबंध में संवाददाता जिला विशेष अधिकारी के कार्यालय गया लेकिन वह कार्यालय में मिले नहीं फिर राजपुर बकौली विद्यालय की संबंध में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी शुभम शुक्ला को उनके सरकारी मोबाइल नंबर 9453004133 पर साइन 3:40 पर फोन किया कॉल रिसीव नहीं हुआ। फिर 3:46 पर उन्हें उनके व्हाट्सएप पर उनके पछ के लिए मैसेज भेज कर आग्रह किया। 3:55 पर उन्होंने व्हाट्सएप पर कॉल किया। महज 48 सेकंड में ही पूरी बात सुने बिना उन्होंने जवाब दिया कि चलिए दिखवाते हैं। मैं मीटिंग में हूं। मामला इतना गंभीर और जवाब इतना उथला।

सफाई कर्मी नदारत शौचालय की व्यवस्थाबद से बदहाल

राज पुर बकौली के कंपोजिट विद्यालय में शौचालय तो बना है लेकिन उसकी दशा बयां करती है कि बच्चों द्वारा उसका प्रयोग काफी दिनों से नहीं किया जा रहा है।सफाई की अभाव में बड़ी-बड़ी जंगली घासो ने शौचालय को घेर लिया है। अंदर भी सफाई का अभाव है। यह इन जंगली घासो विषाक्त जानवरों के बेसन के दर से बच्चे शौचालय में जाने से परहेज करते हैं। प्रधान अध्यापक राम कृपाल की साथ-साथ बच्चे और स्कूल के सामने दुकानदार भी यही कहते हैं की सफाई कर्मी यहां कभी आते ही नहीं।

संक्षिप्त खबरें

संविदा कर्मचारियों सिटी पावर हाउस नंबर 3 उपकेंद्र ने आज अधिशाषी अभियंता को लिखित पत्र दिया

सीतापुर। आज दिनांक 30/4/2025 दिन बुधवार को अधिशाषी अभियंता को लिखित रूप से पत्र दिया गया संविदाकर्मियों का कहना है की सूत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है की जो संविदा पर है उनको हटाया जाएगा ऐसे में हम लोगों को हटाया जाएगा तो सभी लोग संविदा कर्मियों काम से बहिष्कार कर देंगे जिससे बिजली सप्लाई में दिक्कत आएगी वह गर्मी अधिक होने के कारण ट्रांसफार्मर व आग लगने व तार जलने जलने का डर बना रहेगा सप्लाई में दिक्कत आएगी अगर ऐसा होता है तो इसकी जिम्मेदारी अधिशाषी अभियंता की होंगी जिला अध्यक्ष सुखविंदर सिंह ने कहां है अगर एक भी संविदा कर्मियों को निलंबित किया गया तो सभी जिलों के संविदा कर्मियों काम से बहिष्कार कर देंगे जिसमें मांग पत्र सौंपने वाले गुलज़ार अहमद, चन्द प्रकाश,मो उस्मान,अजय कुमार,अंकित चौधरी,नीरज मौर्य, इकबाल हुसैन, शिव नरेश, राकेश, धर्मेन्द्र, रमेश, रमाकांत, रजनीश, मोहित कुमार, मो जावेद, कुलदीप, रमाशंकर, अंकित यादव, विशुन दयाल बिजनेश आदि लोग उपस्थित थे।

लखीमपुर जा रही बारातियों की बोलेरो पलटी, सीतापुर में हादसा 5 लोग घायल एक को जिला अस्पताल किया रेफर

सीतापुर लहरपुर कोतवाली क्षेत्र में बुधवार की देर शाम एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ बेहड़ा कोदहरा गांव से लखीमपुर जनपद के ओएल जा रही बारात की बोलेरो गाड़ी अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में बोलेरो में सवार 5 लोग घायल हो गए घायलों में 19 वर्षीय सरवन पुत्र राम जीवन, 19 वर्षीय सुकरीत पुत्र कमलेश, 40 वर्षीय संतोष पुत्र दूबर और 60 वर्षीय शंकर पुत्र मैकू शामिल हैं सभी बेहड़ा कोदहरा गांव के रहने वाले हैं। स्थानीय लोगों ने तुरंत एम्बुलेंस को सूचना दी मौके पर पहुंची 108 एम्बुलेंस ने सभी घायलों को नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया वहां सभी का इलाज चल रहा है 60 वर्षीय शंकर की स्थिति गंभीर होने के कारण उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है!!

निगोहां में युवती को बहला-फुसलाकर भगाने का आरोप, मामला दर्ज..

मोहनलालगंज। लखनऊ, निगोहां थाना क्षेत्र के मीरानपुर गांव की एक 19 वर्षीय युवती को बहला-फुसलाकर भगाने का मामला सामने आया है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, निगोहा थाना क्षेत्र निवासी रामसागर ने निगोहां थाने में शिकायत दर्ज कराई है कि उनकी पुत्री को गांव के ही युवक शुभम पुत्र लक्ष्मी नारायण द्वारा बहला-फुसलाकर कहीं ले जाया गया है। परिजनों के अनुसार, युवती अचानक घर से गायब हो गई, जिसके बाद आसपास और रिश्तेदारों में खोजबीन की गई लेकिन कोई पता नहीं चला।शिकायत के आधार पर पुलिस ने सुसंगत धाराओं में दर्ज कर लिया है।निगोहां थाना प्रभारी अनुज कुमार तिवारी का कहना है कि आरोपित युवक की तलाश की जा रही है और युवती की सकुशल वापसी के प्रयास तेज़ कर दिए गए हैं।

कोथावां कस्बे में चोरी घटना को अंजाम देने वाला अभियुक्त गिरफ्तार

बेनीगंज/हरदोई- दो दिन पूर्व कोथावां कस्बे में किसान एग्री सेंटर दुकान को चोरों ने चोरी कर अंजाम दिया था। पुलिस की सक्रियता के चलते चोरी को अंजाम देने वाला एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा है। बता दे 28 अप्रैल की रात कोथावां निवासी रोशन शुक्ला की किसान एग्री सेंटर दुकान का शटर तोड़कर अज्ञात चोर काउंटर में रखे 5000 रूपए चोरी कर वारदात को अंजाम दिया था। इस संबंध में क्षेत्रीय पुलिस ने संबंधित धाराओं में मुकदमा पंजीकृत अज्ञात चोरों की तलाश में जुटी थी। मुखबिर की सूचना पर चोरी को अंजाम देने वाला एक अभियुक्त विकास उर्फ गोलू पुत्र शिवकुमार निवासी ग्राम नगवां थाना बेनीगंज को पुलिस ने गिरफ्तार कर चोरी की घटना में प्रयोग की गई एक अदद लोहे की राड़, एक अदद समसी लोहे की व 3000 रूपए नगद बरामद कर अभियुक्त को न्यायालय भेजा है। मामले पर कोतवाली प्रभारी कृष्ण बली सिंह ने बताया है अपराध नियंत्रण व अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाए जा रहे अभियान के तहत चोरी घटना का खुलासा करने के लिए थाने की ओर से टीम गठित की गई थी। पुलिस की सक्रियता के चलते चोरी को अंजाम देने वाले अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा है अपराध पर अंकुश लगाने के लिए हर पहलू पर पुलिस नजर बनाए हुए हैं।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ का धरना एवं ज्ञापन आज प्रेषित किए गए

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में 1 मई, 2025 उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेशीय नेतृत्व के आवाहन पर आज प्रदेश के सभी मण्डलों में उप शिक्षा निदेशक कार्यालयों में धरना प्रदर्शन किया गया। धरना/प्रदर्शन के पश्चात उप-शिक्षा निदेशक के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किए गए।संगठन के प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता डा0 आर0पी0 मिश्र, महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा एवं मण्डलीय मंत्री जगजीवन प्रसाद शुक्ल ने बताया कि मुख्यमंत्री को प्रेषित किए गए ज्ञापन में पुरानी पेंशन की बहाली, चयन बोर्ड अधिनियम की धारा 12 18 एवं 21 को अधिनियमित रूप में माध्यमिक शिक्षा अधिनियम 1921 में स्थापित किए जाने, निःशुल्क चिकित्सा सुविधा, वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को समान कार्य के लिए समान वेतन, तदर्थ शिक्षकों का विनियमितिकरण आदि के साथ पूर्व प्रेषित मांगे सम्मिलित है। शिक्षक नेताओ ने बताया कि प्रदेश के सभी जनपदों में प्राप्त समाचार के अनुसार सभी मण्डलीय उप-शिक्षा निदेशक के कार्यालयों में धरना शान्ति पूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ तथा उप-शिक्षा निदेशक के माध्यम से मा0 मुख्यमंत्री को ज्ञापन प्रेषित किए गए।

इधर लखनऊ जनपद के उप-शिक्षा निदेशक कार्यालय में आयोजित धरने में लखनऊ, रायबरेली, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर एवं उन्नाव जनपदों के पदाधिकारी एवं सक्रिय कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। शिक्षक नेताओं ने बताया कि लखनऊ मण्डल का धरना शिक्षा भवन स्थित उप-शिक्षा निदेशक कार्यालय में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के समापन पर सायं 03:00 बजे मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन उप-शिक्षा निदेशक के प्रतिनिधि मण्डलीय विज्ञान प्रगति अधिकारी डा0 दिनेश जायसवाल को प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता डा0 आर0पी0 मिश्र, महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा, मण्डल अध्यक्ष तुलसी राम मिश्र एवं मण्डलीय मंत्री जगजीवन प्रसाद शुक्ल द्वारा सौंपा गया। इसी के साथ मण्डलीय समस्याओं यथा 31 मार्च, 2025 को सेवानिवृत्त शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के पेन्शन एवं जी0पी0एफ के शेष प्रकरणों का निस्तारण, वर्ष 2006 से वर्ष 2015 तक 30 जून को सेवानिवृत्त शिक्षक एवं शिक्षिकाओं

को एक नोशनल वेतन वृद्धि का लाभ, मृतक आश्रित की परिवारिक पेन्शन का पुनरीक्षण एवं उप-शिक्षा निदेशक कार्यालय में सिटीजन चार्टर को प्रभावी ढ़ंग से लागू किये जाने का ज्ञापन भी डा0 दिनेश जायसवाल को सौंपा गया।धरने को प्रमुख रूप से प्रादेशिक उपाध्यक्ष एवं प्रवक्ता डा0 आर0पी0 मिश्र, महामंत्री नरेन्द्र कुमार वर्मा, संरक्षक रामेश्वर उपाध्याय, राज्य कार्यकारिणी के सदस्य अमीर अहमद, डा0 मीता श्रीवास्तव, दीन मो0 रिजवी, हरदोई के जिलाध्यक्ष एवं राज्य कार्यकारिणी के सदस्य राजीव मिश्र, लखनऊ के जिलाध्यक्ष अनिल शर्मा, जिलामंत्री महेश चन्द्र रायबरेली को जिलाध्यक्ष राकेश कुमार मिश्र एवं जिलामंत्री शैलेश कुमार वाजपेई, लखीमपुर के जिलाध्यक्ष विशाल वर्मा, जिलामंत्री आशीष कुमार पाण्डेय, हरदोई के जिलामंत्री किसान चौरसिया, सीतापुर के जिलाध्यक्ष पंकज श्रीवास्तव आदि ने प्रमुख रूप से सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त अजीत प्रताप सिंह, विश्वजीत सिंह, अनुराग मिश्र, मन्जू चौधरी, विनीता श्रीवास्तव, आलोक पाठक, आर0पी0 सिंह कुमुद पाण्डेय, डा0 एस0के0 मणि, इनायत उल्लाह खां, चन्द्र प्रकाश शुक्ल आदि सम्मिलित थे। धरने की अध्यक्षता मण्डलीय अध्यक्ष तुलसी राम मिश्र ने की तथा संचालन मण्डलीय मंत्री जगजीवन प्रसाद शुक्ल ने किया।

किसान पर टाइगर का हमला इलाके में दहशत, वन विभाग के हाथ

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर के लहरपुर कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत ग्राम निबौरी में गुरुवार सुबह एक किसान पर जंगली जानवर ने हमला कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया घायल किसान की पहचान राम शरण वर्मा के रूप में हुई है। जिन्हें आनन-फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया घटना के बाद गांव में दहशत और आक्रोश का माहौल व्याप्त है। वारदात के समय किसान खेतों में गन्ना गुड़ाई का काम कर रहा था ग्रामीणों का कहना है कि किसान पर हमला करने वाला जानवर बाघ था जबकि वन विभाग अभी पगचिन्ह की जांच कर रहा है इससे पहले भी क्षेत्र में इस तरह की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। 23 अप्रैल को एक अन्य किसान पर भी जंगली जानवर ने हमला किया था और 28 अप्रैल को खेतों में एक महिला ने जंगली जानवर को देखे जाने की पुष्टि की थी इसके बावजूद वन विभाग की ओर से सुरक्षा को लेकर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। वन विभाग द्वारा पूर्व में पगचिन्हों के आधार पर तेंदुआ होने की तस्दीक की गई थी लेकिन

ग्रामीण बाघ होने का दावा कर रहे हैं ग्रामीणों का कहना है कि लगातार हो रही घटनाओं से गांव के लोग खेतों में जाने से डर रहे हैं फसल की कटाई और सिंचाई जैसे जरूरी कार्य भी प्रभावित हो रहे हैं हमले के बाद वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और पगचिन्हों की दोबारा जांच शुरू की गई है हालांकि अब तक किसी जंगली जानवर को पकड़ा नहीं गया है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं की गई तो वे आंदोलन के लिए मजबूर होंगे ग्रामीणों ने वन विभाग से क्षेत्र में पिंजरे लगाने और निगरानी बढ़ाने की मांग की है!!

पति ने पत्नी को उतारा मौत के घाट, पति ने फांसी लगाकर समाप्त की जीवन लीला, एक साल की मासूम बच्ची हुई अनाथ

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर के रेउसा थाना क्षेत्र अंतर्गत बंभिया गांव में गुरुवार सुबह एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई यहां मामूली कहासुनी के बाद पति ने पहले पत्नी की पिटाई कर उसकी रस्सी से गला घोंटकर हत्या कर दी फिर कमरे में खुद भी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली इस दर्दनाक हादसे में एक साल की मासूम बच्ची अनाथ हो गई है। घटना की जानकारी के अनुसार मृतक दंपत्ति की पहचान पति विज्ञान और पत्नी गौरी के रूप में हुई है दोनों की शादी दो साल पहले हुई थी परिजनों के अनुसार बुधवार देर रात पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर कहासुनी हुई थी जो देखते ही देखते हिंसक रूप ले गई गुस्से में आकर पति विज्ञान ने पहले गौरी की बुरी तरह पिटाई की और फिर रस्सी से गला घोंटकर उसकी हत्या कर दी इसके बाद उसने कमरे में जाकर फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली सुबह जब परिजनों ने छत पर गौरी का शव और कमरे में विज्ञान को फंदे से लटका देखा तो उनके होश उड़ गए। आनन-

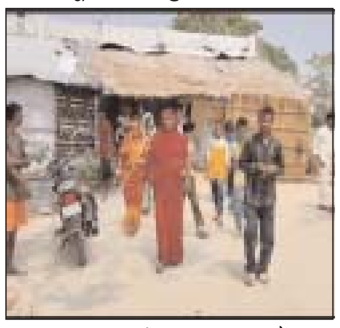

फानन में पुलिस को सूचना दी गई मौके पर पहुंचे रेउसा थानाध्यक्ष हनुमंत लाल तिवारी ने घटनास्थल का निरीक्षण कर दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है परिजनों का कहना है कि दोनों के बीच अक्सर छोटे-मोटे विवाद होते रहते थे लेकिन किसी ने नहीं सोचा था कि बात इतनी आगे बढ़ जाएगी। घटना से गांव में शोक की लहर है और सबसे ज्यादा चिंता उस मासूम बच्ची की है जिसके सिर से माता-पिता दोनों का साया एक ही रात में उठ गया दोनों की मौत से परिवार में कोहराम मचा हुआ है!!

स्कूल जा रहे छात्र को बस ने रौंदा हुई मौत घर में मचा कोहराम, गुस्साई भीड़ ने तोड़ी बस, सड़क जाम कर किया प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर जनपद सीतापुर में बेकाबू बस ने स्कूल जा रहे 10 साल के छात्र को रौंद दिया उसकी मौके पर मौत हो गई। गुरुवार सुबह 8 बजे छात्र और उसकी चचेरी बहन अलग-अलग साइकिलों से स्कूल जा रहे थे तभी पीछे से तेज रफ्तार स्कूली बस आ गई बस ने भाई-बहन की साइकिलों को टक्कर मार दी बहन छिटककर दूर गिरी लेकिन छात्र बस के पहिए के नीचे आ गया घटना के बाद ड्राइवर बस छोड़कर फरार हो गया स्कूल के टीचर्स, छात्र और परिजन मौके पर पहुंच गए। गुस्साई भीड़ ने बस पर पथराव कर दिया और डंडों से मारकर बस के शीशे तोड़ दिए इसके बाद सड़क पर शव रखकर प्रदर्शन शुरू कर दिया सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची किसी तरह परिजनों को समझाकर साढ़े तीन घंटे बाद जाम खुलवाया गया परिजनों की मांग है कि आरोपी ड्राइवर को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए?। घटना जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर महमूदाबाद कस्बे में हुई महमूदाबाद थाना क्षेत्र के कंजाबारी निवासी सुधीर कुमार का बेटा शौर्य इकलौता बेटा था वह सरदार सिंह कॉन्वेंट स्कूल में पढ़ता था पिता के मुताबिक, सुबह साढ़े 7 बजे बेटा घर से स्कूल के लिए निकला था उसकी चचेरी बहन भी साथ थी 8 बजे हमें सूचना मिली कि स्कूल से 200 मीटर पहले बस ने बेटे को रौंद दिया उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

टक्कर से छात्र पहिए के नीचे आया बस गुजर गई प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि छात्र और उसकी बहन साइकिल से स्कूल जा रहे थे तभी पीछे से आशुतोष बृज मोहन लाल इंटर कॉलेज की बस आई बस ने छात्र और उसकी बहन को टक्कर मार दी बहन छिटककर 10 मीटर दूर गिरी छात्र बस के पहिए के नीचे आ गया और बस गुजर गई चीख-पुकार सुनकर हम लोग दौड़कर पहुंचे देखा तो छात्र की मौत हो चुकी थी इसके बाद पुलिस और घरवालों

को सूचना दी गई उधर, हादसे की सूचना मिलते ही स्थानीय लोग और स्कूली छात्र इकट्ठा हो गए। गुस्साए ग्रामीणों और छात्रों ने हंगामा कर दिया महमूदाबाद-लखनऊ मार्ग जाम कर धरने पर बैठ गए स्कूल प्रबंधन और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी इस दौरान गुस्साए लोगों ने बस तोड़ दी हंगामे की सूचना पर महमूदाबाद कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने परिजनों को समझा-बुझाकर शांत कराया इस दौरान महमूदाबाद-लखनऊ मार्ग पर लंबा ट्रैफिक जाम लग गया पुलिस का कहना है कि फरार बस चालक जल्द गिरफ्तार किया जाएगा घटना की जांच की जा रही है छात्र के चचेरे भाई आलोक वर्मा ने आरोप लगाया- सीता इंटर कॉलेज की बस ने मेरे भाई को कुचल दिया हादसा स्कूल से कुछ ही दूरी पर हुआ लेकिन छोटे भाई के स्कूल के प्रबंधक रमेश बाजपेई मौके पर नहीं पहुंचे न ही जिस स्कूल की बस थी उसका कोई प्रतिनिधि आया स्कूल प्रबंधक रमेश बाजपेई ने सब कुछ मैनेज कर लिया है हमें इंसाफ चाहिए!!

ग्राम विकास अधिकारी संघ ने निर्विरोध चुने गए एडीओ पंचायत संघ के प्रदेश अध्यक्ष का किया भव्य स्वागत

● .... गोसाईगंज ब्लाक में सहायक विकास अधिकारी पंचायत सेवा संघ उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्विरोध प्रान्तीय अध्यक्ष कमल किशोर शुक्ल का ग्राम विकास अधिकारी संघ के ब्लाक अध्यक्ष राम बहादुर शर्मा की अगुवाई में किया भव्य स्वागत।

स्वतंत्र प्रभात

विनीत कुमार मिश्रा

लखनऊ। गुरुवार को राजधानी लखनऊ के विकासखण्ड गोसाईगंज के बीडीओ कार्यालय पर प्रदेश अध्यक्ष कमल किशोर शुक्ला का भव्य स्वागत किया गया। एडीओ पंचायत संघ के नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष कमल किशोर शुक्ला का ग्राम विकास अधिकारी संघ के ब्लाक अध्यक्ष राम बहादुर शर्मा की अगुवाई में संघ के पदाधिकारियों और बीडीओ आशुतोष श्रीवास्तव की मौजूदगी में नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष कमल किशोर शुक्ला को फूल माला पहनाकर व पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया।

इस दौरान संघ के पदाधिकारियों ने नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष को मिठाई खिलाकर बधाई दी। ज्ञात हो कि पंचायती राज निदेशालय लोहिया भवन, लखनऊ में 27 अप्रैल 2025 को नई कार्यकारिणी का सर्वसम्मति से गठन किया गया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के सभी जिलों से पहुँचे एडीओ पंचायत ने भाग लिया और सहायक विकास अधिकारी पंचायत सेवा संघ उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रान्तीय अध्यक्ष के रूप में कमल किशोर शुक्ल और प्रान्तीय महामंत्री के रूप में संजय सिंह को निर्विरोध चुना गया और शशांक सक्सेना मंत्री, सतीश चतुर्वेदी संगठन मंत्री, हंशराज संप्रेक्षक, देवेश कन्हैया संयुक्त मंत्री, अशोक

कुमार यादव उपाध्यक्ष, आशुतोष मिश्र उपाध्यक्ष, आनन्द मोहन उपाध्यक्ष, नितिन जैन उपाध्यक्ष, सीताराम उपाध्यक्ष, एंव शांति शरण सिंह को प्रदेश उपाध्यक्ष चुना गया था। इस मौके पर ग्राम विकास अधिकारी संघ के ब्लाक अध्यक्ष राम बहादुर शर्मा ,जनपद प्रतिनिधि रवि पाण्डेय, महामंत्री प्रशांत सक्सेना , नरेंद्र यादव, संतोष गिरी, दीपक सिंह, भूपेंद्र यादव, अरुण सिंह,और समस्त कार्यालय स्टॉफ की मौजूदगी रही।

ग्रामीणों की प्यास बुझाने वाला, खुद लगा रहा न्याय की गुहार

● विकास खंड मिश्रित की ग्राम पंचायत इस्लामनगर का मामला

स्वतंत्र प्रभात

मिश्रित सीतापुर। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को स्वच्छ पानी की सुविधा मिल सके जिसके लिए सरकार ने जल जीवन मिशन योजना के तहत ग्राम पंचायतों में पानी की टंकीयो का निर्माण कराया है। इन टंकियों पर ग्राम पंचायत से एक व्यक्ति को आपरेटर के पद पर भी चुना जाना है। ग्राम पंचायत की बैठक में उस व्यक्ति का चयन कनेक्शन धारकों की मौजूदगी में होना है। ऐसा शासन की गाइडलाइंस में दिया गया है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश टंकीया निर्माणधीन है। वही जिनका निर्माण पूरा हो गया है। उन्हें ग्राम पंचायत को हैंड ओवर किया जा चुका है। मिश्रित ब्लाक की ग्राम पंचायत इस्लामनगर में निर्मित पानी टंकी को जल निगम द्वारा अगस्त 2023 में हैंड ओवर किया गया था। ग्राम पंचायत की ओर से मौखिक रूप में रघुनाथ पुत्र चुन्नी की आपरेटर पद पर नियुक्ति भी की गई थी। लगभग दो वर्ष कार्य करने के बाद भी जब रघुनाथ को कोई मानदेय ग्राम पंचायत की ओर से नही दिया गया तो उसने ग्राम पंचायत अधिकारी से जानकारी की तो पता चला कि अभी उसका ग्राम पंचायत से प्रस्ताव ही नही हुआ है। जानकारी पाकर हैरान परेशान पीड़ित ने खंड विकास अधिकारी मिश्रित से भेंट की और प्रार्थना पत्र देकर अपनी आप बीती उन्हें सुनाई कि वह ग्राम पंचायत के लोगों की प्यास

बुझाने का कार्य निरंतर कर रहा है। मानदेय न मिलने के कारण उसका परिवार भूखमरी के कगार पर है। पीड़ित व्यक्ति ने मांग की है कि नियमानुसार उसकी नियुक्ति आपरेटर पद पर शीघ्र कराई जाए। जिससे वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें। पीड़ित व्यक्ति का कहना है कि खंड विकास अधिकारी ने उसे आश्वासन दिया है कि जल्द ही उसकी समस्या का समाधान किया जाएगा।

सांसद रामजी लाल सुमन पर हमले के विरोध में सपा का प्रदर्शन, महामहिम राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन पर कथित हमले और जान से मारने की धमकियों के विरोध में समाजवादी पार्टी ने जिला मुख्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया। सपा जिलाध्यक्ष शराफत अली के नेतृत्व में सपा कार्यकर्ताओं ने पार्टी कार्यालय से जिलाधिकारी कार्यालय तक मार्च निकालकर महामहिम राष्ट्रपति को संबोधित एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में आरोप लगाया गया है कि करणी सेना के अराजक तत्वों द्वारा 27 अप्रैल को अलीगढ़ में रामजी लाल सुमन के काफिले पर जानलेवा हमला किया गया। हमलावरों ने टायर फेंककर गाड़ी रोकने का प्रयास किया, जिससे काफिले की कई गाड़ियाँ क्षतिग्रस्त हो गई और कई लोग घायल हो गए।

सपा नेताओं ने आरोप लगाया कि दलित सांसद पर हमले के पीछे साजिश है और

हमलावरों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है, जिसके कारण उन पर कोई सख्त कार्रवाई नहीं की जा रही है। सपा ने इसे सरकार की दलित विरोधी मानसिकता का उदाहरण बताया।

जिलाध्यक्ष शराफत अली ने कहा कि यदि सांसद रामजी लाल सुमन की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं की गई और दोषियों पर कठोर कार्यवाही नहीं हुई, तो पार्टी शीर्ष नेतृत्व के निर्देश पर बड़ा आंदोलन शुरू किया जाएगा। प्रदर्शन व ज्ञापन कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व सांसद ऊषा वर्मा, पूर्व विधायिका राजेश्वरी देवी, पूर्व प्रत्याशी बृजेश वर्मा टिल्लू, पूर्व प्रत्याशी पद्मरागसिंह यादव, पूर्व जिला अध्यक्ष जितेन्द्र वर्मा जीतू, प्रदेश सचिव डॉ0 अरुण मौर्या, रामनरेश चौरसिया प्रदेश उपाध्यक्ष पिछडा वर्ग, जिला उपाध्यक्ष अमित बाजपेयी, धर्मवीर यादव, राहुल गुप्ता, पूलचन्द्र वर्मा, रहमत अली, अनिल यादव, जिला महासचिव चन्द्रशेखर पाल, पूनम सरोज आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

श्रमिक दिवस पर सीडीओ ने दी श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर विकास भवन स्थित स्वर्ण जयंती सभागार में श्रमिक सम्मान, हितलाभ वितरण एवं विचार गोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम में श्रम विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को मुख्य विकास अधिकारी ने प्रमाण पत्र दिये। मुख्य विकास अधिकारी ने सभी श्रमिकों की उनके अच्छे कार्य के लिए सराहना की। कार्यक्रम में मनरेगा अंतर्गत 100 दिन का कार्य करने वाले 9 श्रमिकों को सम्मानित किया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि सरकार श्रमिकों के हितार्थ बहुत सी योजनाएं चला रही है। इसमें मातृत्व शिशु एवं बालिका मदद योजना, संत रविदास शिक्षा प्रोत्साहन योजना, अटल आवासीय विद्यालय योजना, कन्या विवाह सहायता योजना, आपदा राहत सहायता योजना, महात्मा गाँधी पेंशन योजना, गंभीर बीमारी सहायता योजना, निर्माण कामगार मृत्यु व दिव्यांगता योजना तथा कौशल विकास तकनीकी उन्नययन योजना जैसी योजनाएँ शामिल हैं। सभी श्रमिक श्रम विभाग में अपना पंजीकरण अवश्य करा लें ताकि श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ उन्हें प्राप्त हो सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्रम कल्याण की योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार कराया जाये। श्रमिक सघनता वाले क्षेत्रों में पंजीकरण कराया जाये। विकास

खण्डो में भी कैम्प लगाए जाएं। श्रमिको की ओर से सुशील अवस्थी उर्फ़ छोटे महराज ने अपनी बात रखी। इस अवसर पर सहायक श्रमायुक्त सत्यवीर सिंह, जिला अर्थ एवं संख्या अधिकारी डॉ राम प्रकाश व अन्य सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

अंतिम संस्कार में पहुंचे युवक को रिश्तेदारों ने पीटा किया घायल

स्वतंत्र प्रभात

निगोहां। राजधानी लखनऊ के थाना क्षेत्र निगोहां के गरीब खेडा गांव में अपनी सरहज के अंतिम संस्कार में शामिल होने आए युवक की उसके साले के ससुर ने अपने भांजे के साथ मिलकर पिटाई कर घायल कर मोबाइल और नगदी भी छीन ली। पीड़ित ने पूरे मामले की शिकायत निगोहां पुलिस से की पुलिस ने जांच का हवाला देते हुए पीड़ित को आई चोटों का डाक्टरी परीक्षण बिना कराए ही उसे चलता कर दिया। नगराम के कमालपुर विचिलिका निवासी कृष्णपाल ने निगोहां पुलिस को शिकायत करते हुए बताया कि बताया की वह बीते बुधवार को निगोहां के गरीब खेडा गांव में अपनी सरहज के अंतिम संस्कार में शामिल होने आया हुआ था जहाँ पर गरीब खेडा के उसके साले के ससुर हरिराम यादव ने अपने भांजे मदन यादव के साथ मिलकर बिना वजह उसकी पिटाई कर घायल कर दिया मारपीट के दौरान उसकी जेब मे रखे 17 हजार रुपये और उसका मोबाइल फोन भी छीन लिया।वहीं पीड़ित पूरे मामले की शिकायत निगोहां पुलिस से करने के लिए बुधवार शाम पहुंचा तो वहा मौजूद दरोगा ने जांच का हवाला देकर थाने से चलता कर दिया।इसके बाद पीड़ित ने मारपीट में आई चोटों का इलाज खुद ही निजी अस्पताल जाकर कराया।इस संबंध में जब प्रभारी अमित वर्मा से बात की तो उन्होंने बताया ऐसी कोई शिकायत ही उन्हें नहीं मिली है। और दो लोग थाने आकर सूचना दिए कि अंतिम संस्कार के समय एक नगराम इलाके का युवक मौके पर वीडियो बना रहा था जो विरोध करने पर भाग गया।

यूनीफाईड डिसीज सर्विलांस पोर्टल पर वैक्सीन से रोकी जाने वाली बीमारियों का होगा डिजिटल सर्विलांस

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 रोहताश कुमार ने बताया कि 01 मई से उत्तर प्रदेश सरकार ने यूनीफाईड डिसीज सर्विलांस पोर्टल पर वैक्सीन से रोके जाने वाली बीमारियों का डिजिटल सर्विलांस शुरू किया है। यह पहल रियल टाइम केस रिपोर्टिंग, सटीक और विश्वसनीय डाटा संग्रह को सक्षम करेगी जिससे रोगों/प्रकोपों का शीघ्र पता लगाया जा सकेगा और त्वरित गति से प्रभावी रणनीतियां तैयार कर क्रियान्वयन किया जा सकेगा। वैक्सीन से रोके जा सकने वाली छः बीमारियों पोलियो, खसरा, रूबेला, डिप्थीरिया, पर्तुसिस और टिटनेस का केस बेस्ड सर्विलांस विश्व स्वास्थ्य संगठन के राष्ट्रीय सार्वजनिक स्वास्थ्य सहयोग नेटवर्क (एनपीएसएन) के सहयोग से किया जा रहा है। अब पहली बार इस निगरानी को यूडीएसपी (यूनीफाईड डिसीज डिजिटल पोर्टल) में सम्मिलित किया गया है। यह पोर्टल कोविड 19 के समय विकसित किया गया था। अब टीकाकरण से होने वाली बीमारियों से सम्बन्धित डाटा जैसे रिपोर्ट इत्यादि आसानी से इस पोर्टल पर देखी जा सकेगी। जिला सर्विलांस अधिकारी डॉ0 सुरेन्द्र कुमार ने बताया कि सन् 2023 में यूडीएसपी पोर्टल लांच किया गया था, अब तक इस पोर्टल पर साठ लाख से अधिक टेस्ट रिपोर्ट दर्ज किये गये हैं और इससे हमें डेंगू जैसी बीमारियों की रोकथाम एवं सुधारात्मक कार्यवाही करने में सहायता मिलती है। हमने इस पोर्टल को राष्ट्रीय पोर्टलों के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत किया है। इससे केंद्र सरकार के साथ निर्बाध रूप से डाटा साझा करना संभव हो गया है। अब राष्ट्रीय

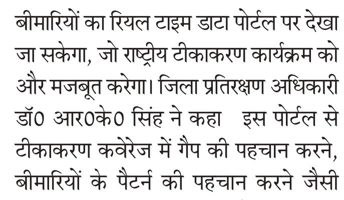

टीकाकरण से रोकी जा सकने वाली छः बीमारियों का रियल टाइम डाटा पोर्टल पर देखा जा सकेगा, जो राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम को और मजबूत करेगा। जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ0 आर0के0 सिंह ने कहा इस पोर्टल से टीकाकरण कवेरेज में गैप की पहचान करने, बीमारियों के पैटर्न की पहचान करने जैसी मूल्यवान जानकारी प्राप्त होगी जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बन्धी त्वरित कार्यवाई संभव होगी। इस पोर्टल से रोग का पता लगाने, रिस्पांस टाइम में सुधार करने और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में सहायता मिलेगी।

लाठी-डंडों और धारदार हथियार से हमला, महिला ने पुलिस से की न्याय की गुहार......

मोहनलालगंज। लखनऊ, नगराम थाना क्षेत्र अंतर्गत बिलिया कस्बा की रहने वाली फूलमती पत्नी स्व. शिवनन्दन ने थाना प्रभारी को प्रार्थना पत्र देकर गंभीर आरोप लगाए हैं। लिखित शिकायत के अनुसार बीते 29 अप्रैल को शाम करीब 5 बजे गांव के विपक्षी पक्ष के लोगों द्वारा उनके बेटे योगेन्द्र पर जानलेवा हमला किया गया।फूलमती ने बताया कि उनके पड़ोसी गोपाल पुत्र मुगल तिवारी, शिवानी पत्नी गोपाल, रजनी पत्नी रामदेव, और मुन्नी उर्फ सरिता पुत्री रामदेव ने पुरानी रंजिश को लेकर पहले उनके साथ गाली-गलौज की, फिर लाठी-डंडों और धारदार औजारों से उनके बेटे योगेन्द्र की बेरहमी से पिटाई की।हमले में योगेन्द्र को शरीर में गंभीर चोटें आई और जान से मारने की धमकी भी दी गई। पीड़िता का कहना है कि यह हमला पूर्व नियोजित था और उनके परिवार को डराने-धमकाने के इरादे से किया गया। पीड़िता फूलमती ने नगराम पुलिस से रिपोर्ट दर्ज कर आवश्यक कानूनी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेकर जांच शुरू कर दी है।

कांटे को कांटे से ही निकालना बेहतर है

पुराना सिद्धांत है कि कांटा -कांटे से निकलता है तलवार या मिजाइल से नही। करना भी वही चाहिए। सिद्धांत के विपरीत जाने में ज्यादा नुकसान की ज्यादा संभावना रहती है। पहलगाम में आतंकी हमले के बाद आज देश गुस्से में है। देश की जनता चाहती है कि हमला कराने वाले पाकिस्तान से भारत बदला ले। पाकिस्तान को तहस - नहस कर दे। पाकिस्तान पर हमलाकर उसे सबक सिखाए। सरकार भी ही चाहती है। इसके लिए उसने सेना को फ्रीहैंड दे दिया। ऐसे में देश की जनता को चाहिए कि सरकार और सेना को सोचने, समझने और तैयारी करने का अवसर दे। हमले की तैयारी फुलप्रूफ हो कि दुश्मन को ज्यादा से ज्यादा नुकसान हो। हमले में अपने देश ,देश के जवानों और सेना की कम से कम क्षति हो। हमले का बदला भी ले लिया जाए। इतिहास गवाह है कि पहले भी हम अपना बहुत कम नुकसान कर दुश्मन का बड़ा नुकसान पहुंचा चुके हैं। इसके लिए पाकिस्तान में बने आंतकियों के लांचिंग पैड दो बार तबाह ही नही किए, वहां मौजूद आंतकियों का खात्मा भी दो बार पहले हो चुका है।भारतीय सेना के कमांडो ने 28 सितंबर 2016 की रात को गुलाम कश्मीर (पीओके) में दाखिल होकर आतंकी कैंपों में सर्जिकल स्ट्राइक की। यह कार्रवाई गुलाम कश्मीर (पीओके) के चार क्षेत्र भिंबर सेक्टर, तत्तापानी सेक्टर, लिपी सेक्टर व कैल सेक्टर में एक साथ हुई। पांच घंटे चली इस कार्रवाई में इन सेक्टरों में चल रहे छह आतंकी शिविर तबाह करने के साथ करीब 45 आतंकियों को मार गिराया गया। मिशन को अंजाम देकर सभी कमांडों सुरक्षित भारतीय क्षेत्र में लौट आए। अभियान में शामिल कमांडों की हेलमेट पर लगे विशेष कैमरों व ड्रोन की मदद से पूरे ऑपरेशन को कैद भी किया गया।14 फरवरी 2019 को जम्मू और कश्मीर के पुलवामा में जोरदार विस्फोट हुआ था। निशाने पर था छ्त्र्क्क्ष के 78 वाहनों का काफिला। विस्फोट में 40 जवान शहीद हो गए थे। दो सप्ताह बाद 26 फरवरी 2019 को भारतीय वायुसेना के मिराज-2000 विमानों ने रात के अंधेरे में नियंत्रण रेखा यानी एसओसी पार कर पाकिस्तान के पूर्वोत्तर इलाके खैबर पख्तूनख्वाह के बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद के ट्रेनिंग कैम्पों पर सर्जिकल स्ट्राइक की थी। भारत के तत्कालीन विदेश सचिव विजय गोखले ने कहा कि इस स्ट्राइक में बड़ी संख्या में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी, उनको प्रशिक्षण देने वाले, संगठन के बड़े कमांडर और फिदायीन हमलों के लिए तैयार हो रहे जिहादियों को खत्म कर दिया गया। अगले दिन पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई की कोशिश की। भारत ने दावा किया कि डॉग-फाइट में भारतीय वायुसेना के मिग-21 ने पाकिस्तानी वायुसेना के एफ-16 को मार गिराया। पाकिस्तान ने भी मिग-21 को मार गिराया और विंग कमांडर अभिनंदन को गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, दबाव में दो दिन बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।बदला लेने की तैयारी ऐसी ही हो ।अपना कम से कम नुकसान हो और दुशमन का बहुत ज्यादा। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान पर पांच तरफ से हमला बोला। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी घोषणा कर चुकें है कि इसका बदला लिया जाएगा। दुश्मन को माफ नही किया जाएगा। उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। भारत सरकार सिंधु जल संधि, अटारी सीमा और वीजा संबंधी सेवाएं बंद करने का फैसला कर चुकी है। पूरे विश्व में पाकिस्तान का चरित्र उजागर करने में भारत का विदेश मंत्रालय लगा है। भारत दुनिया भर के देशों को इस बात के सबूत देने में लगा है कि पाकिस्तान भारत में आतंकवाद फैला रहा है। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भी कबूल कर चुके हैं कि पाकिस्तान तीन दशक से आतंकवाद बढ़ाने में लगा है। एक इंटरव्यू में आसिफ ने कहा था, "हम लगभग तीन दशकों से संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएस) और ब्रिटेन सहित पश्चिम के लिए आंतकवाद फैलाने का यह गंदा काम कर रहे हैं।"इस सबके बीच अब सरकार ने पाकिस्तान पर सोशल स्ट्राइक कर हमला बोला है। भारत में पाकिस्तान के 16 यूट्यूब चैनल बंद किए जा चुकें हैं।आसिफ के एक्स अकाउंट को बैन करने का यह कदम भारत द्वारा 16 पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों पर प्रतिबंध लगाने के ठीक एक दिन बाद उठाया गया। बैन किए गए पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों का सब्सक्राइबर बेस 63 मिलियन है।ये चैनल भड़काऊ और सांप्रदायिक रूप से संवेदनशील सामग्री फैला रहे थे।ब्लॉक किए गए कुछ प्रमुख पाकिस्तानी यूट्यूब चैनलों में डॉन न्यूज, एआरवाई न्यूज, बोल न्यूज, जियो न्यूज, समा टीवी और जीएनएन शामिल हैं।

हाल के पहलगांव में हुए इस दुर्दांत हमले के बाद से भारत की जनता में आक्रोश है। साथ ही साथ पीएम मोदी और देश की तमाम राजनीतिक पार्टियां एक मंच पर आकर पाकिस्तान को सबक सिखाने की बात कह रही है। इस हमले के कुछ ही दिन बात पीएम मोदी ने बिहार की धरती मधुबनी में एक जनसभा को संबोधित करते हुए पाकिस्तान के आकाओं और आतंकियों को ये खुले शब्दों में चेतावनी देती हुए कहा है, 'आतंकियों को ऐसी सज़ा मिलेगी जिसकी कल्पना किसी ने नहीं की होगी।सब बदला चाहते हैं किंतु जोश मे होश खोना ठीक नही।हमें ऐसा काम करना चाहिए कि हमारा नुकसान कम से कम हो और दुश्मन का ज्यादा से ज्यादा ।उधर भारत सरकार ने इस घटना का बदला लेने के लिए सेना को फ्री हैंड दे दिया है। प्रधानमंत्री मोदी की सेना को फ्री हैंड देने की घोषणा का मतलब है कि अब भारतीय सेना आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई के लिए स्वतंत्र होगी। अब उसे इसके लिए किसी राजनैतिक से अनुमति की जरूरत नही होगी।

सरकार ने जहां आंतकवाद को प्रश्य देने वाले पाकिस्तान को नुकसान पहुंचाने के लिए सरकार सिंधु जल संधि को स्थागित करने का फैसला लिया है। ऐसे ही और निर्णय भी हो सकतें हैं पाकिस्तान के परमाणु प्रतिष्ठानों पर साइबर अटैक कराए जा सकते हैं। तो पाकिस्तान के विरूद्ध खड़े आतंकवादी समूहों की इसी तरह मदद की जा सकती है जैसे पाकिस्तान भारत के विरूद्ध करता है।सिंध और बलूचिस्तान के आजादी के आंदोलन में लगे सशस्त्र समूहों की मदद करके उन्हें मजबूत किया जा सकता है। अफगानिस्तान की तालिबानी सरकार पाकिस्तान से नाराज है कि उसका भी फायदा उठाया जा सकता है। हालात इस तरह के पैदा किए जा सकते है कि बिना सैनिक कार्रवाई किए पाकिस्तान को अपने घर में उलझा दिया जाए। ऐसे हालात पैदाकर दिए जाएं कि उसके विभिन्न टुकड़े हो जाएं। इस सब के बीच बड़ी खबर यह है कि आम कश्मीरी इस हमले का विरोध कर रहा है।इस हमले की कश्मीर की मशजिदों से निंदा की गई।सबने एक सुर में कहा कि पाकिस्तान को इसका जवाब दिया जाना चाहिए। पिछ्ले कुछ साल में कश्मीर में लौटी रौनक से कश्मीर का कारोबार बहुत तेजी के साथ बढ़ा है।करीब 15 लाख टरिस्ट अब कश्मीर आने लगे हैं।22 अप्रैल की आंतकवादी घटना ने कश्मीर के इस व्यापार को बड़ा धक्का दिया है। ज्ञातव्य है कि इस हमले में 26 सैलानियों की मौत हुई है। पहलगाम में आंतकी हमले के बाद देश में गुस्सा है। देश की जनता चाहती है कि हमला कराने वाले पाकिस्तान से भारत बदला ले। पाकिस्तान पर हमलाकर उसे सबक सिखाए। देश की जनात इस समय जोश में है किंतु जोश में हमें होश नही खोना है। हमारी कोशिश ये हो कि बिना युद्ध के पाकिस्तान से बदला ले लिया लाए।उसे विभिन्न भाग में तोड़ दिया जाए। हमला करने वाले कही भी जाकर छुप जाए इसे इस्राइल के गुप्तचर संगठन मौसाद की तर्ज पर वहीं जाकर मारा जाए।

अशोक मधुप

संपादकीय

आईना और अतीत- जब पहचान डीएनए से झाँकती है

जीन में बसी स्मृतियाँ- हमारे भीतर साँस लेता इतिहास

कभी रात की गहरी ख़ामोशी में एक अनजानी धुन आपके दिल को थाम लेती है? कोई पुरानी गंध, कोई धुंधली सी छवि, या किसी पत्थर का ठंडा स्पर्श आपको अचानक ऐसी स्मृतियों में खींच ले जाता है, जो आपकी नहीं, फिर भी आपसे जुदा नहीं। जैसे कोई अनदेखा रिश्ता, कोई सदियों पुराना बंधन आपके जीन में साँस ले रहा हो। यह कोई ख़याल नहीं, कोई संयोग नहीं — यह आपके डीएनए का वह अमर गीत है, जो हज़ारों सालों से गूंज रहा है। आपके खून में, आपके हर कोशिका में, एक ऐसा इतिहास लिखा है, जो न सिर्फ़ आपके पूर्वजों का है, बल्कि आपके होने की वजह है। तो चलिए, एक ऐसी यात्रा पर, जो न सिर्फ़ रोमांच से भरी है, बल्कि हमें हमारे वजूद की गहराइयों में ले जाती है — वहाँ, जहाँ हम सिर्फ़ इंसान नहीं, बल्कि एक जीवंत महाकाव्य हैं। हम इतिहास को किताबों की धूल भरी पन्नों में, टूटी-फूटी मूर्तियों में, या पुराने क़िलों की दीवारों पर खोजते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि सबसे सच्चा, सबसे ज़िंदा इतिहास आपके भीतर धड़क रहा है? आपके खून का हर कतरा सिर्फ़ ज़िंदगी नहीं ढोता — वह सदियों के प्रेम, संघर्ष, हँसी, और आँसुओं का ख़ज़ाना है। यह खून किसी राजा का हो सकता है, जो सोने के तख़्त पर बैठकर दुनिया जीतने के सपने देखता था। यह किसी जंगल के शिकारी का हो सकता है, जो चाँदनी रात में तीर साधता था। यह किसी रेशमी साड़ी में लिपटी रानी का हो सकता है, या किसी किसान का, जिसने सूरज की तपिश में खेतों को अपने पसीने से सींचा। विज्ञान इसे "जीनोमिक इनहेरिटेंस" का नाम देता है, लेकिन यह उससे कहीं ज़्यादा है — यह एक ऐसी कहानी है, जो आपके जीन में लिखी है, और हर पल आपके ज़रिए जी रही है।

आज की जेनेटिक्स ने एक चौंकाने वाला राज़ खोला है- हमारी भावनाएँ, हमारी आदतें, यहाँ तक कि हमारे डर भी, हमारे पूर्वजों की देन हैं। इसे एपीजेनेटिक मेमोरी कहते हैं — स्मृतियाँ, जो दिमाग में नहीं, बल्कि जीन में बसी होती हैं। शोध बताते हैं कि हमारे पुरखों ने जो दर्द, जो आघात झेले — युद्ध की त्रासदी, भुखमरी की पीड़ा, या उत्पीड़न का ज़ख़्म — वे जीन के ज़रिए हम तक पहुँचते हैं। 2018 में नेचर जर्नल में छपा एक अध्ययन कहता है कि तनाव झेलने वाले चूहों के बच्चों में बिना किसी कारण चिंता के लक्षण दिखे। इंसानों पर हुए शोध, जैसे हॉलैंड के हंगर विंटर (1944-45) के अध्ययन, बताते हैं कि भुखमरी से गुज़री माताओं के बच्चों में मधुमेह और हृदय रोगों का ख़तरा बढ़ा। लेकिन यह सिर्फ़ शरीर की बात नहीं — यह भावनाओं की विरासत है। अगर आपके परनाना ने किसी युद्ध में अपने प्रियजनों को खोया, तो उस दर्द की हल्की सी गूँज आज भी आपके भीतर कहीं ज़िंदा है। यह विचार दिल दहलाने वाला है या रोमांच से भरा? शायद दोनों। क्योंकि इसका मतलब है कि हम सिर्फ़ अपने नहीं—हम अपने भीतर अनगिनत अनजाने चेहरों की स्मृतियों का खज़ाना लिए घूमते हैं। कभी बेवजह का डर, किसी रंग या सुगंध से अनजाना लगाव, किसी आवाज़ से बेचैनी—ये सब उस गुज़रे ज़माने के चिन्ह हो सकते हैं, जो हमारे जीन में अब भी साँस लेते हैं। जब आप किसी अनजानी ज़मीन पर खड़े होकर महसूस करते हैं, "ı डीएनए है, जो आपको आपके पूर्वजों की की ज़मीन से जोड़ रहा है। हम इतिहास को पुरानी किताबों और टूटी कब्रों में तलाशते हैं, मगर सबसे प्राचीन कथा तो हमारे जीन की कोशिकाओं में साँस लेती है। जब कोई बच्चा बिना सिखाए अनोखा हुनर दिखाता है, और माँ-बाप मुस्कुराते हुए कहते हैं, "ये तो दादाजी पर गया है,"— वे अनजाने में उस वंशानुगत स्मृति को आवाज़ दे रहे होते हैं। यह स्मृति सिर्फ़ गुणों की नहीं, भावनाओं की भी गवाह है। विज्ञान खुलासा करता है कि जिनके पूर्वज भुखमरी, गुलामी, या युद्ध जैसे कष्टों से गुज़रे, उनके वंशजों में बिना कारण चिंता या भविष्य की आशंका ज़्यादा देखी जाती है। यह जीन का वह गुप्त कोड है, जो सदियों पुराने दर्द को आज भी जीवित रखता है। जब कोई कहता है, "मैं अपनी जड़ों से जुड़ना चाहता हूँ," तो वह महज़ सांस्कृतिक यात्रा पर नहीं निकलता—वह अपने डीएनए की रहस्यमयी गहराइयों में गोता लगाता है। यही कारण है कि आज दुनिया भर में लोग डीएनए टेस्ट के ज़रिए अपनी उत्पत्ति का सच खोज रहे हैं। यह खोज सिर्फ़ जगहों की नहीं, हमारे वजूद की है। हम कौन हैं? यह सवाल अब केवल दार्शनिक नहीं, बल्कि विज्ञान की चौखट पर भी दस्तक देता है। अगर एक दिन आपको पता चले कि आपके जीन में किसी अनजान मुल्क, संस्कृति, या समुदाय की रहस्यमयी छाप छिपी है, तो क्या होगा? क्या आप वही रहेंगे, जो आज हैं? या शायद हमारी पहचान कोई स्थिर चित्र नहीं, बल्कि एक जीवंत नदी है—सदियों से हमें गढ़ती, मिटाती, और नए रंगों में रंगती हुई। डीएनए चुपके से खुलासा करता है कि मानव इतिहास कोई खंडित कहानियों का पुलिंदा नहीं—न जातियों का, न रंगों का, न सरहदों का। यह एक विशाल समंदर है, जिसमें हम सब एक बूँद हैं। और हर बूँद में उस अनंत समंदर का पूरा नक्शा समाया है। अगली बार जब आप आईने में खुद को देखें, तो रुकिए और सिर्फ़ अपनी आँखों को न निहारें। उनके पीछे की गहराई में झाँकें। वहाँ, शायद कोई अनजाना चेहरा आपको देखकर मुस्कुरा रहा हो — कोई ऐसा, जिससे आप कभी नहीं मिले, फिर भी जिसके कारण आप आज यहाँ साँस ले रहे हैं। हमारा शरीर भले ही क्षणभंगुर हो, लेकिन हमारे जीन में बस्ता इतिहास — वह अनंत और अमर है।

प्रो. आरके जैन

कनाडा की जनता ने खालिस्तानी समर्थकों को सिखाया सबक

कनाडा में हुए चुनावों के परिणामों ने साफ कर दिया कि कनाडा में रहने वाले ज्यादातर हिन्दू सिख में से कोई भी खालिस्तानी समर्थक नहीं हैं और जगमीत सिंह जैसे नेता जो खालिस्तानीयों को खुलकर समर्थन करते थे, खालिस्तान बनवाने की बात करते थे, आज न सिर्फ उनकी पार्टी बुरी तरह से चुनाव हार गई, बल्कि वह स्वयं अपनी सीट भी नहीं बचा पाए। बीते समय में देखने में आ रहा था कि पूर्व प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत से केवल इसलिए सम्बन्ध बिगाड़ रहे थे क्योंकि उनकी सरकार खालिस्तानी समर्थकों के रहमो-करम पर चल रही थी। सिख ब्रदर्सहुड इन्टरनैशनल के राष्ट्रीय सैकेट्री जनरल गुणजीत सिंह बख्शी का मानना है कि जगमीत सिंह ने ट्रूडो सरकार को समर्थन के बदले अपने खालिस्तानी एजेंडों को आगे बढ़ाया, मगर आज जनता ने जगमीत सिंह और उनके समर्थकों को उनकी औकात दिखा दी। जगमीत सिंह की पार्टी एनडीपी यानी न्यू डैमोक्रेटिक पार्टी की करारी हार के बाद उसका राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा भी छिन गया। पार्टी को नेशनल स्टेटस के लिए 12 सीटों की जरूरत थी, मगर एनडीपी मात्र 7 सीट ही जीत पाई। इससे निश्चित तौर पर कनाडा ही नहीं अन्य देशों में बैठकर भी जो लोग खालिस्तानियों को समर्थन दे रहे हैं उन्हें भी अब समझ आ जानी चाहिए कि अगर उन्होंने इनकी गतिविधियों को नहीं रोका तो आने वाले समय में वहां की जनता भी कनाडा वासियों की तरह उन्हें भी सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा सकती है। कनाडा में तो लोगों ने सड़कों पर जगमीत सिंह के खिलाफ पोस्टर वार भी शुरू कर दी है, जिसमें उन्होंने चेतावनी दी है कि केवल खालिस्ता?नियों को समर्थन के चलते जगमीत सिंह और उनकी पार्टी का इतना बुरा हश्र हुआ है अन्यथा यह वही लोग थे जिन्होंने पिछले चुनावों में जगमीत सिंह को खुलकर समर्थन दिया था। ट्रूडो सरकार के जाते ही अब लगने लगा है कि खालिस्तानियों का जल्द ही कनाडा से बोरी बिस्तर गोल होने वाला है, क्योंकि लिबरल पार्टी के लोग कभी भी नहीं चाहेंगे कि खालिस्तानियों को पनाह देने की सजा उन्हें अगले चुनावों में भुगतनी पड़े।

गुरु ग्रन्थ साहिब के स्वरूपों को जबरन उठाना कितना सही?

गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरु गोबिन्द सिंह जी के द्वारा जीवित गुरु का दर्जा देकर सिख समाज को उन्हें अपना गुरु मानने का आदेश दिया तभी से सिख समाज ही नहीं बल्कि वह सभी लोग भी जो इस बात को स्वीकारते हैं कि गुरु ग्रन्थ साहिब में सिख गुरु साहिबान के अलावा अनेक हिन्दू, मुस्लिम भक्तों, संत महापुरुषों की बाणी दर्ज है। गुरु नानक देव जी के पुत्र बाबा श्रीचन्द जी को मानने वाले लोग भी गुरु ग्रन्थ साहिब का पूर्ण सम्मान करते हैं।

आज भी बिहार सहित देश के अन्य शहरों में बाबा श्रीचन्द जी से सम्बिन्धित हजारों ऐसे मठ हैं जहां गुरु ग्रन्थ साहिब को सुशोभित किया हुआ है। सिन्धी समाज के लोग जो गुरु नानक देव जी को अपना गुरु मानते हैं और अपना हर कार्य गुरु ग्रन्थ साहिब जी को समर्पण होकर करते हैं। संत रविदास, संत कबीर के भी कई स्थान हैं जहां गुरु ग्रन्थ साहिब रखा हुआ है मगर पिछले कुछ समय से सिख पंथ में पनपते कट्टरवाद ने धीरे-धीरे इन सभी समाज के लोगों को गुरु साहिब से दूर करने में प्राथमिकता दिखाई है। कट्टरवादी संस्थाओं के लोग धर्म के ठेकेदार बनकर जबरन इन स्थानों पर जाकर मर्यादा में चूक की बात कर वहां से गुरु ग्रन्थ साहिब को जबरन उठाकर ले जा रहे हैं। इनमें से कई तो ऐसे हस्तलिखित स्वरूप भी रहते हैं जिन्हें लाखों, करोड़ों में बेचने की बात भी चर्चा में रहती है। बिहार सिख फैडरेशन के संरक्षक त्रिलोक सिंह निषाद का मानना है कि सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी ने लोगों को कर्मकाण्डों से दूर कर जिस मार्ग पर चलना सिखाया आज सिख धर्म के अपने ही लोग गुरु नानक के मिश्न को तार-तार कर सभी को अपनों से दूर करने पर उतारु हैं। असल में खामियां तो इनके अपने अन्दर हैं जो आज तक सिख धर्म की मर्यादा की जानकारी ही सही ढंग से समाज के लोगों को देने में असफल रहे हैं। चाहिए तो यह कि जहां पर धर्म के ठेकेदार बने लोगों को लगे कि जिस स्थान में गुरु ग्रन्थ साहिब रखे हुए हैं वहां मर्यादा का पालन सही ढंग से नहीं हो रहा, ऐसे में अपने पास से ग्रन्थी सिंह ले जाकर वहां लगाएं जिससे पूर्ण मर्यादित तरीके से गुरु साहिब का सत्कार हो सके मगर इस प्रकार जबरन हथियारों के दम पर आकर गुरु ग्रन्थ साहिब के स्वरूपों को उठाकर ले जाना उचित नहीं है। साबत सूरत सिख नौजवान बनेगा डीसी -सिख समाज को अक्सर शिकायत रहती है कि उनके बच्चे सिविल सर्विसिज में पिछड़ते जा रहे हैं जिसके चलते उच्च पदों पर आज पगड़ीधारी सिख देखने को नहीं मिलते अगर हैं भी तो उनमें से ज्यादातर सिखी स्वरूप में नहीं हैं। मगर इस बार 16 के करीब सिख बच्चों ने इस परीक्षा में सफल होकर समूची कौम को गौरवांवित किया है। दिल्ली के अंगद सिंह जिसका 162वां रैंक आया है वह खास तौर पर सिख युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बनकर उभरें हैं क्योंकि अंगद सिंह पूरी तरह से सिखी स्वरूप में हैं। अंगद सिंह को अपने दादा तारा सिंह अन्जान और नाना जगदीश सिंह वरियाम से मिली है जिन्होंने सिख समाज और खासकर मातृ भाषा पंजाबी के लिए अनेक कार्य किए हैं। अंगद सिंह ने समाज से यह वायदा किया है कि उसे जिस भी पद पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त होगा वह सिख समाज के कार्यों को प्राथमिकता के साथ करेगा। इसी के चलते पंजाबी हैल्पलाईन के द्वारा अंगद सिंह को सम्मानित किया गया। संस्था के मुखी प्रकाश ि?संह गिल का मानना है कि सभी सिंह सभाओं और गुरुद्वारा कमेटियों को अंगद सिंह जैसे युवाओं को आगे लाने के प्रयास किये जाने चाहिए।भाई हरजिंदर सिंह जी को पद्म श्री सम्मान- भाई हरजिंदर सिंह जी, जिन्हें सम्मानपूर्वक ÷श्री नगर वाले÷ के नाम से जाना जाता है, एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध सिख हजूरी रागी हैं जो अपनी आत्मिक और मधुर गुरबाणी, कीर्तन प्रस्तुतियों के लिए जाने जाते हैं। 1958 में जन्मे भाई साहिब ने किशोरावस्था में ही कीर्तन करना शुरू कर दिया था और अधिकतर स्वयं-शिक्षित हैं। उन्होंने शास्त्रीय और आधुनिक रागों का अद्वितीय संगम विकसित किया है। उनका जीवन मिशन सदैव यही रहा है कि शबद कीर्तन की आध्यात्मिक शक्ति से दुनियाभर के सिखों को एकजुट किया जाए। भाई हरजिन्दर सिंह को देश के राष्ट्रपति के द्वारा पद्मश्री सम्मान प्राप्त होना समूचे रागी जत्थों के लिए गर्व की बात है।

क्या भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा किए बिना बढ़त बना ली है?

पाक अधिकृत आतंकियों द्वारा पहलगाम में भारतीय नागरिकों—विशेष रूप से एक धर्म विशेष के श्रद्धालुओं—पर हुआ हमला, देशवासियों के लिए एक और पीड़ादायक स्मृति बन गया है। यह घटना न केवल जनमानस को शोक और आक्रोश से भरने वाली रही, बल्कि जम्मू-कश्मीर की सरकार और स्थानीय नागरिकों ने भी एक स्वर में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के विरुद्ध कड़ा प्रतिरोध प्रकट किया। भारत और विदेशों में व्यापक विरोध प्रदर्शन हुए तथा पाकिस्तान को सबक सिखाने की मांग ज़ोर पकड़ने लगी।

परंतु प्रश्न यह है—क्या हम केवल भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से संतोष करते रहेंगे? क्या हर बार सीमित जवाब देकर रह जाना ही हमारी नियति बन गया है, या अब समय आ गया है कि एक दीर्घकालिक, निर्णायक रणनीति की ओर बढ़ा जाए? भारत की नीति सदैव स्पष्ट रही है— "आतंकवाद और संवाद एक साथ नहीं चल सकते"। इसी आधार पर पाकिस्तान के साथ औपचारिक वार्ताएं स्थगित कर दी गई हैं और यह संदेश स्पष्ट रूप से दिया गया है कि जब तक वह अपनी धरती से आतंक के ढांचे को समाप्त नहीं करता, संबंध सामान्य नहीं हो सकते।

वर्तमान केंद्र सरकार इस पर गंभीर विमर्श में है कि पाकिस्तान को कब, कैसे और किस रूप में जवाब दिया जाए। जनाकांक्षाओं और राजनीतिक दबाव के बीच, यह चुनौतीपूर्ण है कि भावनात्मक आवेगों से हटकर संयम, संतुलन और रणनीतिक दृष्टिकोण से निर्णय लिया जाए। मेरा मानना है कि कोई भी प्रतिक्रिया तभी सार्थक होगी, जब वह राष्ट्रीय हित, वैश्विक छवि और दीर्घकालिक परिणामों को केंद्र में रखकर दी जाए। भारत की वैश्विक छवि एक शांतिप्रिय लेकिन सामर्थ्यवान राष्ट्र की है—परमाणु संपन्न, किंतु उत्तरदायी लोकतंत्र के रूप में। इस छवि को अक्षुण्ण रखते हुए हमें अपने रणनीतिक विकल्पों को सशक्त बनाना होगा।

वर्तमान में भारत ने पाकिस्तान के विरुद्ध प्रत्यक्ष युद्ध के बजाय 'रणनीतिक दबाव' की नीति अपनाई है, जो अधिक प्रभावी सिद्ध हो रही है। सिंधु जल संधि की पुनर्समीक्षा, वायु व जलमार्गों पर प्रतिबंध, द्विपक्षीय व्यापार का पूर्ण बहिष्कार, पाकिस्तान को एफएटीएफ की ग्रे लिस्ट में बनाए रखने की कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद को लेकर उसकी छवि का पर्दाफाश और आर्थिक साझेदारियों में व्यवधान जैसे कदम—इन सभी ने पाकिस्तान को भीतर से अस्थिर कर दिया है। भारत ने अपनी सैन्य ताकत का प्रदर्शन कर पाकिस्तानी सेना को बिना युद्ध किए ही परास्त कर दिया है, तभी तो पाकिस्तान सेना के अधिकारियों और सैनिकों में सेना छोड़ने की होड़ लगी हुई है और आतंकी आकाओं के बिल में दुबकने की।

इसके साथ ही पाकिस्तान स्वयं भी आंतरिक विघटन की स्थिति में पहुंच चुका है। बलूचिस्तान, सिंध, खैबर-पख्तूनख्वा और पाक-अधिकृत कश्मीर में लंबे समय से चल रहे स्वतंत्रता आंदोलनों ने अब तीव्र गति पकड़ ली है। बलूच राष्ट्रवादी पूर्ण स्वतंत्रता की मांग कर रहे हैं, सिंधी सिंधुदेश 'और पख्तून 'पख्तूनिस्तान ' की स्थापना चाहते हैं। पाक-अधिकृत कश्मीर में भी जनता अब पाकिस्तानी शासन के विरुद्ध मुखर हो रही है। पाकिस्तान के अंदर से ही ऐसी आवाज उठ रही है कि पाकिस्तानी सेना भारत से युद्ध करने की स्थिति में नहीं,न तो मोराल के आधार पर और न ही हथियारों की मारक क्षमता के आधार पर। ऐसे समय में भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया यह वक्तव्य— "भारत पहलगाम आतंकी घटना का ऐसा बदला लेगा जिसकी पाकिस्तान ने कल्पना भी नहीं की होगी"—पाकिस्तान को दोतरफा संकट में डाल देता है। एक ओर यदि वह भारत से संघर्ष करता है, तो उसके भीतर चल रहे आंदोलनों की तीव्रता और अनियंत्रण बढ़ सकता है; और दूसरी ओर, यदि वह इन आंदोलनों को दमनात्मक तरीके से नियंत्रित करता है, तो उसकी सीमाएं असुरक्षित हो जाती हैं। इसलिए भारत की ओर से जारी रणनीतिक दबाव पाकिस्तान के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है—बिना किसी पारंपरिक युद्ध की घोषणा किए ही। पाकिस्तान के लिए अब एकमात्र विकल्प यही है कि वह आतंकवाद का स्थायी रूप से परित्याग करे और भारत पर हमलों के लिए जिम्मेदार व्यक्तियों को भारत सौंपे। अन्यथा यह संकट न केवल पाकिस्तानी सेना और सरकार के लिए, बल्कि आम नागरिकों के लिए भी घातक सिद्ध हो सकता है। क्योंकि जब गेहूं पिसता है, तो घुन भी साथ पिसता है।

पाकिस्तानी आम जनता को भी यह समझने की आवश्यकता है कि उसका भविष्य आतंकवाद में नहीं, विकास और शांति में निहित है। उन्हें अपने शासकों पर दबाव बनाना चाहिए कि वे आतंकवाद का समर्थन त्यागें, भारत में आंतकी घटनाओं के लिए जिम्मेदार आतंकवादियों को बिना शर्त भारत को सौंपें और स्थायित्व तथा समृद्धि की ओर कदम बढ़ाएं। भारत के लिए यह समय संयम और रणनीतिक बढ़त को निर्णायक रूप देने का है। पाकिस्तान की आंतरिक परिस्थितियां, वैश्विक समर्थन और सैन्य संतुलन हमारे पक्ष में हैं। हमें इनका उपयोग सोच-समझकर करते हुए आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक अभियान को आगे बढ़ाना चाहिए।यह तो निश्चित है कि आतंकवाद परास्त होगा और अंत में जीत भारत की होगी।

डॉ मनमोहन प्रकाश

पाक को करारा सबक मिलेगा

स्वतन्त्र भारत की यह खूबी रही है कि कभी भी यह आक्रमणकारी देश नहीं रहा है और जब भी इसकी सेनाओं को रणक्षेत्र में कूदना पड़ा है तो आत्मरक्षार्थ और राष्ट्रीय सीमाओं की सलामती के लिए। जबकि इसके साथ ही स्वतन्त्र हुआ देश पाकिस्तान हमेशा आक्रमणकारी रहा है। कश्मीर की पहली जंग से लेकर कारगिल युद्ध तक पाकिस्तान ने पहले भारत पर हमला किया जिसके जवाब में भारत की सेनाओं ने सर्वदा विजय प्राप्त की। चाहे वह 1947-48 का कश्मीर युद्ध हो या 1965 का भारत-पाक रण हो अथवा 1971 की बंगलादेश लड़ाई हो। बंगलादेश युद्ध में सीधे भारतीय सेनाएं तभी कूदीं जब पाकिस्तान ने हमारे पंजाब व राजस्थान की सीमा से लगे इलाकों में अतिक्रमण किया वरना प. बंगाल की सीमा से लगे पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) का मामला सीधे-सीधे मानव अधिकारों के हनन का था क्योंकि पूर्वी पाकिस्तान के लोगों पर पाकिस्तान की सेना ने जुल्मो-गारत का दौर चला रखा था। भारत की विदेश नीति शुरू से ही यही रही है कि वह किसी सिद्धान्त या दर्शन का निर्यात नहीं करता है बल्कि मानता है कि किसी भी देश का शासन उस देश की जनता की इच्छा के अनुसार चलना चाहिए। किस देश में कैसी सरकार हो इसकी जिम्मेदारी वहां की जनता पर ही छोड़ी जानी चाहिए। मगर हम में से काटकर बना पाकिस्तान ऐसा किराये का मुल्क है जो कुछ बड़े देशों के इशारे पर अपनी जमीन को आतंकवादियों की सैरगाह में तब्दील करने से नहीं हिचकता। अपने वजूद में आने से लेकर अब तक पाकिस्तान की कोई स्वतन्त्र विदेश नीति नहीं रही है बल्कि भारत व हिन्दुओं से दुश्मनी इसका ईमान रहा है। पाकिस्तान भारत विरोधी जुनून में यह भी भूल बैठा है कि भारत दुनिया का ऐसा दूसरा मुल्क है जिसमें मुस्लिम आबादी सबसे बड़ी है। अतः इस्लाम के नाम पर 1947 में बने पाकिस्तान की आज हकीकत यह हो गई है कि कोई भी मुस्लिम देश उसके साथ नहीं है। इसकी मुख्य वजह यह है कि दहशतगर्द तंजीमों को सुरक्षा देने के चक्कर में पाकिस्तान के हुक्मरान यह भूल गये कि वह अब खुद दहशतगर्द मुल्क बनने के मुंहाने पर आकर बैठ गये हैं। अतः विगत 22 अप्रैल को कश्मीर के खूबसूरत व दिलकश सैलानी स्थान पहलगाम में जिस तरह पाकिस्तान से आये आतंकवादियों ने पर्यटकों का धर्म पूछ-पूछ कर उनकी हत्या की उससे पूरी दुनिया के लोग ही सकते में आ गये। कश्मीर भारत का ऐसा मनोरम इलाका है जहां दुनियाभर से पर्यटक आते हैं। इसलिए पाकिस्तान ने पहलगाम में जो बुजदिलाना काम किया है उसके खिलाफ विश्व भर के देश हैं और भारत के साथ खड़े हैं। क्या तुर्की और अफगानिस्तान की सरकारों ने पहलगाम कांड पर भारत का समर्थन ऐसे ही कर दिया है। भारत जानता है कि पहलगाम में हुआ हत्याकांड उसकी अस्मिता को चुनौती है जिसका मुंहतोड़ जवाब दिया जाना चाहिए। अतः प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की है कि पहलगाम हत्याकांड करने वाले आतंकवादियों को भारत ऐसी सजा देगा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। भारत की इस दृढ़ इच्छाशक्ति से जाहिर है कि आतंकवादियों की आका पाकिस्तानी सरकार भीतर से हिल चुकी है और वह जंग के खौफ से दुबली होती जा रही है। श्री मोदी ने रक्षामन्त्री श्री राजनाथ सिंह व सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल सहित तीनों सेनाओं के कमांडरों व मुख्य रक्षा कमांडर की बैठक बुला कर जिस तरह आतंकवाद के विरुद्ध माकूल कदम उठाने को सेना को अधिकृत किया है उससे लगता है कि भारत अपनी संप्रभुता पर किसी भी प्रकार का हमला बर्दाश्त नहीं कर सकता है। जब 2019 में पाकिस्तानी आतंकवादियों ने कश्मीर के पुलवामा में हमारे सुरक्षा बलों के 40 रणबांकुरों को शहीद किया था तो उसके जवाब में भारत ने पाकिस्तान स्थित बालाकोट में सर्जिकल स्ट्राइक करके साफ कर दिया था भारत में पाकिस्तान के भीतर घुसकर उसे सबक सिखाने की कूव्वत है। इसके बाद पाकिस्तान को अपनी हैसियत समझ लेनी चाहिए थी और आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविरों को खत्मकर देना चाहिए था मगर इसने छह साल बाद फिर से कश्मीर के ही पहलगाम में ऐसी बर्बर कार्रवाई कर डाली जिसकी निन्दा पूरी दुनिया कर रही है और पाक के रक्षामन्त्री ख्वाजा आसिफ फरमा रहे हैं कि पाकिस्तान तो पिछ्ले 30 सालों से भी ज्यादा वक्त से दहशतगर्दों को पाल-पोस कर बड़ा कर रहा है। आसिफ का यही बयान पाकिस्तान को आतंकवादी देश बना देता है। मगर अब सवाल यह है कि भारत सैनिक मोर्चे पर पाकिस्तान को क्या सबक सिखायेगा? इसी के लिए सेना को सीमा पर अपने हिसाब से कदम उठाने के लिए कहा गया है जिससे पाकिस्तान थर-थर कांप रहा है। मगर पहलगाम कांड की साजिश में पाकिस्तान का यह एजेंडा भी छिपा हुआ है कि भारत में हिन्दुओं को मुस्लिमों के खिलाफ भड़काया जाये। उसका यह मन्तव्य कभी पूरा नहीं हो सकता है क्योंकि भारत के मुसलमानों की राष्ट्रभक्ति पर सन्देह नहीं किया जा सकता और न ही कश्मीर मुसलमानों की देशभक्ति को सन्देह के घेरे में रखा जा सकता है। बेशक कुछ लोग हैं जो पाकिस्तान द्वारा बिछाये गये जाल में फंस जाते हैं मगर उनका इलाज भारत की जांच एजेंसियां करने में सक्षम हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उप्पान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

ट्रेलर की ठोकर से टूटा पोल, बिजली बाधित

रूद्रपुर, देवरिया। नगर पंचायत मदनपुर के कुतुब नगर स्थित एबी मोटर हीरो एजेंसी के सामने गुरुवार को सुबह करीब 5 बजे एक ट्रेलर वाहन अनियंत्रित होकर बिजली के खंभे से टकरा गया। हालांकि पोल टूटने से कोई हताहत नहीं हुआ। हादसे के बाद ट्रॉला चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। इस घटना के कारण पूरे क्षेत्र में बिजली आपूर्ति बाधित हो गई है। जिससे स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सुबह से ही क्षेत्र में बिजली बाधित है, लेकिन बिजली विभाग के कर्मचारी अब तक खंभा लगाने में टालमटोल कर रहे हैं। स्थानीय नागरिकों ने बिजली विभाग की लापरवाही पर नाराजगी जताते हुए तत्काल बिजली बहाल करने की मांग की है। वहीं विभाग की ओर से कोई स्पष्ट जानकारी नहीं दी गई है कि बिजली आपूर्ति कब तक सामान्य हो सकेगी।

दबंग युवकों ने दलित युवक को पीटा: दोषियों के गिरफ्तारी की मांग

बस्ती। बस्ती जिले केमुण्डेरवा थाना क्षेत्र के कुरियार निवासी दलित श्यामलाल के पुत्र अभिषेक कुमार राना को गांव के ही लक्ष्य पुत्र आशाराम चौधरी, ऋषभ पुत्र विमल चौधरी, मिथलेश उर्फ पप्पू पुत्र विजयपाल चौधरी आदि ने पुरानी रंजिश को लेकर उस समय लाठी डण्डों से बुरी तरह से मारा पीटा जब वह खेत से भूषा लेने जा रहा था। स्थानीय लोगों के हस्तक्षेप से किसी तरह से अभिषेक कुमार राना की जान बची। उसे इलाज के लिये जिला अस्पताल बस्ती में भर्ती कराया गया है। पुलिस मुकदमा पंजीकृत कर मामले की विवेचना कर रही है। अभिषेक कुमार राना को दबंग युवकों द्वारा बुरी तरह से मारे पीटे जाने से लोगों में आक्रोश है। मुंडेरवा पुलिस जब तक कार्रवाई नहीं कर रही है डा. अम्बेडकर शिक्षा समिति के संस्थापक दिग्विजय कुमार के नेतृत्व में नागरिकों ने मुण्डेरवा थाने पर घेराव कर न्याय की गुहार लगाया। चेतावनी दिया कि दोषी गिरफ्तार न हुये तो समिति संघर्ष को बाध्य होगी। थाने पर न्याय की मांग के दौरान पीड़ित परिजनों दबंग के ऊपर कार्रवाई जल्द ही जल्द की जाए अन्यथा हम लोग आंदोलन के लिए बाध्य होंगेके साथ अमरजीत आर्य, महेन्द्र, राहुल, वीरेन्द्र भारती, अशोक, रमेश, अंकित कुमार, वीरेन्द्र निराला, धीरेन्द्र निराला, के साथ अनेक लोग शामिल रहे।

एलायंस क्लब का भीषण गर्मी में पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए चलाया जा रहा अभियान

प्रतापगढ़। गर्मी के दिनों में एलायंस क्लब इंटरनेशनल प्रतापगढ़ के अंतरराष्ट्रीय निदेशक समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य के नेतृत्व में पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिए अभियान चला कर चौराहे, खुले स्थानों पर जल पात्र रखा जा रहा है,जिससे पशु पक्षियों को गलातर करने के लिए भटकना ना पड़े। इसके अलावा वह मिट्टी के घड़े व मिट्टी के जल पात्र भी वितरित किए जा रहे हैं।

समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य ने लोगों से अनुरोध किया है कि इस अभियान से जुड़कर इस भीषण गर्मी में बेजुबान पशु पक्षियों को काल कवलित होने से बचाने में अपना सहयोग देकर पुण्य के भागीदार बने। इस अभियान में सुरेश अग्रवाल, शनि महाराज, अनिल उमरवैश्य, मोहम्मद अनवर, संजय कनौजिया, संदीप पेंट, अमरनाथ यादव, विनय कुमार श्रीवास्तव, राजेश सिंह, अंशुमान सिंह, विनोद कुमार, मुकेश मंझानी, बृजेश पांडे, मनोज कुमार, डॉ0 श्री कृष्ण, संतोष कुमार, छेदीलाल, देवानंद, डॉ0 दयाराम मौर्य, आनंद मोहन ओझा, राजीव कुमार आर्य, शिवेश शुक्ला, परमानंद मिश्रा, आदर्श कुमार,आशीष, सचिन यादव शनि गुप्ता आदि रहे।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस- श्रमिकों के अधिकारों और कल्याण की दिशा में एक प्रतिबद्धता

भारत सरकार ने श्रमिकों के हित में कई महत्त्वपूर्ण पहल

स्वतंत्र प्रभात

खजनी, गोरखपुर – आज 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। यह दिन श्रमिक वर्ग के अधिकारों, संघर्षों और उनके योगदान को सम्मानित करने के लिए समर्पित है। इसकी उत्पत्ति 1 मई 1886 को अमेरिका के औद्योगिक शहर शिकागो में हुई जब श्रमिकों ने आठ घंटे कार्य दिवस की मांग को लेकर हड़ताल की थी। शिकागो की हेमार्केट घटना, जिसमें श्रमिकों के प्रदर्शन के दौरान बम विस्फोट और पुलिस फायरिंग हुई, इतिहास में मजदूर अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक बन गई। इसी संघर्ष से प्रेरित होकर 1889 में पेरिस में आयोजित दूसरी अंतर्राष्ट्रीय बैठक में 1 मई को 'अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस'के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

2025 की थीम– जलवायु परिवर्तन के बीच कार्यस्थल सुरक्षा और स्वास्थ्य

इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस की थीम "जलवायु परिवर्तन के बीच कार्यस्थल सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित करना"है।

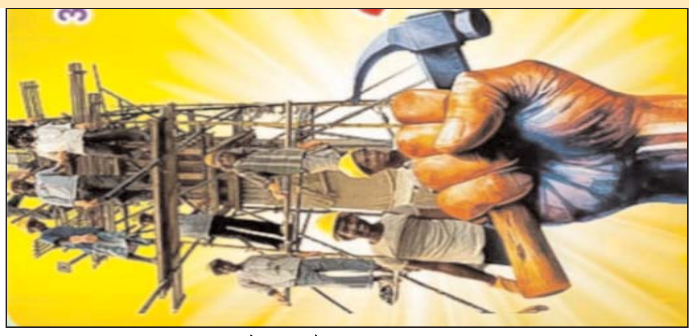

यह विषय वर्तमान समय की चुनौतियों और श्रमिकों की सुरक्षा को लेकर वैश्विक चिंताओं को उजागर करता है।

भारत में श्रमिक कल्याण के लिए उठाए गए कदम

श्रम कानूनों का सरलीकरण- 29 श्रम कानूनों को मिलाकर चार श्रम संहिताओं में बदला गया है – वेतन संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता, व्यावसायिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य संहिता, और औद्योगिक संबंध संहिता। ई-श्रम पोर्टल-असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिए एक केंद्रीकृत डेटाबेस के रूप में, ई-श्रम पोर्टल की शुरुआत 26 अगस्त 2021 को की गई। प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना- असंगठित श्रमिकों को वृद्धावस्था में पेंशन सुरक्षा प्रदान करने हेतु शुरू की गई यह योजना उन्हें 60 वर्ष की आयु के बाद 3000 रुपये मासिक पेंशन की गारंटी देती है।

राष्ट्रीय विकास में श्रमिकों की भूमिका अमूल्य

इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में श्रमिकों द्वारा किए जा रहे अथक परिश्रम को सराहा जा रहा है। सरकार और सामाजिक संगठनों द्वारा विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों, सेमिनारों और रैलियों के माध्यम से मजदूरों के अधिकारों और योगदान पर प्रकाश डाला जा रहा है।

गोवा की आजादी के प्रमुख सेनानी थे मधु लिमए - चंद्रभूषण

देवरिया। समाजवादी पुरोधा डा राममनोहर लोहिया के अनन्यतम अनुयायी एवं रामसेवक यादव व जार्ज फर्नांडीज के सहकर्मी मधुलिमये आधुनिक भारत के उन विशिष्टतम व्यक्तित्वों में से एक थे, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ पुर्तगालियों से गोवा को मुक्त कराकर भारत में शामिल कराने में अहम योगदान दिया। गोवा आज भारत का हिस्सा है, तो इसमें डॉ. राम मनोहर लोहिया के साथ मधुलिमये का प्रमुख योगदान है,उक्त बातें रामपुर कारखाना विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत डुमरी स्थित सपा जनसंपर्क कार्यालय पर आयोजित मधुलिमये जयंती कार्यक्रम में व्यक्त करते हुए सपा के पूर्व प्रवक्ता चंद्रभूषण सिंह यादव ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। यादव ने समाजवादी चिंतक मधु लिमये को एक प्रतिबद्ध समाजवादी बताते हुए कहा कि वे निःस्वार्थ और बलिदान की भावना के साथ देश की सेवा किए जिस नाते उन्हें सदियों तक याद किया जाता रहेगा। इस दौरान व्यास यादव, सुरेश नारायण सिंह, अभिषेक गोंड गुड्डु, उत्तिम यादव, श्यामसुंदर प्रसाद, झुलूर अंसारी, अशोक यादव, नगीना यादव आदि मौजूद रहे।

गोरखपुर में नाबालिग की रहस्यमयी मौत- पेड़ से लटकता शव, सनसनी और सवालों का तूफान

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर – जनपद के राजघाट थाना क्षेत्र के मोहल्ला बनकटी चक में गुरुवार की सुबह उस वक्त हड़कंप मच गया, जब एक 16 साल की किशोरी का शव पेड़ से लटकता हुआ मिला। मृतका की पहचान निशा मौर्य, पुत्री जुगाली मौर्य के रूप में हुई। सुबह करीब 9 बजे स्थानीय लोगों की नजर इस दिल दहलाने वाले दृश्य पर पड़ी, जिसके बाद इलाके में सनसनी फैल गई।घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। प्रारंभिक जांच में मामला आत्महत्या का प्रतीत होता है, लेकिन परिस्थितियां इतनी संदिग्ध हैं कि कई सवाल हवा में तैर रहे हैं। क्या निशा ने सचमुच खुदकुशी की, या इसके पीछे कोई गहरी साजिश छिपी है? क्या वह किसी मानसिक दबाव में थी, या फिर किसी ने इस मासूम की जिंदगी छीन ली?निशा के परिवार और पड़ोसियों में मातम का माहौल है। लोग सदमे में हैं और इस रहस्यमयी मौत की

वजह जानने को बेताब हैं। पुलिस हर कोण से मामले की तहकीकात में जुटी है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फॉरेंसिक जांच से कुछ अहम सुराग मिलने की उम्मीद है।इलाके में तरह-तरह की चर्चाएं जोरों पर हैं। कुछ का मानना है कि निशा के साथ कुछ गलत हुआ होगा, तो कुछ इसे पारिवारिक या सामाजिक दबाव से जोड़ रहे हैं। निशा की मौत ने न केवल एक परिवार को तोड़ा, बल्कि पूरे समुदाय को झकझोर कर रख दिया। सवाल यह है कि आखिर सच क्या है? क्या यह एक दुखद अंत था, या एक सुनियोजित अपराध? जवाब का इंतजार अब पुलिस जांच और समय पर टिका है।

सम्मान पाकर सर्वोच्च अंक पाने वाले यूपी बोर्ड के बच्चों के खिले चेहरे

● - सम्मानित किये गये किसान इंटर कालेज के टाप टेन होनहार

स्वतंत्र प्रभात

पडरौना, कुशीनगर। यूपी बोर्ड परीक्षा 2025 के हाईस्कूल और इंटरमीडिएट मे किसान इंटरमीडिएट कालेज के टाप टेन में सर्वोच्च अंक पाने वाले दस-दस विद्यार्थियों को फूल माला पहना व मिठाई खिलाकर प्रधानाचार्य डा. अखिलेश सिंह ने सम्मानित किया। विद्यालय परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में हाई स्कूल मे सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थी क्रमशः रितेश जायसवाल, आदित्य मद्धेशिया, सत्यम कुशवाहा, प्रत्याक्षी रावत, अमृता शर्मा, अरुण चौबे, रामू यादव, सुल्तान अंसारी,

हिमांशु पटेल और आंचल यादव तथा इंटरमीडिएट में क्रमशः प्रियंका चौबे, सबनूर खातून, सावित्री प्रजापति, ऋतू कुशवाहा, श्वेता गुप्ता, ऋतू यादव, पुनिता पटेल, मुस्कान चौहानय का जोरदार स्वागत किया गया। प्रधानाचार्य एवं समस्त शिक्षकों ने सभी उत्तीर्ण विद्यार्थियों को शुभकामनायें दीं। प्रधानाचार्य डा अखिलेश सिंह ने कहा ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नही है। यहीं होनहार अपने गांव, तहसील, जनपद व प्रदेश का नाम रोशन करेंगे।

इस अवसर पर कनिष्क कुमार सिंह, पवन कुमार पाण्डेय, गिरिजेश कुमार सिंह, नवनीत लाल, सोनभद्र सिंह, रणधीर कुमार चतुर्वेदी, ज्ञान सागर, यशवंत सिंह, मकसूदन, शैलेश कुमार, आलमगीर आलम, प्रकाश पाण्डेय, साधना सिंह, अभिनव प्रताप सिंह, दीपमाला मिश्रा, सतीश यादव, सत्येंद्र कुमार वर्मा, गरिमा मिश्रा, पंकज कुमार, प्रशांत कुमार सिंह, विजय कुशवाहा आदि शिक्षक व कर्मचारी उपस्थित रहे।

गोंडा: मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन योजना में जनपद की पांच ग्राम पंचायतों का चयन, 1.10 करोड़ की प्रोत्साहन राशि स्वीकृत

● -राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्य के आधार पर ग्राम पंचायतों का हुआ चयन, प्रोत्साहन राशि से पंचायतों को स्वनिधि सृजन एवं विकास कार्यों में प्राथमिकता देने के निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा संचालित मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के अंतर्गत गोंडा जनपद की पांच ग्राम पंचायतों का चयन राज्य स्तर पर उत्कृष्ट कार्य के आधार पर किया गया है। पंचायती राज विभाग की राज्य परफॉर्मेंस असेसमेंट समिति ने वित्तीय वर्ष 2023-24 में उल्लेखनीय कार्य करने वाली प्रदेश की 375 ग्राम पंचायतों को पुरस्कृत किए जाने की संस्तुति की गई। इसी में जनपद गोंडा से पांच ग्राम पंचायतों को प्रथम से पंचम स्थान तक चयनित किया गया है। इनमें गौरवाबुजुर्ग (विकास खंड- बभनजोत) को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है, जिसे 35 लाख की प्रोत्साहन राशि दी गई है। सांगवा (छपिया) को द्वितीय स्थान पर 30 लाख, चन्दीपुर (तरबगंज) को तृतीय स्थान पर 20 लाख, चंगेरी (परसपुर) को चतुर्थ स्थान पर 15 लाख तथा सर्वांगपुर (कटराबाजार) को पंचम स्थान हेतु 10 लाख की धनराशि प्रदान की गई है। कुल 1.10 करोड़ की प्रोत्साहन राशि इन ग्राम पंचायतों के ओएसआर खातों में अंतरण कर दी गई है। शासन के निर्देशानुसार, पंचायतें प्राप्त धनराशि से ग्राम विकास से संबंधित कतिपय कार्यों का क्रियान्वयन करेंगी। इसके लिए पंचायती राज विभाग द्वारा

https://cmawards.upprd.in पोर्टल विकसित किया गया है। ग्राम पंचायतों को अपेक्षित है कि वे प्रस्तावित कार्यों की कार्ययोजना पोर्टल पर अपलोड करें। कार्य प्रारंभ करने से पूर्व उक्त योजनाओं को सक्षम स्तर से अनुमोदित कराया जाना अनिवार्य होगा।

कार्य योजना में ऐसे कार्यों को प्राथमिकता दी जाएगी, जिनसे ग्राम पंचायत की सतत् आय सृजन हो सके। साथ ही, सभी भुगतान केवल एनईएफटी/आरटीजीएस माध्यम से किए जाएंगे। कार्य पूर्ण होने पर उनके फोटोग्राफ, व्यय विवरण एवं उपभोग प्रमाण-पत्र पोर्टल पर अपलोड किए जाएंगे।जिलाधिकारी नेहा शर्मा द्वारा संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि चयनित पंचायतें पारदर्शिता, गुणवत्ता एवं समयबद्धता के साथ कार्य सुनिश्चित करें, जिससे यह योजना पंचायत सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हो।

अतिक्रमण हटाने को लेकर फिर शुरू हुई कवायद

-तहसील सभागार में बैठक

रूद्रपुर, देवरिया। नगर क्षेत्र में अतिक्रमण हटाने को लेकर एक बार फिर कवायद शुरू हो गई है। गुरुवार को नगर पंचायत प्रतिनिधि छट्ठे लाल निगम ने उप जिलाधिकारी हरिशंकर लाल व अधिशासी अधिकारी नितेश गौरव के साथ तहसील सभागार में मीटिंग की। जिसमें सभासदगण भी मौजूद रहे। बैठक में नगर को अतिक्रमण मुक्त करने के लिए कार्य योजना बनाई गई। इसके पूर्व उप जिलाधिकारी श्रुति शर्मा के नेतृत्व में नगर क्षेत्र में जबरदस्त अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया गया था। जिससे नगर की सड़क चौड़ी दिख रही थी। उप जिलाधिकारी श्रुति शर्मा के जाने के बाद पुनः अतिक्रमणकारियों के हौसले बुलंद हो गए और नगर के चौराहों पर भयंकर जाम लगने लगा। लगन के मौसम में खजुवा चौराहा, बस स्टेशन चौराहा और जामुनी चौराहे पर अभूतपूर्व जाम लग रहा है। जिससे आगमन बाधित हो जा रहा है। बाजार में लगने वाले जाम के कारण अस्पताल के एंबुलेंस भी प्रभावित हो रहे हैं। जिसे देखते हुए एक बार पुनः नगर क्षेत्र से अतिक्रमण हटाने की पहल शुरू हो गई है। देखना है इस बार अतिक्रमण विरोधी अभियान कब शुरू होता है और किस तरह चलता है।

एक ही चिता पर जले माँ, बहन और बेटे के अरमान- गोरखपुर की त्रासदी ने हिला दिया हर दिल

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर – जनपद की हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत कुचडेहरी में बुधवार को जो घटा, वह सिर्फ एक दुखद समाचार नहीं, बल्कि इंसानी रिश्तों की वो टूटन है, जो किसी भी संवेदनशील दिल को झकझोर देने के लिए काफी है। 18 वर्षीय मोहित कन्नौजिया–जिसने बचपन में पिता को खोया, मुंबई की गलियों में मेहनत की रोटियां जुटाई, मां और बहन को अपना सब कुछ माना–ने अचानक फांसी लगाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली। खबर जब घर पहुंची, तो मां कौशिल्या देवी और बहन सुप्रिया की चीखें गांव के कोने-कोने तक गूंज उठीं। पर वो चीखें दुख को सह नहीं सकीं। दर्द इतना गहरा था कि दोनों ने आवेश में आकर जहरीला पदार्थ पी लिया। इलाज के लिए उन्हें अस्पताल ले जाया गया, मगर कुदरत ने जैसे पहले से फैसला कर लिया था। देर रात अस्पताल में दोनों ने भी दम तोड़ दिया। एक ही रात में एक परिवार के तीन दीपक बुझ गए।अब न आंगन में चूल्हा जलेगा, न किसी खिड़की से आवाज़ आएगी। गांव की गलियों में सन्नाटा पसरा है, हर चेहरा सवालों से भरा है–आखिर मोहित ने ऐसा क्यों किया? जिस मां ने बेटे को सीने से लगाकर पाला, जिसने हर दुख सहकर उसे बड़ा किया, वो उसके जाने की खबर सुनकर खुद भी साथ चली गई। और वो बहन, जिसने भाई के बिना कुछ न मांगा, उसे खोकर खुद भी जीवन त्याग दिया। गांव वालों की आंखें नम हैं, और दिलों में एक ही बात गूंज रही है–"ऐसी भी कोई तड़प होती है, जो पूरा घर निगल जाए?" पुलिस जांच में जुटी है, पर जवाब अब शायद ख़ामोशी में ही दफ्न हैं। कभी इस घर में हंसी गूंजती थी, आज वहां सिर्फ सन्नाटा है।कभी मां की ममता थी, बहन की हँसी थी, बेटे की उम्मीद थी–आज वहां सिर्फ राख बची है।

महिलाओं ने पाकिस्तान के प्रधान मंत्री, सेना अध्यक्ष को भेजी चूड़ियां

स्वतंत्र प्रभात

कुशीनगर। पडरौना विकास खंड के ग्राम सभा जंगल धर्मपुर के भरपटिया में जम्मू कश्मीर के पहलगांव में हुए आतंकी हमले के विरोध में भाजपा नेता पप्पू पाण्डेय के नेतृत्व में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और सेना अध्यक्ष को महिलाओं द्वारा गुरुवार को चूड़ी कुरियर किया गया। इस कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए भाजपा नेता पप्पू पाण्डेय ने कहा कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले से पूरा देश गमगीम व आहत है, साथ ही साथ पाकिस्तान के ऊपर सैन्य कार्यवाही के लिए पूरा भारत ही नहीं बल्कि पुरे विश्व की निगाहें टिकी हुई हैं कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा जो भी अभी तक निर्णय लिया गया है वह काफ़ी सराहनीय है,पाकिस्तान के ऊपर कब जवाबी कार्यवाही की जाती है, देश के प्रधानमन्त्री के द्वारा बहुत ही जल्द फैसला कर इस दुष्ट पाकिस्तान को मिट्टी में मिला देने का कार्य

बहुत जल्द ही करने वाले हैं ताकि कोई भी आतंकी ऐसा कृत्य करने से पूर्व सौ बार सोचे, बहुत ही जल्द प्रधानमंत्री को इस पर कड़ा फैसला लेना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और सेना अध्यक्ष दोनों कायर हैं, अगर उनके अंदर ताकत है तो हमारी सेना से मुकाबला करके दिखाएँ, निहात्थे लोगों से जाति और धर्म पूछकर गोली चलाने वाले लोग नपुंसक होते हैं, वे लोग छुपकर कायरता पूर्वक कृत्य करते जो काफ़ी शर्मनाक है। इसके बिरोध में हमारे देश की माताओं और बहनो की तरफ से पाकिस्तान के प्रधानमंत्री और सेना अध्यक्ष को चुडिया कुरियर किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से विशुनपुरा मण्डल नेआमंत्री मनोज कुमार गोंड, हिमांशु गुप्ता, गीता देवी, रीता देवी, सुगिया देवी, बिन्दा देवी, मंजू देवी, दुर्गा देवी, सामसूती देवी, शांति देवी, रीना देबी, मुनिया देवी, बसंती देवी, मंजू देवी, आशा देवी, बिंदु देवी, लालती देवी, सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

11 गोवंशीय पशु बरामद

देवरिया। जनपद की बरियारपुर पुलिस ने ग्राम मधवापुर मोड़ के पास से मुखबिर की सूचना पर पिक-अप वाहन संख्या BR 29GB 9526 से कुल 11 राशि गोवंशीय पशुओं को बरामद किया । बरामदगी के दौरान पिक-अप चालक मौके से फरार हो गया । पुलिस टीम द्वारा कुल 11 राशि गोवंशीय पशुओं तथा पिक-अप वाहन को कब्जे में लेते हुए मु0अ0सं0 142/2025 धारा 3/5ए/8 गोवध निवारण अधिनियम व 11 पशु क्रूरता अधिनियम का केस दर्ज करते हुए आवश्यक कार्यवाही की जा रही है । अभियुक्त की गिरफ्तारी हेतु टीमें गठित कर दी गई हैं ।

गोरखपुर- झपकी ने ली ज़िंदगी- बालू लदे ट्रेलर से भिड़ी रोडवेज बस, मां की मौत, बेटा सहित पांच घायल

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर– गोरखपुर के गिडा थाना क्षेत्र के पास बाघागाड़ा में गुरुवार सुबह एक ऐसा हादसा हुआ जिसने सभी को दहला दिया। प्रयागराज से गोरखपुर जा रही रोडवेज बस तड़के सड़क किनारे खड़े बालू लदे ट्रेलर से जा भिड़ी। हादसा इतना जबरदस्त था कि बस की अगली सीट पर बैठी 45 वर्षीय रिंकी सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। दिल को झकझोर देने वाली बात यह रही कि रिंकी सिंह के साथ उनका 18 वर्षीय बेटा आदर्श भी यात्रा कर रहा था, जो इस हादसे में घायल हो गया। हादसे के बाद चीख-पुकार मच गई, और गांव के लोग मौके पर दौड़ पड़े। किसी ने खून से लथपथ यात्रियों को खींचकर बाहर निकाला तो कोई एंबुलेंस बुलाने में जुटा रहा।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि बस चालक को झपकी आने से उसने नियंत्रण

खो दिया, जिससे बस सीधा ट्रेलर के पीछे घुस गई। दोनों वाहनों को पुलिस ने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों का गुस्सा ट्रेलर चालक की लापरवाही पर भी है, क्योंकि ट्रेलर लंबे समय से सड़क किनारे खड़ा था। इस हादसे ने एक परिवार से मां को छीन लिया और कई जिंदगियों को संकट में डाल दिया। इलाके में शोक की लहर है और लोग घायलों के जल्द स्वस्थ होने की दुआ कर रहे हैं।

जिला प्रशासन ने बढ़ाई सतर्कता, बाढ़ पूर्व तैयारियां युद्धस्तर पर

● -बाढ़ से पहले गोण्डा में तटबंधों की सुरक्षा को मिली गति, घाघरा किनारे तटबंधों की मरम्मत व निर्माण कार्य तेज़

तटबंदी कार्यों की प्रगति पर जिलाधिकारी की निगरानी, सकरौर व चरसरी तटबंध पर निर्माण कार्यों से बाढ़ सुरक्षा को बल

स्वतंत्र प्रभात

गोण्डा । जनपद में सरयू/घाघरा नदी के जलस्तर में संभावित वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए जिला प्रशासन ने बाढ़ से पूर्व तटबंधों की मरम्मत और मजबूतीकरण के कार्यों को गति दे दी है। सिंचाई विभाग द्वारा नदी के बांये तट पर स्थित संवेदनशील स्थलों पर रिवेटमेंट निर्माण, स्पर पुनःस्थापना एवं

स्पिल क्लोजिंग जैसे सुरक्षा कार्य युद्धस्तर पर किए जा रहे हैं।एल्गिन ब्रिज-चरसरी तटबंध के विभिन्न कि.मी. बिंदुओं पर स्पर निर्माण की परियोजनाएं संचालित हैं। इनमें कि.मी. 22.420, कि.मी. 22.720, कि.मी. 23.050 पर नए स्पर का निर्माण किया जा रहा है, जबकि कि.मी. 23.410 के डाउनस्ट्रीम में स्पिल को बंद करने का कार्य प्रगति पर है। इसके अतिरिक्त, कि.मी. 36.470 पर स्थित पुराने स्पर नोज को फिर से स्थापित किया जा रहा है।इसी क्रम में, सकरौर-भिखारीपुर रिंग तटबंध पर भी बड़े पैमाने पर सुरक्षा कार्य हो रहे हैं। कि.मी. 10.250 से 10.550, कि.मी. 12.450 से 12.910 तथा कि.मी. 12.050 से 12.230 के मध्य रिवेटमेंट कार्य कराए जा रहे हैं। साथ ही, कि.मी. 12.240 और 12.450 पर पुराने स्परों की मरम्मत एवं पुनःस्थापना की जा रही है।

जिलाधिकारी नेहा शर्मा ने कहा है कि तटबंधों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। सभी कार्यों की गुणवत्ता की नियमित निगरानी की जा रही है तथा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि तय समय सीमा के भीतर सभी निर्माण कार्य पूर्ण कर लिए जाएं। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि संवेदनशील तटवर्ती क्षेत्रों में विशेष सतर्कता बरती जाए और किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए रैपिड रिस्पॉन्स टीमें तैयार रहें।

संक्षिप्त खबरें

बरसात से पूर्व की जाएगी नालों की तलीझाड़ सफाई एवं सात नये नालों का निर्माण

बीते दिवस संपन्न हुई नगर पालिका परिषद की बैठक मे सभी 25 सभासदों की उपस्थिति में बरसात के समय जलभराव की समस्या के निराकरण के लिए सभी नालों की तलीझाड़ सफाई बरसात से पूर्व एक माह के अन्दर कराने का निर्णय लिया गया । इसके साथ ही सात नये नालों अलीगंज रोड़ पर मेला मैदान के दूसरे गेट के सामने गोस्वामी गारमेंट्स से सेठी की पुलिया तक ,मंगला देवी मंदिर से पवन महेश्वरी तक ,विकास चौराहे से बाबछ टेलर तक,गौशाला गेट से प्रेमचन्द तिवारी के मकान तक,गौशाला गेट से गुरुनानक कन्या इण्टर कालेज से होते हुए महर्षि वाल्मीकि द्वार तक,लक्ष्मी नगर कालोनी में दो नालें राम खिलावन के मकान से रामू मिश्रा के मकान तक और रहमुन निशा के मकान से वसीम खान के मकान तक का निर्माण कार्य भी एक माह में कराने का निर्णय लिया गया है। बोर्ड बैठक के अंत में पहलगाम में आतंकी हमलों में शहीदों को दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रयागराज में हेमंत पटेल के हत्यारो को सजा दिलाए जाने हेतु एसडीएम के माध्यम से राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। कुछ दिनों पूर्व प्रयागराज में हेमंत पटेल की गोली मारकर की गई हत्या के विरोध में ओबीसी महासभा के राष्ट्रीय महासचिव रामनिवास वर्मा की अगुवाई में विनोद कुमार गुप्ता एसडीएम गोला विनोद के माध्यम से एक ज्ञापन प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को भेजा गया है। दिए गए ज्ञापन में कहा गया है कि अभी तक हेमंत के हत्यारों के विरुद्ध कोई भी कठोर कार्रवाई सुनिश्चित नहीं की गई। ज्ञापन में हत्या के आरोपितों को शीघ्र पकड़ कर जेल भेजने, मृतक परिवार को 50 लाख नगद मुआवजा और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दिए जाने की मांग की गई है। इस मामले में शीघ्र ही कार्रवाई न की गई तो ओबीसी महासभा धरना प्रदर्शन को बाध्य होगा। इस मौके पर पटेल संस्थान गोला के उपाध्यक्ष अंकुर वर्मा, उपमंत्री संदीप वर्मा, पूर्व मंत्री एड. पंकज वर्मा, पटेल विशाल वर्मा, एड. नवल वर्मा, प्रधान राधे श्याम वर्मा, एड. विजय कुमार वर्मा, पटेल विजय कनौजिया आदि मौजूद रहे।

आबकारी विभाग ने अजीजगंज अब्दुल्लागंज ककरा कला में की छापेमार करवाई

शाहजहांपुर- शासन एवं आबकारी आयुक्त उत्तर प्रदेश के आदेश के क्रम में अवैध मदिरा के परिवहन, निर्माण एवं बिक्री के विरुद्ध चलाए जा रहे प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत ज़िलाधिकारी शाहजहांपुर के दिशानिर्देश एवं जिला आबकारी अधिकारी के मार्गदर्शन में गुरुवार को आबकारी टीम द्वारा सदर क्षेत्र स्थित अजीजगंज, अब्दुल्लागंज और ककरा कला में संदिग्ध स्थानों पर दबिश देकर 30 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद कर 01 अभियोग पंजीकृत किया गया। मौके पर लगभग 200 किलोग्राम लहन बरामद कर नष्ट कर दी गई। इसके साथ ही क्षेत्र स्थित देशी मदिरा व कंपोजिट शॉप का निरीक्षण किया गया। आबकारी टीम का नेतृत्व आबकारी निरीक्षक सदर सौरभ कुमार द्वारा किया गया। दबिश के दौरान आबकारी दीवान राजेंद्र पाल, त्रिलोचन सिंह,ह नीफुल्लाह आबकारी सिपाही राहुल तिवारी, रोहित सिंह, धर्मेंद्र सिंह , रनी सिंह आदि रहे।

थाना कलान पुलिस ने देशी तमंचा सहित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

शाहजहांपुर। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार, एव अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देशन में व क्षेत्राधिकारी जलालाबाद के पर्यवेक्षण में एवं प्रभाष चन्द्र प्रभारी निरीक्षक कलान के कुशल नेतृत्व में संदिग्ध व्यक्ति एवं अवैध शस्त्र के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के दौरान थाना कलान पुलिस को बडी कामयाबी हासिल हुई। थाना कलान पुलिस द्वारा चैकिंग संदिग्ध व्यक्ति,वाहन एव क्षेत्र गस्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त मोहनलाल पुत्र रामचन्द्र 30 वर्ष निवासी ग्राम रसेम थाना कांट को एक देशी तमंचा 12 बोर व 02 जिन्दा कारतूस 12 बोर नाजायज के साथ गुन्दौरा दाउदपुर जाने वाले रास्ते ईंट के भट्टे के पास खडे पीपल के पेड के पास से गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त मोहनलाल उपरोक्त के विरुद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही करते हुए चालान माननीय न्यायालय किया जा रहा है।

भूख प्यास और छाया के अभाव में दम तोड़ रहे गोवंश

● विकासखंड बेहजम के आश्रय स्थलों में अवस्थाओं का बोलबाला

प्रधान और पंचायत सचिव पर ग्रामीणों ने लगाई भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी मामला विकासखंड बेगम की ग्राम पंचायत रसिया में संचालित अस्थाई गौशाला का है जहां पर गोवंशों को हरा चारा दाना पुनि चोकर की जगह सूखा भूसा दिए जाने का आरोप ग्रामीणों द्वारा लगाया जा रहे हैं सूत्रों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार गोवंश भूख और प्यास से आए दिन दम तोड़ रहे हैं वही ग्राम प्रधान और सचिव गोवंशों को हरा चारा देने के नाम पर लाखों की जगह काटकर अपनी तिजोरी भरने में लगे देखे जा सकते हैं इतना ही नहीं ग्रामीणों के बताएं अनुसार ग्राम रतआसिया के गांव आश्रय स्थल में गांव वंश को धूप से बचने की पर्याप्त व्यवस्था तक नहीं है मात्र एक ही तीन सेट पड़ा है जिसके चलते गोवंश अपार्ट इस कर्क राशि धूप में बैठने को विवश देखे जा रहे हैं। ग्रामीणों ने बताया गौशाला के नाम पर लाखों रुपए प्रतिमान का बजट स्वीकृत होता है जिससे गोवंश पशुओं की अच्छी तरह से देखभाल हो सके और पर्याप्त मात्रा में चार हुआ दान दिया जा सके लेकिन जिम्मेदारों की खाओ कुमाऊं नीति के चलते गोवंशों के लिए आने वाली धनराज का एक बड़ा भाग प्रधान और सचिव द्वारा डकार लिया जाता है और दिखावे के लिए या फिर कभी शिकायत होने पर जांच को आने वाले अधिकारियों को गुमराह करने की मनसा से दो-तीन बोरी दाना लाकर रख लिया जाता है यह मैच दिखाने के लिए रखा जाता है ना की गोवंशों को देने के लिए होता है गोवंशीय पशुओं की हालत को देखकर आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है की प्रति गोवंश शासन से मिलने वाली राशि ?50 का कितना अंश गोवंश को मिल पा रहा है ड्राइवर की जुबानी सत्य मानी जाए तो चारा पानी और छाया के अभाव में काफी गवर्मेंट स समय कल के गाल में समा चुके हैं और इसकी निगरानी को नियुक्त जिम्मेदार इस ओर ध्यान देना उचित नहीं समझ रहे हैं यदि मामले की मुख्य विकास अधिकारी खेड़ी में संज्ञान और स्वयं करने जांच तो अवस्था की पोल खुल कर आएगी सामने।

आदर्श शिक्षक कल्याण समिति के स्थापना दिवस पर मनाया गया भगवान परशुराम प्राकट्य उत्सव

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। आदर्श शिक्षक कल्याण समिति उत्तर प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर स्वामी रामाश्रम विद्या मंदिर में भगवान परशुराम प्राकट्य उत्सव समारोह मनाया गया।समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में केन ग्रोअर्स नेहरू पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज के प्राचार्य डॉ0 पंकज सिंह, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रवक्ता बृज गोविंद मिश्रा व कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में कौशल किशोर मिश्रा सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज गोला के उप प्रधानाचार्य कौशल किशोर मिश्रा उपस्थित थे। कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने भगवान परशुराम के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनका पूजन किया। विद्यालय की प्रबंधक नीरज मिश्रा व समिति के प्रांतीय अध्यक्ष विमलेश कुमार मिश्रा ने सभी अतिथियों के स्मृति चिन्ह प्रदान कर आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम में समिति के अमित गुप्ता, महामंत्री डॉ0 वीरेश चन्द्र बाजपेई, जितेंद्र कुमार प्रजापति, विवेक दीक्षित व आदर्श जायसवाल सहित समिति के तमाम पदाधिकारी व सदस्य मौजूद रहे।

तहसील गेट पर बन रहे पार्क व बाउंड्री वाल का सिविल न्यायालय ने दिया स्थगन आदेश

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। जनपद के नगर पंचायत निघासन में तहसील गेट पर बन रहे पार्क बाउंड्री वाल में कुछ भूमि नगर पंचायत निवासी के नाम दर्ज खाता की भूमि पर नगर पंचायत के अधिकारी व नगर अध्यक्ष के द्वारा जबरदस्ती कब्जा कर पार्क बाउंड्री वाल बनवाने के संबंध में पीड़ित पक्ष ने सिविल न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। सिविल न्यायालय ने तहसील गेट पर बन रहे पार्क के संबंध में स्थगन आदेश पारित किया गया है। यह आदेश सीमांकन करने हेतु नहीं बाध्य होगा। पीड़ित ने न्यायालय के समक्ष बताया कि पीड़ित की भूमि पर जबरदस्ती पार्क का निर्माण किया जा रहा है, कुछ हिस्सा पीड़ित के नाम दर्ज खाता है। वही बाकी की भूमि तालाब के नाम दर्ज खाता है। पीड़ित के कई बार प्रार्थना पत्र देने के बावजूद भी पीड़ित की भूमि पर नहीं रुका निर्माण कार्य जिससे पीड़ित ने सिविल न्यायालय का दरवाजा खटखटाते हुए रिट दायर की है। सिविल न्यायालय ने बन रहे पार्क बाउंड्री वाल पर स्थगन आदेश परित किया गया है।अब देखना या होगा कि नगर पंचायत अध्यक्ष सहित अधिकारी कर्मचारी न्यायालय के स्स्थगन आदेश को मानते हैं या फिर अवहेलना करते है।निघासन नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी ने बताया कि अभी तक ऑफिशियल कॉपी नहीं हुई है प्राप्त अगर स्थगन आदेश की ऑफिशियल कॉपी प्राप्त होती है तो न्यायालय के आदेश को सर्वमान्य किया जाएगा अग्रिम आदेश आने तक अधिकारियों से वार्ता कर निर्णय लिया जाएगा ।पीड़ित ने बताया एक दिन पूर्व ही नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी को न्यायालय की स्थगन आदेश कॉपी हो चुकी है प्राप्त फिर भी नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी न्यायालय को भी गुमराह करने में कोई भी कसर नही छोड़ रहे है।

निजीकरण के विरोध में संविदा कर्मचारियों ने अधिशाषी अभियंता को सौंपा पत्र, 1 तारीख से अनिश्चितकालीन धरने की चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी। जनपद के मोहम्मदी विद्युत वितरण खंड कार्यालय में मंगलवार को उस समय माहौल गंभीर हो गया जब 33/11 केवी विद्युत उपकेंद्रों पर कार्यरत संविदा निविदा कर्मचारियों ने निजीकरण के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए अधिशाषी अभियंता को ज्ञापन सौंपा। कर्मचारियों ने स्पष्ट कहा कि यदि विभाग द्वारा निजीकरण की प्रक्रिया नहीं रोकी गई, तो वे 1 मई से अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर देंगे।

संविदा कर्मचारियों ने कहा कि निजीकरण से उनकी नौकरियाँ असुरक्षित हो जाएँगी और उनकी आजीविका पर संकट खड़ा हो जाएगा। उन्होंने सरकार और विभागीय अधिकारियों से अपील की कि सार्वजनिक सेवाओं का निजीकरण रोक कर कर्मचारियों की रोज़ी-रोटी बचाई जाए। ज्ञापन में कर्मचारियों ने आरोप लगाया कि पिछले कुछ वर्षों से आउटसोर्सिंग के माध्यम से संविदा श्रमिकों के हितों की अनदेखी की जा रही है। कई उपकेंद्रों पर कार्यरत कर्मियों की छुट्टी कर दी गई है, जिससे उनका जीवन संकट में है। कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि किसी भी कर्मचारी की छुट्टी की गई तो वे इसका कड़ा विरोध करेंगे। ज्ञापन में मांग की गई कि किसी भी संविदा कर्मचारी की छुट्टी न की जाए। पूर्ववत सभी उपकेंद्रों पर कार्यरत संविदा कर्मियों को यथावत कार्य पर रखा जाए। सभी संविदा कर्मियों को स्थायी सेवा जैसी सुविधाएँ दी जाएं। विभागीय अधिकारियों की लापरवाही से उत्पन्न समस्या की जिम्मेदारी तय की जाए।

कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि उनकी मांगें नहीं मानी गई तो वह 1 मई से अनिश्चितकालीन धरना देंगे, जिसकी समस्त ज़िम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी।इस मौके पर विद्युत संविदा कर्मचारी संगठन के पदाधिकारी, तकनीकी कर्मचारी और विभिन्न उपकेंद्रों के संविदा कर्मी उपस्थित रहे। जनता और उपभोक्ताओं को भी इस धरने के चलते विद्युत आपूर्ति में व्यवधान की संभावना जताई जा रही है, जिससे आम जनजीवन पर प्रभाव पड़ सकता है।

मनरेगा मजदूर मिस्त्री महासंघ द्वारा श्रम मजदूर दिवस पर एक दिवसीय समारोह आयोजित 11 सूत्रिय दिया ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी 1 में को विश्व श्रम मजदूर दिवस लखीमपुर स्थित नसरुद्दीन गुलाबी मेमोरियल हल्के प्रांगण में प्रातः दस से सायंकाल 4÷00 बजे तक मनरेगा मजदूर मिस्त्री महासंघ के रा0अध्यक्ष संतोष कुमार शर्मा अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया।आयोजित कार्यक्रम में 11 सूत्री मांगों का ज्ञापन जिला अधिकारी खीरी के प्रतिनिधि नायब तहसीलदार अखिलेश श्रीवास्तव राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला, मुख्य न्यायधीश सर्वोच्च न्यायालय भारत सरकार,राज्यपाल आनंदीबेन पटेल , मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को कार्यक्रम में सौंपा गया।विश्व श्रम दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि संतोष कुमार शर्मा ने कहा कि

भारत को आजाद हुए लगभग 77 वर्ष हो चुके है। अब तक भारत के सभी दलों की सरकारों ने ठेकेदारी प्रथा जड़ से खत्म नहीं किया। भारत के मजदूर मिस्त्रियों सभी दलों की सरकारों ने लूटने व लुटबाने का काम किया है। श्री शर्मा ने जोर देकर कहा कि मजदूर गरीहियों श्रेणी बदली जाए। आवास में तीन कमरे बनाए जाए एक कमरा रहने के लिय, एक कमरा बैठने उठाने के लिय, एक कमरा घरेलू वस्तु रखने के लिय दिया जाए, एक अंत्योदय कार्ड, पांच लाख आयुष्मान कार्ड, सभी गरीब मजदूरों को दिया जाए। भारत के सभी गांवों व मजरों में 25 फुट चौड़े पक्के रोड़ बनाए जाए। सभी गांवों में बस सुविधा दी जाए। श्री शर्मा ने जोर देकर कहा बेवा वृद्ध विकलांगों को पांच हजार रुपए प्रति माह पेंशन दी जाए व वृद्ध विकलांगों को रेलगाड़ी व सरकारी बस में निशुल्क यात्रा दी जाए। मनरेगा अध्यक्ष ने कहा की पूरे देश में एक साथ चुनाव कराए जाते है तो सबका एक सा वेतन अधिकारी, कर्मचारी, सफाईकर्मी, मजदूर मिस्त्रियों को दिया जाए। सभा को ओम प्रकाश शर्मा शिवकुमार शिल्पकार वेद प्रकाश शर्मा संदीप शर्मा रामकिशोर शर्मा रंजीत कुमार पप्पू शर्मा आज ने संबोधित किया।

अटल सभागार में पैरालिसिस के संबंध में ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट दिल्ली से न्यूरोलॉजी के प्रोफेसर डॉ सुमित सिंह देंगे जानकारी

● 3 मई को शाम 5÷00 बजे से 7:00 तक अटल सभागार में पैरालिसिस के बारे में कार्यक्रम का होगा आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। एम्स के प्रोफेसर द्वारा दिया जाएगा फालिज(लकवा) की बीमारी पर लेक्चर आजकल डायबिटीज और बीपी की बीमारियों के कारण फालिज या पक्षाघात या स्ट्रोक के रोगी बढ़ रहे हैं। यह एक गंभीर बीमारी है। जिसमें रोगियों की जान जाने का खतरा भी रहता है । इससे भी ज्यादा गंभीर बात यह है कि जिन रोगियों का जीवन बच जाता है ।लेकिन फालिज बनी रहती है। वह हमेशा के लिए विकलांग हो जाते हैं। एक तो वृद्धावस्था ऊपर से पैरालिसिस ।

उनके लिए अपना जीवन दुखमय और भार स्वरूप हो जाता है। क्योंकि आजकल लोगों के पुत्र और परिवार के लोग भी जीविका के लिए प्रायः घर से दूर रहते हैं। ऐसे में वह लोग भी उनकी सेवा और सहायता पर्याप्त रूप से नहीं कर पाते। इस परेशानी का मुख्य कारण यह नहीं है कि इलाज उपलब्ध नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि इलाज के विषय में और बीमारी के लक्षणों के विषय में लोगों को या तो जानकारी नहीं है। या अधूरी जानकारी है। या गलत जानकारी है अब, चिकित्सा क्षेत्र में इतना ज्यादा विकास हो जाने के बाद, हार्ट अटैक के लिए लोग काफी सजग हो चुके हैं। सीने में किसी भी प्रकार के दर्द के लिए हार्ट की जांच कराते हैं। लेकिन इसके उलट ब्रेन अटैक या पैरालिसिस जो कि हार्ट अटैक के तरीके से ही होती है। लोगों की इस समस्या को ध्यान में रखते हुए शेखर अस्पताल ने इस विषय पर जनता को जागरूक करने के लिए एक सेमिनार या लेक्चर, पैरालिसिस के विषय पर कराने का निर्णय लिया है। इसके लिए ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट दिल्ली से न्यूरोलॉजी के प्रोफेसर डॉ सुमित सिंह 3 मई शनिवार को शाम को 5:00 से 7:00 बजे तक अटल सभागार में पैरालिसिस के बारे में उपयोगी जानकारी हिंदी में देंगे। ताकि समाज के सभी वर्गों के लोग इस जानकारी का लाभ उठा सकें। गौरतलब है कि इस कार्य में शाहजहांपुर के जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने विशेष सहयोग किया है ताकि यह कार्य अच्छी तरह से संपन्न हो सके, जनता तक जानकारी पहुंच सके।

पुवायां बण्डा और खुटार पहुंचकर शिक्षकों से मिले डॉ.हरी सिंह ढिल्लो

● शिक्षकों के हित के लिए सदैव तत्पर है योगी सरकार- डॉ हरी सिंह ढिल्लो ,लिटिल फ्लावर कान्वेंट स्कूल पहुंचे शिक्षक विधायक डॉ.हरी सिंह ढिल्लो

स्वतंत्र प्रभात

पुवायां, शाहजहांपुर। मुरादाबाद और बरेली मंडल से शिक्षक विधायक डॉ. हरि सिंह ढिल्लों ने बण्डा, खुटार और पुवायां पहुंचकर शिक्षकों की समस्याएं सुनीं। इसी क्रम में पुवायां नगर के लिटिल फ्लावर कान्वेंट स्कूल पहुंचकर शिक्षकों के हित में सरकार द्वारा चलाई जाने वाली जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शिक्षा को माफिया गिरी से मुक्त कर स्वस्थ माहौल बनाने में योगी सरकार का बहुत योगदान है।शिक्षकों के लिए जल्द ही वित्त विहीन विद्यालयों के शिक्षकों के लिए आयुष्मान कार्ड योजना के अंतर्गत पांच लाख रुपए तक के मुफ़्त इलाज लाभ दिलाया जाने के लिए वे प्रयासरत हैं।उनके क्षेत्र में लगभग साढ़े छः÷हजार शिक्षण संस्थान आते हैं जिनमें से वे प्रतिदिन किसी न किसी विद्यालय में जाकर शिक्षकों और संस्थानों की समस्याएं सुनते हैं।उन्होंने यह भी कहा कि स्कूल समय के बाद शिक्षकों को विद्यालयों में रोकना संज्ञेय अपराध है। इससे पूर्व प्रबंध समिति की ओर उनका ज़ोरदार अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर उनके साथ शाहजहांपुर और पीलीभीत से विधान परिषद सदस्य डॉ सुधीर गुप्ता भी उपस्थित रहे।

अभिनंदन करने वालों में, प्रबंध समिति के सुरेंद्र पाल,हरदेव सिंह, राकेश चंद्र गुप्ता एडवोकेट,अरुण कुमार सक्सेना एडवोकेट, प्रमोद चंद्र गुप्ता, सुभाष चौधरी,सूर्य कुमार एडवोकेट, महेश चंद्र गुप्ता,चैतन्य मनु भारद्वाज आदि रहे।आभार अरुण सक्सेना एडवोकेट ने व्यक्त किया।इस अवसर पर प्रधानाचार्य नानक दास मैसी, उप प्रधानाचार्य ब्रज भूषण शुक्ला सहित समस्त स्टाफ का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन ब्रजभूषण शुक्ला ने किया।

हत्या में प्रयुक्त औजार सहित अभियुक्तो को किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहाँपुर। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण में जनपदीय एस0 ओ0जी0, सर्विलांस सेल व थाना कोतवाली पुलिस को बडी सफलता प्राप्त हुई है। थाना कोतवाली जनपद शाहजहाँपुर मे वादी अखिलेश कुमार पुत्र छोटेलाल वर्मा निवासी मोहल्ला अजीजगंज थाना कोतवाली जनपद शाहजहाँपुर व उनके भाई कमलेश व जितेन्द्र के साथ मो0 अजीजगंज मे मोमोज वाले ठेले के पास अभियुक्तगण शेरु पुत्र रामभरोसे, रामकिशोर पुत्र सुंदरलाल, रामनिवास पुत्र बांकेलाल, सुमित पुत्र रामनिवास, एक अन्य अज्ञात व्यक्ति सर्व निवासीगण मोहल्ला अजीजगंज थाना कोतवाली जिला शाहजहाँपुर ने विवाद किया गया जिसमे उपरोक्त अभि0 गणो द्वारा अखिलेश कुमार व उसके भाईयो कमलेश व जितेन्द्र के ऊपर जान से मारने की नियत से फायर किया। अभियुक्तगणो की गिरफ्तारी हेतु टीमो का गठन कर लगातार प्रयास किया जा रहा था। उक्त टीम द्वारा आज दि0 01.05.25 को समय करीब 01:48 बजे अजीजगंज तिराहे से करीब 50 कदम आगे नगरिया मोड की तरफ घटना मे सम्मिलित अभि0 गण रामनिवास पुत्र बांकेलाल, सुमित पुत्र रामनिवास नि0गण अजीजगंज थाना कोतवाली जनपद शाहजहापुर को गिरफ्तारी किया गया तथा अभि0 गणो की निशा देही पर घटना में प्रयुक्त आलाकत्ल एक अदद कुलहाडी व एक अदद डण्डा को भी बरामद किया गया अभियुक्तगणो को नियमानुसार न्यायालय के समक्ष पेश कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

जिला पंचायत के चीफ अकाउंटेंट संजीव सक्सेना हुए सेवा निवृत्त

● जिलापंचायत सभागार में कार्यक्रम के दौरान फूलमाला पहनाकर दी गई भावभीनी विदाई

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। जिला पंचायत शाहजहांपुर के अकाउंटेंट एवं कार्यालय वित्तीय परामर्शदाता संजीव कुमार सक्सेना को सेवानिवृत्ति होने पर कार्यालय सभागार में विदाई कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्षा ममता यादव, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल सिंह यादव समेत कार्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा। बता दें कि संजीव कुमार सक्सेना की नियुक्ति वर्ष 1985 में हुई थी अपने सेवा काल के दौरान श्री सक्सेना ने 39 वर्ष 10 माह 24 दिन विभाग को अपनी सेवायें देने उपरांत 60 वर्ष का कार्यकाल पूरा करके सेवा निवृत्त हुए हैं। कार्यक्रम के दौरान पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल सिंह यादव कहा कि संजीव कुमार सक्सेना विभाग को अपनी सेवाएं देने के पश्चात भले ही आज सेवा निवृत्त हो रहे हैं लेकिन सदैव हम लोगों के साथ रहेंगे इनके द्वारा स्टाफ को सदैव सहयोग दिया गया जिसे हमेशा याद रखा जाएगा। विदाई समारोह के दौरान कार्यालय के साथी कर्मचारियों द्वारा उपहार भेंट किए गए। इस दौरान जिला पंचायत अध्यक्ष ममता यादव ने कहा कि सेवा निवृत होना जीवन का अंत नहीं है बल्कि आजादी से जीने की शुरुआत है सालों की मेहनत करने के बाद आपके पास खुद के लिए समय होगा।इस दौरान अरविंद सक्सेना ने कहा कि ईश्वर आपकी सभी इच्छाएं पूर्ण करें सेवा निवृत्त होने पर बधाई।

महापौर अर्चना वर्मा ने घर-घर जाकर सुनी जन समस्याएं

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर/ गुरुवार को महापौर अर्चना वर्मा द्वारा वार्ड नं0-20 (दिलाजाक) में ÷महापौर जनता के द्वार÷ कार्यक्रम में वार्डवासियों की समस्याओं को घर-घर जाकर सुना गया व वार्ड का निरीक्षण कर सफ़ाई व्यवस्था को देखा गया। महापौर अर्चना वर्मा द्वारा वार्ड का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय वार्ड की सफ़ाई व्यवस्था वार्ड में स्वच्छता कर्मियों की उपस्थित दर्ज की गयी व सख्त निर्देश दिए गए कि सफाई से सम्बंधित कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो 7 वार्डवासियों द्वारा बताई गयी समस्याओं में सर्वप्रथम नाली, नाले का पुनः निर्माण जैसी समस्याएं रखी गई गोबर नाली में न बहाएँ। जिससे आपके सहयोग से नगर निगम स्वच्छता में उत्तम रैंकिंग प्राप्त कर सके। स्थलीय निरीक्षण के समय पार्षद पति जीशान हुसैन, नगर आयुक्त डॉ0 बिपिन कुमार मिश्र, अपर नगर आयुक्त एस0के0 सिंह, सहायक अभियंता जलकल, प्रकाश अधिक्षक, मुख्य सफाई एवं खादय निरीक्षक व वार्डवासी मौजूद रहे।

शाहजहाँपुर तैयार है इतिहास गढ़ने के लिए रौजा- शाहजहांपुर में आज पहली बार उतरेंगे लड़ाकू विमान

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर- के जलालाबाद में पहली बार दो और तीन मई को राफेल, मिराज और जगुआर लड़ाकू विमान उतरेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ ही सैकड़ों लोग इसके साक्षी बनेंगे। नाइट लैंडिंग शो के कारण कटरा-जलालाबाद मार्ग दो मई को शाम सात बजे से रात दस बजे तक पूरी तरह से बंद रहेगा। दो मई को प्रातः 8 बजे से वायुसेना की ओर से एफएलसी प्रारंभ होगी। सुबह 9÷45 बजे से 10÷30 बजे तक वायुसेना के लड़ाकू विमानों द्वारा लैंडिंग शो का आयोजन किया जाएगा। जलालाबाद के गांव पीरू के पास स्थित 3÷30 किलोमीटर लंबी गंगा एक्सप्रेसवे की हवाई पट्टी पर दो और तीन मई को होने वाले भारतीय वायुसेना अभ्यास की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जा रहा है। डीएम धर्मेंद्र प्रताप सिंह और एसपी राजेश द्विवेदी ने मौके पर पहुंचकर निरीक्षण किया। डीएम ने निराश्रित गोवंश प्रबंधन, सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था एवं स्कूली बच्चों के लिए बैठने की व्यवस्था बेहतर करने के निर्देश दिए। धूल-मिट्टी उड़ने से रोकने के लिए पानी का छिड़काव कराने सहित अन्य व्यवस्थाओं को समय से पूरा करने के लिए निर्देशित किया।उन्होंने बताया कि नाइट लैंडिंग शो के कारण कटरा-जलालाबाद मार्ग दो मई को शाम सात से रात 10 बजे तक पूरी तरह बंद रहेगा। लोग वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करेंगे। करीब ढाई सौ कैमरों से निगरानी की जाएगी। नाइट लैंडिंग के लिए हवाई पट्टी पर लाइटिंग की व्यवस्था की गई है।

संक्षिप्त खबरें

थाना औराई क्षेत्र अन्तर्गत पॉक्सो एक्ट के वांछित अपराधी गिरफ्तार, पुलिस पर हमला नाकाम, आत्मरक्षार्थ फायरिंग से अभियुक्त घायल

दिनांक 01.05.2025 को थाना औराई क्षेत्र अंतर्गत मु0अ0सं0-183/2025 धारा-115(2), 351(3), 127(2), 64(1) बीएनएस व 3/4पॉक्सो एक्ट थाना औराई पर पंजीकृत अभियोग में वांछित अभियुक्त महफूज आलम उर्फ लुट्टन बाबा पुत्र अब्दुल खालिद निवासी वार्ड नं0 14 खमरिया थाना औराई जनपद भदोही को गिरफ्तार किया गया तथा अपने बयान में नाबालिक के साथ दुष्कर्म का आरोप स्वीकार करते हुए साक्ष्य के बरामदगी हेतु बताए हुए स्थान ग्राम लक्ष्मणिया के कैलाश बनिया के बाउड्री के बगल खेत में ले जाया गया जहां पर जमीन पर खोदते वक्त अचनाक से उसमें एक तमंचा निकालकर पुलिस बल पर जान से मारने की नियत से फायर करते हुए भागने लगा ,जवाबी कार्यावाही व आत्मरक्षार्थ की दृष्टि से अभियुक्त पर फायरिंग किया गया उसके बायें पैर में गोली लगी जिससे वह घायल हो गया । अभियुक्त को कब्जे में लेकर समुचित ईलाज हेतु सीएचसी औराई भेजा गया है। पुलिस उच्चाधिकारीगण के नेतृत्व में फील्ड यूनिट द्वारा घटनास्थल का निरीक्षण करते हुए आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है।

जातिगत जनगणना का फैसला इण्डिया गठबंधन की बहुत बड़ी जीत

जिला कांग्रेस कमेटी भदोही के अध्यक्ष वसीम अंसारी व पूर्व जिला अध्यक्ष डा राजेंद्र कुमार दूबे राजन जी ने संयुक्त रूप से प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि जातिगत जनगणना का फैसला इण्डिया गठबंधन की बहुत बड़ी जीत है नेता प्रतिपक्ष राहुल गाँधी के दबाव से भाजपा सरकार मजबूरन ये फैसला लेने को बाध्य हुई है.. सामाजिक न्याय की लड़ाई में इंडिया गठबंधन की बहुत बड़ी जीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है बीजेपी की नकारात्मक सोच ने देश में जातिगत जनगणना ना करा कर अब तक अपना वर्चस्व कायम रखने का प्रयास किया था परंतु आज जातिगत जनगणना ही प्रत्येक जाति को अपनी जनसंख्या के अनुपात में अपना हक और अधिकार दिलाएगी, जिस पर अभी तक और लोगों का वर्चस्व रहा है उन्होंने कहा कि सबको हिस्सेदारी और सब की भागीदारी के साथ देश के प्रत्येक व्यक्ति को न्याय दिलाना ही हमारी प्रतिबद्धता है देश के समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण पदों पर हर वर्ग और जाति का प्रतिनिधित्व अनिवार्य है. उन्होंने कांग्रेस सहित जो विपक्षी पार्टियों इस विषय को मुख्य धारा में लेकर आई सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया.

धूमधाम से मनाई गई भगवान परशुराम की जयंती

मानस के अरण्य कांड पाठ का हुआ आयोजन

चुनार, मिर्जापुर। गंगेश्वर नाथ स्थित श्री राघव जी मंदिर में बुधवार की शाम ब्राह्मण शिरोमणि भगवान परशुराम जी की जयंती बड़े धूमधाम से मनाई गई। भगवान परशुराम की बैठक पूजा अर्चना कर आरती की गई साथ ही मानस के अरण्य कांड का पाठ किया गया और प्रसाद वितरण किया गया। इस दौरान गौरी नाथ दीक्षित,नंदकिशोर तिवारी, ज्योतिषाचार्य बृजेश कुमार चतुर्वेदी, प्रतीत राव वैद्य, सुनील कुमार तिवारी,श्रवण कुमार अवस्थी,दिनेश कुमार अवस्थी, कलाधर चतुर्वेदी, गौतम पांडेय, संतोष मिश्रा, समर्थ वैद्य, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शाखा चुनार की प्रभारी ब्रह्माकुमारी बीनू दीदी, तारा दीदी, सभासद विकास कुमार कश्यप, तिलक जायसवाल, राकेश श्रीवास्तव, अनिल मिश्रा प्रमुख सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

जल जीवन मिशन के निर्माणाधीन परियोजनाओं की डीएम ने की विशद समीक्षा बैठक

●प्रदेश में नवाचार पहल के रूप में "जल जीवन सखी" घर-घर जाकर जल संरक्षण की जगायेगी अलख-जिलाधिकारी

जल संचयन व जल संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी को बढ़ायेंगी जल जीवन सखी-डीएम शैलेष कुमार

स्वतंत्र प्रभात

भदोही :- जिलाधिकारी शैलेष कुमार की अध्यक्षता में जल जीवन मिशन योजनान्तर्गत निर्माणाधीन परियोजनाओं की विशद समीक्षा बैठक कलेक्टेऊट सभागार में सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने प्रदेश स्तर पर नई पहल करते हुए जल जीवन मिशन योजना के व्यापक क्रियान्वयन के दृष्टिगत प्रत्येक ग्राम पंचायत में बनायी गई जल समिति के महिला सदस्यों को "जल जीवन सखी" के रूप में कार्य करने का निर्देश दिया। इस पहल का उद्देश्य जल जीवन सखियों द्वारा ग्रामों में जाकर शुद्ध व नियमित पानी की उपलब्धता पर बल दिया जायेगा, साथ ही घर-घर जाकर जल संरक्षण की अलख भी जगायेगी। जल जीवन सखियों को प्रशिक्षित किया जायेगा, ताकि वे जल संरक्षण के विभिन्न तरीकों, तकनीको और इसके महत्व के बारे में ग्रामवासियों को जागरूक कर सकें। जल जीवन सखी की भूमिका जल संचयन व वर्षा जल संचयन के महत्व को बढ़ावा देने के साथ ही जल की बचत व उसके संरक्षण के लिए सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना है। जिलाधिकारी शैलेष कुमार सिंह ने कहा कि जल जीवन सखी के माध्यम से हम ग्राम पंचायतों में जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ा सकते है। उन्होंने सभी ग्राम पंचायतों से अनुरोध किया कि जल संरक्षण के प्रयासों में सहयोग करें। इससे जल जीवन सखी महिलाओं को रोजगार के अवसर के साथ ही सामाजिक सेवा का सुअवसर प्राप्त होगा। जल समिति व जल जीवन सखी समूह में ग्राम प्रधान, सचिव, लेखपाल, एडीओ को भी सम्मलित करने में डीएम ने बल दिया।

जिलाधिकारी ने सभी कार्यदायी संस्थाओं को सख्त निर्देशित किया कि सभी परियोजनाएं समय सीमा में गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करना सभी सुनिश्चित करें, साथ ही पाईप लाईन बिछाने हेतु उखाड़ी गई इण्टरलॉकिंग को समय सीमा में ठीक कराना सुनिश्चित करें। जनपद में जल्द ही सभी ग्राम पंचायतों में जल जीवन मिशन के तहत टंकी बनाने व पेयजल पाईप लाईन बिछाने का कार्य पूर्ण होगा, जिससे गॉव वालों को नियमित रूप से शुद्ध व स्वच्छ पेयजल मिलेगा। डीएम ने कार्यदायी संस्थाओं को सीएसआर के माध्यम से गॉव के विकास व प्रगति हेतु प्रेरित किया। उन्होंने जल जीवन मिशन के टंकी निर्माण व पाईप लाईन बिछाने हेतु जमीन की उपलब्धता व विवादित जमीन के सम्बन्ध में कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्बन्धित उप जिलाधिकारी व खण्ड विकास अधिकारी से समन्वय व सहयोग लेते हुए कार्य की पूर्ण क्रियान्वयन पर जोर दिया।

अधिशासी अभियंता जल निगम मुजीब अहमद ने बताया कि जल जीवन मिशन योजनान्तर्गत राज्य पेयजल स्वच्छता मिशन लखनऊ द्वारा फेज द्वितीय के अन्तर्गत चयनित एजेंसी मेसर्स वेलस्पन द्वारा जनपद भदोही में 262 परियोजना का निर्माण कार्य कराया जा रहा है, जिसमें 372 ग्राम पंचायतों के 749 राजस्व गॉव सम्मलित है। फेज तृतीय के अन्तर्गत चयनित एजेंसी मेसर्स जी0ए0इन्फ्रा द्वारा जनपद भदोही में 137 परियोजना का निर्माण कार्य कराया जा रहा है, जिसमें 137 ग्राम पंचायतों के 244 राजस्व गॉव सम्मलित है। बैठक में पूर्ण परियोजनाओं, प्रतिशतवार परियोजनाओं, विवादित परियोजना (भूमि विवाद, रोड की समस्या, अन्य समस्या) की समीक्षा, पाईप लाईन बिछाने के दौरान खोदाई कराये गये सड़कों, नाली, खडन्जा आदि के मरम्मत कराये जाने सहित प्रायः नियमित जलापूर्ति की जा रही ग्रामों के सम्बन्ध में समीक्षा, हर घर जल सत्यापन की समीक्षा, परियोजनाओं में मिट्टी भराई की समीक्षा आदि बिन्दुओं पर जिलाधिकारी द्वारा बिन्दुवार समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 शिवाकांत द्विवेदी, समस्त बीडीओ, जिला सूचना अधिकारी डॉ0 पंकज कुमार, चारों कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि व टीम आदि सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दलितों के सम्मान में सपा उतरी सड़क पर

●सपा ने धरना प्रदर्शन कर सरकार के खिलाफ बोला हल्लाबोल

भाजपा सरकार में दलित सुरक्षित नही- देवी चौधरी

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सदस्य रामजीलाल सुमन के काफिले पर हमला करने वालों को गिरफतारी की मांग को लेकर सपा ने पार्टी कार्यालय लोहिया ट्रस्ट से जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी के नेतृत्व में पैदल मार्च कर कलेक्ट्रेट पहुंचकर जोरदार धरना प्रदर्शन कर महामहिम राष्ट्रपति को सम्बोधित मांग पत्र नगर मजिस्टेट को सौंपा। इस अवसर पर कलेक्ट्रेट में आयोजित धरना प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए सपा जिलाध्यक्ष देवी प्रसाद चौधरी ने कहा भाजपा सरकार में दलित सुरक्षित नही है। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सदस्य रामजीलाल सुमन पर हमला सरकार की कसाजिश नजर आ रही है। इस सरकार में दलित व पिछड़े सुरक्षित नही है। श्री चौधरी ने कहाकि हमला करने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाये। उन्होने कहा बाबा साहब भीम राव अम्बेडकर के संविधान और प्रदेश की कानून व्यवस्था को चुनौती दे रहे है। आयेदिन लूटपाट हत्या की घटनाये जनपद में बढ़ी है। पीडीए समाज आने वाले 2027 के चुनाव में भाजपा सरकार को उखाड़ फेकने का कार्य करेगी।

इस मौके पर पूर्व विधायक राजेन्द्र सिंह पटेल, आशीष यादव, अशोक यादव, रविन्द्र बहादुर सिंह, मुन्नी यादव, सुरेन्द्र पटेल, राजेश भारती, आदर्श यादव, रोहित शुक्ला, शैलेश पटेलू, झल्लू यादव, गणेश केसरी, हरिशंकर यादव राणा प्रताप सिंह, दामोदर मौर्या, इन्दु कुमारी, रामजी मौर्या, सुरेश पटेल, शिवपूजन यादव, कान्धा यादव, राजेन्द्र यादव, दुर्गा सिंह, रंजीत फौजी, कौशिक कन्नौजिया, विशाल यादव, अतीक खान, श्याम अचल यादव, सीताराम चमार, मेवालाल प्रजापति, संतोश गोयल, जमुना यादव, सन्तबीर मौर्या, सूर्यकान्कत सिंह , लाल बहादुर कयकादव, सौरभ सिंह, भोला यादव, अरशद अली, विकास केसरी, विजय यादव, निजाम भाई आदि सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर एक गोष्ठी का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

भदोही- भदोही में ईट भट्ठा निर्माता संघ एवं श्रम विभाग भदोही के संयुक्त तत्वधान में आयोजित किया । इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री रवि पाटोदिया वरिष्ठ कालीन निर्यातक भदोही उपस्थित रहे उन्होंने कहा कि सर्वप्रथम श्रमिकों को जागरूक और शिक्षित होना पड़ेगा जिससे वह अपने अधिकारों को जान सकेंगे और उसको प्रयास कर प्राप्त कर सकेंगे इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पुनीत मेहरा प्रबंधक वुडवर्ड पब्लिक स्कूल भदोही रहे उन्होंने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए सबको संकल्पित होने की बात कही गई कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मिठाई लाल दुबे अध्यक्ष ईट निर्माता संघ भदोही द्वारा किया गया। इस अवसर पर उनके द्वारा जनपद भदोही में ईट भट्ठों पर कार्यरत मजदूर के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी

देते हुए बताया गया कि शासन के निर्देश पर हिट वेव को देखते हुए पेय पदार्थ की व्यवस्था सभी भट्ठों पर किया जा रहा है इसी क्रम में श्री जेपी सिंह श्रम प्रवर्तन अधिकारी एवं प्रभारी सहायक श्रम आयुक्त भदोही द्वारा श्रमिकों को विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए एवं उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए श्रमिक पंजीयन नवीनीकरण तथा योजनाओं के हित लाभ का लाभ लेने की बात कही गई तथा मात्र 20 रुपए खर्च कर पंजीकरण करा सकते है ।साथ ही प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन पेंशन योजना एवं एनपीएस ट्रेडर्स के अंतर्गत पेंशन 18 से 40 वर्ष के आयु के सभी लोग पेंशन में अपना भाग ले सकते हैं इसके लिए सीएससी पर जाकर पंजीकरण करा सकते है। इस अवसर पर हीट वेव से बचाव के उपाय के संदर्भ में विस्तार पूर्वक जानकारी प्रदान की गई।

गोष्ठी मे उपस्थित श्री मेवा लाल यादव उपाध्यक्ष ईट भट्ठा संघ श्री तहसीलदार सिंह श्री हृदय नारायण सिंह श्री अरुण माहेश्वरी श्री विशाल कुमार महेश्वरी श्री नारायण गुप्ता राजेश चौरसिया विनय दुबे सभापति दुबे जलील अहमद मन्ना यादव श्री मुन्नू मौर्य बृजेश कुमार न्याय नेटवर्क भदोही इस अवसर पर ईट भट्ठा स्वामी उनके प्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में मजदूर उपस्थित रहे कार्यक्रम का संचालन इंद्रजीत तिवारी द्वारा किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के अवसर पर जागरूकता कार्यक्रम,विचार गोष्ठी का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के अवसर पर श्रम विभाग मीरजापुर एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण मीरजापुर द्वारा जिला पंचायत सभागार में जागरूकता कार्यक्रम/विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य विकास अधिकारी विशाल कुमार ने किया। सहायक श्रमायुक्त द्वारा कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विस्तार से चर्चा करते हुये उ0प्र0 भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण द्वारा संचालित योजनाओं पर विस्तार से चर्चा करते हुये उपस्थित श्रमिकों से हितलाभ हेतु आवेदन किये जाने हेतु जोर दिया गया। बोर्ड द्वारा संचालित किये जा रहे मीरजापुर मण्डल में अटल आवासीय विद्यालय पर जानकारी देते हुये बताया कि नवोदय विद्यालय जैसा ही निर्माण श्रमिकों के पुत्र/पुत्रियों हेतु गुरमुरा सोनभद्र में अटल आवासीय विद्यालय संचालित है, जहां निर्माण श्रमिकों के बच्चें प्रवेश परीक्षा पास कर कक्षा 6 से 12 तक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। भारत सरकार द्वारा संचालित प्रधान मंत्री श्रम योगी मानधन योजना एवं ई-श्रम पर विस्तार चर्चा करके जानकारी दी गयी। गोष्ठी को संबोधित करते हुये अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश

द्वारा उपस्थित निर्माण श्रमिकों को 01 मई अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई। चर्चा में उन्होंने बताया कि 150 वर्ष पहले श्रमिकों से 18 घण्टे काम कराया जाता था, परन्तु आंदोलन के उपरान्त वर्तमान में 08 घण्टे काम लिया जाता है। उपस्थित मजदूरों को सरकार द्वारा संचालित की जा रही योजनाओं में लाभ दिये जाने पर बल दिया गया। मुख्य विकास अधिकारी, द्वारा चर्चा करते हुये बताया कि वर्तमान समय में गूगल की क्रान्ति है। कोई भी योजना की जानकारी गूगल पर देखा जा सकता है। सरकार द्वारा दी जा रही व्यवस्था के अनुसार आप किसी भी योजना का आवेदन कामन सर्विस सेन्टर के माध्यम से करते हुये लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मुख्य विकास अधिकारी ने उपस्थित श्रमिकों को विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं यथा-एन0आर0एल0एम0, मुख्यमंत्री युवा योजना, ई-श्रम पोर्टल, प्रधान मंत्री श्रम योगी मानधन योजना पर विस्तार से चर्चा की। चर्चा के दौरान 18-40 वर्ष के युवाओं हेतु सी0एम0युवा योजना के अंतर्गत पंजीयन कराकर स्वरोजगार हेतु पंजीयन कराने पर जोर दिया गया। अंत में मुख्य विकास अधिकारी द्वारा श्रम विभाग द्वारा संचालित योजनाओं में हितलाभ प्राप्त कर चुके लाभार्थियों को स्वीकृति पत्र का वितरण किया गया। उपस्थित श्रमिकों के धन्यवाद ज्ञापन के बाद विचार गोष्ठी का समापन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सुविज्ञ सिंह, सहायक श्रमायुक्त, श्री आलोक रंजन, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, मीरजापुर, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह, श्रम प्रवर्तन अधिकारी, चुनार, मीरजापुर एवं कार्यालय के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे।

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस पर कर्मवीरो का हुआ सम्मान

चुनार, मिर्जापुर। नगर के लोअर लाइन स्थित संत थॉमस स्कूल में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त सह कर्मियों का पुष्प वर्षा के साथ अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विद्यालय के प्रधानाचार्य आदर्श संतोष रहे। संयोजक अध्यापक के के पांडेय रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। तत्पश्चात छात्र-छात्राओं ने गायन और संगीत के माध्यम से मनोरंजन किया। इस दौरान विद्यालय के समस्त अध्यापक, अध्यापिका एवं छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

20-20 हजार के इनामियाँ गैंग सरगना सहित 02 शातिर अभियुक्त/अभियुक्ता गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। 'सोमेन बर्मा 'वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़ तथा वांछित/पुरस्कार घोषित/ईनामियाँ अभियुक्तों की गिरफ्तारी करते हुए उनके विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष को निर्देश दिया गया है । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना मड़िहान, एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त पुलिस टीम को थाना राजगढ़ पर पंजीकृत मु0अ0सं0-01/2025 धारा 3(1)गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित ? 20-20 हजार के इनामियाँ गैंग लीडर सहित 02 शातिर अभियुक्तों की गिरफ्तारी करने में बड़ी सफलता हाथ लगी है । गुरुवार को थाना मड़िहान, एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा मुखबिर से प्राप्त सूचना के आधार पर सिरसी मोड़ के पास से ? 20-20 हजार के इनामियाँ 02 शातिर अभियुक्त/अभियुक्ता 1.शहजाद अली उर्फ दिलीप(गैंग लीडर) पुत्र सकूर अली व 2.सीमा पत्नी शहजाद अली निवासीगण सतौहा थाना घोरावल जनपद सोनभद्र को गिरफ्तार किया गया । थाना मड़िहान पुलिस द्वारा गिरफ्तार इनामियाँ वांछित अभियुक्त/अभियुक्ता के विरूद्ध नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा जा रहा है ।

नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने सभासद सतीश केशरवानी के निधन पर जताया शोक

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। नगर पालिका परिषद मीरजापुर के बुंदेलखंडी वार्ड से निर्वाचित सभासद सतीश केशरवानी के आकस्मिक निधन पर नगर पालिका अध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने गहरा शोक व्यक्त किया है।गुरुवार की अलसुबह जब उनके निधन की सूचना मिली तो नपाध्यक्ष स्वयं उनके निवास पर पहुंचे और शोक संतप्त परिजनों से मिलकर अपनी शोक संवेदना प्रकट की। इसके बाद पालिका के प्रधान कार्यालय पर एक शोकसभा का आयोजन किया गया,जिसमें सभी सभासदों,अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नम आंखों से सभी ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की। पालिका अध्यक्ष ने कहा कि सतीश केशरवानी अत्यंत सरल,व्यवहारिक और

कर्मठ व्यक्ति थे।वे पालिका परिवार के अभिन्न अंग थे और उनके जाने से जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसे भर पाना असंभव है।शोक संतप्त परिवार को इस दुःख की घड़ी में सहन शक्ति प्रदान करने और दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की गई है।शोक सभा के उपरांत नगर पालिका कार्यालय को एक दिन के लिए बंद रखने का निर्णय भी लिया गया।

जिलाधिकारी ने गोंड़ जाति समुदाय के 08 व्यक्तियो को वितरित किया जाति प्रमाण पत्र

मीरजापुर। जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने अपने कार्यालय में गोंड़ जाति समुदाय के 08 व्यक्तियो को जाति प्रमाण पत्र वितरण किया। गोंड जाति के प्रमाण पत्र हेतु प्राप्त आवेदनों का समिति के सत्यापन के बाद प्रस्तुत किये गये साक्ष्य के आधार पर जिलाधिकारी ने जिन 08 व्यक्तियो को जाति प्रमाण पत्र वितरण किया, उनमें विवेक किशोर वर्मा, कौशल किशोर वर्मा, प्रतीक किशोर वर्मा, सत्यम किशोर वर्मा, शिवम किशोर वर्मा, रंजीत कुमार, कान्हा एवं खुशी को प्रमाण पत्र वितरित किया।

हनुमान मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के लिए निकला विशाल शोभायात्र

स्वतंत्र प्रभात

गैपुरा। छानबे क्षेत्र के बरबटा गाँव में हनुमान जी की प्राण-प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में गुरुवार की सुबह भव्य बाइक व मोटर जुलूस निकाल कर यहाँ से दस किलोमीटर दूर विमलेश्वर महादेव मंदिर घाट हरगढ़ में ग्रामीणों ने डुबकी लगाई। श्रद्धालुओं ने पश्चिम वाहिनी गंगा का पवित्र जल कलश में भर लिया। सिर पर कलश रखकर महिलाओं ने गाँव की गलियों में चक्रमण किया। मंदिर के पुजारी लक्ष्मण दास ने बताया कि मंत्रोच्चारण के बीच विधि विधान से हनुमान जी की दिव्य प्रतिमा की स्थापना किया जाएगा। इस उपलक्ष्य में विशाल शोभायात्रा के बाद भंडारे का आयोजन किया जाएगा। जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु

भक्त प्रसाद ग्रहण करेंगे। जन सहयोग एवं दान दाताओं के चंदे से दिव्य मंदिर का निर्माण कराया गया है। गुरुवार को यहाँ महिलाओं व भक्तों का तांता लगा रहा। हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भक्तजनों में भारी उत्साह देखा गया।

97.8 फीसदी पाकर सौम्या ने जिले में लाया दूसरा स्थान

देवरिया। शहर के जीवन मार्ग सोफिया सेकेंड्री स्कूल से जिले में दूसरा स्थान लाकर सौम्या ने अपने पढ़ाई का लोहा मनवाया है। सौम्या के पिता जीतेन्द्र दीक्षित योग प्रशिक्षक हैं। उन्होंने बताया कि आई0सी0एस0सी0 बोर्ड में सौम्या ने 97 :8 फीसदी अंक लाकर बिद्यालय एवं अपने माता- पिता का सर उंचा किया है। सौम्या ने बताया कि आगे चलकर उसे एक चिकित्सक बन कर समाज के कमज़ोर एवं गरीबों की सेवा करनी है। इस सफलता पर क्षेत्रीय आर्युवेदिक एवं उनानी अधिकारी डा.विशाल चौधरी, गौरव शाही (जिला कार्यक्रम प्रबंधक), संजय पांडेय लेखकार, परितोष सिंह, डा.पिंटू लाल यादव, जयराम तिवारी, एस.के.सिंह, धर्मेश पाण्डेय, विक्रम ज्योति पांडेय, राजेश गुप्ता, सुनील कुमार, इत्यादि योग प्रशिक्षकों ने बधाई दी।

बेटी मैत्री सिंह ने हाईस्कूल में आल इंडिया रैंकिंग में चौथा स्थान प्राप्त किया

स्वतंत्र प्रभात

मिर्जापुर। जनपद के स्टार क्रिकेट खिलाड़ी रहे उदय प्रताप सिंह की बेटी मैत्री सिंह ने हाईस्कूल में आल इंडिया रैंकिंग में चौथा स्थान प्राप्त कर इंस्पेक्टर साहब के कंधे पर एक और स्टार लगा दिया। मैत्री ने पिता उदय प्रताप सिंह की तरह ही सिटी मांटेसनरी स्कूल लखनऊ में ज़ोरदार बैटिंग किया अपनी हाईस्कूल की परीक्षा में जोरदार छक्का लगाया। गेंद सीधी सौ प्रतिशत से कुछ कम 99.20 प्रतिशत पर जाकर रुकी । इस शानदार कुल गौरव उपलब्धि पर मैत्री के चाचा हरेन्द्र प्रताप सिंह ने और उनके दोस्त

विवेक, विशाल, साइलेंस, कोमल रिजवी, देवेन्द्र पांडेय, मुन्ना पांडेय, सभासद टीटू यादव, मिर्जापुर क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव विवेक दुबे, ने बधाई दिया है ।

बैतालपुर चीनी मिल चालू हो नहीं तो जारी रहेगा प्रदर्शन- राम प्रकाश

देवरिया। बैतालपुर चीनी मिल चलाने के लिए चीनी मिल चलाओ संघर्ष समिति के तत्वाधान में चलाया जा रहा धरना आज 155 वें दिन जारी रहा। सभा को संबोधित करते हुए समिति के उपाध्यक्ष राम प्रकाश सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री के घोषणा के बाद भी बैतालपुर चीनी मिल चलाने की कोई प्रक्रिया अब तक पूरी नहीं हुई। कहा कि जब तक चीनी मिल चालू नहीं होगा तब तक हम किसान धरना प्रदर्शन करते रहेंगे चाहे इसके लिए हम किसानों को जो भी कुर्बानी देनी होगी दिया जाएगा । इस अवसर पर, राजू चौहान , वृद्धि चंद यादव, राम इकबाल चौहान, बरकत अली ,शंभू नाथ तिवारी ,विजय कुमार सिंह, मंजू , कन्हैया चौहान ,अशोक मालवीय, दीनदयाल ,जगदीश यादव, इत्यादि लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

नीरज केसरी को मिला जिला विद्यालय निरीक्षक का चार्ज

कौशाम्बी। जनपद के जिला निरीक्षक रहे डॉ० सच्चिदानन्द यादव के द्वारा अधिवर्षता आयु पूर्ण होने के पश्चात सेवानिवृत्त होने पर सरकार द्वारा उनके स्थान पर नियमित रूप से जिला विद्यालय निरीक्षक की नियुक्ति न होने तक उनके स्थान पर पण्डित दीनदयाल उपाध्याय इण्टर कॉलेज केसरिया के प्रधानाचार्य नीरज केसरी को जिला विद्यालय निरीक्षक के पद का अतिरिक्त कार्यभार उप निदेशक राजेन्द्र प्रसाद द्वारा सौंपा गया है।

यमुना नदी में किशोर के डूबने से हुई मृत्यु पर परिजन को दिया गया चार लाख का मुआवजा

कौशाम्बी। जनपद में तहसील मंझनपुर के ग्राम-छेकवा उपरहार में दिनांक 23/04/2025 को यमुना नदी में किशोर मिथलेश कुमार पुत्र श्रीनाथ उम्र 20 वर्ष के डूबने से मृत्यु हो गयी थी। हादसे की खबर मिलते ही एसडीएम मंझनपुर अजेन्द्र सिंह ने मामले को गम्भीरता से लेते हुये लेखपाल आलोक कुमार सिंह को मौके पर भेजा। लेखपाल ने पूरे मामले की रिपोर्ट दी। इसके बाद एसडीएम ने तहसीलदार को पीड़ित परिजन को मुआवजा देने की कार्यवाही शुरू करने का निर्देश दिया। एसडीएम व तहसीलदार ने जाँच रिपोर्ट मिलने के बाद परिजन को रू0-04 लाख का मुआवजा दिया है। रू0-04 लाख मुआवजे की रकम परिजन के खाते में देर रात्रि खाते में ट्रान्सफर कर दिया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर विकास खण्ड परिसर, मंझनपुर में कार्यक्रम का आयोजन कर 75 मजदूरों का कराया गया पंजीकरण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी के निर्देशन में आज दिनांक 01 मई 2025 को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर विकास खण्ड परिसर, मंझनपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती कल्पना सोनकर एवं पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेमचंद चौधरी उपस्थित रहे। जिला पंचायत अध्यक्षा द्वारा जन समुदाय को सम्बोधित करते हुये संचालित विभागीय योजनाओं का लाभ लेने एवं श्रम विभाग में पंजीयन करने की अपील की गयी। कार्यक्रम में विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत रू0-1500000/की धनराशि का प्रमाण पत्र भी जिला पंचायत अध्यक्षा द्वारा वितरित किया गया। साथ ही लगभग 75 मजदूरों का पंजीकरण कराया गया, 40 मजदूरों का नवीनीकरण कराया गया, 80 मजदूरों का मोबाइल नम्बर जोड़ा गया। श्रम प्रवर्तन अधिकारी द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को विभाग द्वारा संचालित समस्त योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उप जिलाधिकारी मंझनपुर, पीडी, बीडीओ सरसवां, बीडीओ मंझनपुर के साथ-साथ सेवायोजन विभाग से डॉक्टर सुग्रीव सिंह, विनोद कुमार सिंह वरिष्ठ सहायक तथा श्रम विभाग से धर्मेन्द्र सिंह एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

पहचान छुपा कर धार्मिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकारों का बहिष्कार

मथुरा। हिंदुत्व रक्षा संगठन की बैठक बलदेव में बंटी महाराज एवं कृष्णा महाराज के सानिध्य में आयोजित की गई। जिसमें निर्णय लिया गया कि अपचान छिपा कर एवं नाम बदल कर धार्मिक आयोजनों में प्रतिभाग करने वाले कलाकारों का बहिष्कार किया जाएगा। कुछ लोग जानबूझ कर अपनी पहुंच बढ़ा रहे है एवं सनातन की मान्यताओं को निशाना बना रहे है। ऐसे व्यक्ति अपना नाम बदलकर धार्मिक कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता दिखाते हैं। इस बैठक में सनातनीय सभी व्यक्तियों से अनुरोध किया गया कि सभी धार्मिक आयोजनों में अपने सनातनी व्यक्तियों द्वारा कराएं। कार्यक्रम में आने वाले लोगों की पहचान सुनिश्चित करें इसके बाद ही अनुमति दें। जो लोग नाम बदल कर या पहचान छुपकार धार्मिक कार्यक्रमों में आते हैं उनका बहिष्कार किया जाए। इस अवसर पर आसपास के कलाकारो ने इस बात का समर्थन करते हुए कहा कि माता रानी का जागरण, भजन संध्या, कीर्तन, भागवत कथा, राम कथा में कोई भी गैर सनातनी रहेगा तो उसका विरोध किया जाएगा और आयोजक को इसकी पूर्व जानकारी दी जाएगी। जिससे वह अन्यत्र व्यवस्था कर सकें। इस मौके पर अमित अग्रवाल, प्रवीण शर्मा, कैलाश कुशवाह, जगदीश, जेपी, शंकर, जादूगर, दीपक, अक्षय, राकेश, अमन रुपेंद्र आदि उपस्थित रहे।

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने एमनेस्टी इंडिया के खिलाफ ईडी मनी लॉन्ड्रिंग मामले को अस्थायी रूप से रोक दिया

स्वतंत्र प्रभात

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (एआईआईपीएल) और इसके पूर्व प्रमुख आकार पटेल से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग जांच पर अस्थायी रोक लगा दी है। यह अंतरिम रोक 2022 की अभियोजन शिकायत से उत्पन्न हुई है और आगे की न्यायिक समीक्षा तक प्रभावी रहेगी। न्यायमूर्ति हेमंत चंदनगौदर ने स्थगन देते हुए ईडी को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत अपनी जांच आगे न बढ़ाने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त, अदालत ने ईडी को नोटिस जारी कर एआईआईपीएल और पटेल द्वारा दायर याचिकाओं पर जवाब मांगा है, जिसका उद्देश्य उनके खिलाफ आरोपों को खारिज करना है।

कानूनी लड़ाई की शुरुआत 2019 में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा दर्ज की गई एफआईआर से हुई, जिसमें एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया फाउंडेशन ट्रस्ट (एआईआईएफटी) पर विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम (एफसीआरए) का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया था। इसके बाद, ईडी ने मामला अपने हाथ में लिया, जिसमें आरोप लगाया गया कि एमनेस्टी इंडिया ने एफसीआरए मानदंडों को दरकिनार करने के लिए वाणिज्यिक चैनलों के माध्यम से अपनी यूके शाखा से धन भेजा था।

एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया ने 2020 में अपने संचालन को रोक दिया था, जब भारतीय अधिकारियों ने उसके बैंक खातों को फ्रीज कर दिया था, यह दावा करते हुए कि ये कार्रवाई नागरिक समाजों पर व्यापक कार्रवाई का हिस्सा थी। संगठन ने आरोपों से जुड़े किसी भी गलत काम से लगातार इनकार किया है।

स्थगन देने का निर्णय फरवरी में न्यायमूर्ति एसआर कृष्ण कुमार की अध्यक्षता वाली एक अन्य पीठ द्वारा मामले में सह-आरोपी जी

अनंतपद्मनाभन के पक्ष में जारी पिछले अंतरिम आदेश से प्रभावित था। पटेल और एआईआईपीएल के खिलाफ पहले से विचाराधीन आरोपों की समानता को देखते हुए, अदालत ने इसी तरह की अंतरिम राहत देना उचित समझा। अदालत ने टिप्पणी की, "याचिकाकर्ताओं के खिलाफ लगाए गए आरोप एक संबंधित मामले से मिलते-जुलते हैं, जिसमें पहले ही अंतरिम राहत दी जा चुकी है। इसलिए, अगली सुनवाई की तारीख तक याचिकाकर्ताओं को यह राहत देना उचित है।"

अमेरिकी इंजीनियर दंपती के सपनों की राजकुमारी बनी रेलवे यार्ड में फेंकी गई लावारिस बेटी!

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। लोक लाज के भय से जन्म के बाद फेंके ! गए 44 अनाथ बच्चों को जिंदगी की नई रोशनी मिल गई है। राजकीय बाल गृह (शिशु) में रखे गए ऐसे अनाथ बच्चों को अब माता-पिता मिल गए हैं। एक बिटिया को तो अमेरिका के साफ्टवेयर इंजीनियर दंपती ने गोद ले लिया और वह उसे अपने सपनों की राजकुमारी बनाकर सात समंदर पार ले गए हैं।यह बिटिया जन्म लेने के कुछ दिनों बाद ही वर्ष 2023 में प्रयागराज रेलवे स्टेशन के यार्ड में लावारिस हालत में मिली थी। लोकलाज के भय से अनचाहे जन्म के बाद उसकी मां ने उसे फेंक दिया था। लावारिस बच्ची की यार्ड में हालत खराब होने के बाद लोगों ने उसे तब अस्पताल में भर्ती करा दिया था, जहां से ठीक होने के बाद बाल कल्याण समिति के निर्देश पर वह शिशु गृह में लाई गई थी।

अप्रैल 2024 से 30 अप्रैल 2025 के दौरान बिहार, मध्य प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, कर्नाटक, यूपी के निःसंतान दंपतियों ने एक दिन से छह वर्ष तक के 44 बच्चों को गोद लेकर उनकी जिंदगी को खूबसूरत बनाया है। इसमें कोई प्रशासनिक अफसर हैं तो कोई कारोबारी तो नौकरी पेशा। इसमें एक प्रदेश के पूर्व कैबिनेट मंत्री भी शामिल हैं, जिन्होंने एक बिटिया को सेंट्रल एडॉप्शन रिसोर्स अथॉरिटी (कारा) के नियमों के तहत गोद लिया है। तीन बच्चों को इटली के दंपति ने गोद लिया है। इसमें एक बड़े उद्यमी भी शामिल हैं। अमेरिका के साफ्टवेयर इंजीनियर दंपति ने इस बिटिया को गोद लेने के लिए रजिस्ट्रेशन कराया और करीब 15 माह से अधिक समय तक इंतजार किया। बलिया जिले में वर्ष 2022 में छह दिन का एक बच्चा लावारिस हालत में पाया गया। सीडब्ल्यूसी ने राजकीय बाल गृह शिशु भेजा, जहां जांच में बच्चे के दिल में छेद पाया गया। लंबे समय तक उसका इलाज हुआ। नवंबर 2023 में जांच हुई तो बच्चे के दिल

का सुराख भर गया था। उसे सेंट्रल एडॉप्शन रिसोर्स अथॉरिटी के माध्यम से इटली के एक दंपति ने गोद लिया और उसे लेकर इटली चले गए। जिला प्रोबेशन अधिकारी सर्वजीत सिंह का कहना है कि अगर आप किसी बच्चे को गोद लेना चाहते हैं तो सेंट्रल एडॉप्शन रिसोर्स अथॉरिटी पर आनलाइन रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। एक वर्ष से छह वर्ष तक के बच्चे को सौंपने के लिए विधिक अनुमति लेनी पड़ती है। होम स्टडी, मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर बच्चे को गोद लेने वालों को सौंपा जाता है। उन्होंने बताया कि एक वर्ष में 44 बच्चों को लोगों ने गोद लिया है। इसमें चार बच्चों को विदेश के लोगों ने शेष अन्य प्रदेश के लोगों ने अपनाया है।

मुख्तार अंसारी की जेल में मौत की जांच याचिका खारिज

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को गैंगस्टर-राजनेता मुख्तार अंसारी की मौत की जांच मामले में बेटे उमर अंसारी की तरफ से दायर याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया। यूपी के दबंग नेता रहे मुख्तार अंसारी की बीते साल यूपी की बांदा जेल में दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई थी। उमर ने शुरुआत में ही पने पिता मुख्तार अंसारी के लिए सुरक्षा की मांग की थी। साथ ही उन्होंने उन्हें उत्तर प्रदेश से बाहर की जेल में भेजे जाने का अनुरोध किया था। पिता मुख्तार की मौत के बाद उमर ने इस मौत से जुड़ी परिस्थितियों की जांच की मांग की थी।

न्यायमूर्ति एम एम सुंदरेश और न्यायमूर्ति राजेश बिंदल की पीठ ने कहा कि चूंकि याचिका मूल रूप से उमर के पिता के जीवित रहते ही दायर की गई थी। इसलिए पीठ ने उनकी मृत्यु के बाद कार्यवाही जारी रखने में अनिच्छा व्यक्त की। इस मामले को लेकर पीठ ने उमर से कहा कि वह किसी भी कानूनी कार्यवाही के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएं. उमर ने दावा किया कि हालांकि उनके पिता की मौत की न्यायिक जांच की गई थी, लेकिन उन्हें अब तक रिपोर्ट नहीं मिली।

बीते साल जुलाई में उमर ने दावा किया था कि उसके पिता को दिए गए भोजन के माध्यम से उन्हें ÷ज़हर÷ दिया गया था. इसके साथ ही उन्हें जरूरी मेडिकल सेवाएं भी नहीं दी गई थीं. जिसकी वजह से हिरासत में ही मुख्तार अंसारी की मौत हो गई थी।

उमर अंसारी ने साल 2023 में एक

याचिका दायर कर यूपी के बांदा जेल में बंद अपने पिता मुख्तार अंसारी की सुरक्षा को खतरा होने का आरोप लगाया था. बीते साल 28 मार्च को मऊ सदर विधानसभा क्षेत्र से 5 बार विधायक रहे अंसारी की बांदा के एक अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई थी. उमर के वकील ने दलील दी थी कि उनके मुवक्किल को अपने पिता की सुरक्षा को लेकर जो डर था, वही हुआ

पहलगाम हमले पर जनहित याचिका पर सुनवाई से सुप्रीम कोर्ट का इनकार

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को 22 अप्रैल के पहलगाम आतंकी हमले की न्यायिक जांच की मांग करने वाली जनहित याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया है. बता दें कि जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए इस हमले में 26 लोग मारे गए थे। जस्टिस सूर्यकांत और एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने पहलगाम हमले की जांच की निगरानी के लिए रिटायर जज की मांग करने वाले याचिकाकर्ताओं की आलोचना की और कहा कि रिटायर जज एक्स्पर्ट नहीं होते। पीठ ने कहा, "इस महत्वपूर्ण समय में देश के हर नागरिक ने आतंकवाद से लड़ने के लिए हाथ मिलाया है. क्या आप इस तरह की जनहित याचिका दायर करके सुरक्षा बलों का मनोबल गिराना चाहते हैं।इस तरह के मुद्दे को न्यायिक क्षेत्र में न लाएं।" याचिकाकर्ता फतेह कुमार साहू और अन्य को जनहित याचिका वापस लेने के लिए कहा गया। सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ताओं से कहा कि वे इस मुद्दे की संवेदनशीलता को समझें और अदालत में ऐसी कोई अपील न करें, जिससे सुरक्षा बलों का मनोबल गिरे।

पीठ ने याचिकाकर्ताओं में से एक से कहा, "आप रिटायर सुप्रीम कोर्ट के जज से जांच करने के लिए कह रहे हैं. वे जांच के विशेषज्ञ नहीं हैं, बल्कि वे केवल निर्णय दे सकते हैं और किसी मुद्दे पर निर्णय ले सकते हैं. हमें आदेश पारित करने के लिए न कहें। आप जहां जाना चाहते हैं, जाएं. बेहतर होगा कि आप वापस चले जाएं।" जनहित याचिका में केंद्र और जम्मू-कश्मीर प्रशासन को पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का निर्देश देने की मांग

की गई थी। बता दें कि 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने अनंतनाग जिले के पहलगाम के ऊपरी इलाकों में स्थित एक लोकप्रिय पर्यटक स्थल बैसरन में गोलीबारी की, जिसमें 26 लोग मारे गए. मरने वालों में अधिकतर दूसरे राज्यों से आए पर्यटक थे - इस घटना ने भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ा दिया है।

विधायक फूलपुर एवं मण्डलायुक्त ने अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का किया शुभारम्भ

● तीन योजनाओं के अन्तर्गत पंजीकृत कुल 171 निर्माण श्रमिकों के खाते में रू0 1,24,65,000 की धनराशि की गयी वितरित।

अटल आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बच्चों के अभिभावकों को प्रदान किया गया प्रशस्ति-पत्र।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। विधायक फूलपुर ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रमिकों का पंजीयन कराने तथा सभी श्रमिकों से 10 और श्रमिकों को जोड़ने का किया आह्वाहन मण्डलायुक्त ने श्रमिकों के श्रम को किया नमन, कहा देश के विकास में श्रमिकों का अहम योगदान कार्यालय-उप श्रमायुक्त, उ0प्र0 प्रयागराज क्षेत्र प्रयागराज के कैम्पस में गुरूवार को अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस 2025 के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विधायक फूलपुर दीपक पटेल एवं मण्डलायुक्त विजय विश्वास पन्त द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। विधायक फूलपुर एवं मण्डलायुक्त ने अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रमिक पंजीयन कैम्प का उद्घाटन किया। उप श्रमायुक्त प्रयागराज क्षेत्र प्रयागराज द्वारा विधायक जी एवं मण्डलायुक्त को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के मौके पर माननीय विधायक, फूलपुर श्री दीपक पटेल एवं मण्डलायुक्त विजय विश्वास पन्त द्वारा अटल आवासीय विद्यालय में इस शैक्षणिक सत्र में अध्ययनरत बच्चों के अभिभावकों को प्रशस्ति-पत्र तथा कन्या विवाह सहायता योजना के अन्तर्गत पंजीकृत पात्र 101 निर्माण श्रमिकों के खाते में रू0 55,55,000, मातृत्व शिशु एवं बालिका मदद योजना के अन्तर्गत पंजीकृत पात्र 52 निर्माण श्रमिकों के खाते में रू0 28,60,000 तथा मृत्यु एवं दिव्यांगता सहायता योजना के अन्तर्गत पंजीकृत पात्र 18 निर्माण श्रमिकों के बैंक खाते के माध्यम से रू0 40,50,000 की धनराशि वितरित की गयी। इस प्रकार तीन योजनाओं के अन्तर्गत पंजीकृत पात्र कुल 171 निर्माण श्रमिकों के खाते में रू0 1,24,65,000 की धनराशि वितरित की गयी। विधायक फूलपुर दीपक पटेल ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रमिकों एवं अन्य आगुन्तकों का संबोधित करते हुये कहा कि जो वास्तविक मजदूर है, उनके लिये कुछ करने की जरूरत है, इससे बड़ा पुण्य लाभ और कहीं नहीं मिल सकता। आज पूरे विश्व स्तर पर श्रमिक दिवस कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है, इसके पीछे श्रमिकों की मेहनत और उनके लगन को लेकर है। आज के समय में ए0आई0, रोबोट, सड़क बनाने, इमारत बनाने इत्यादि जो काम हो रहे है, वह श्रमिकों के बिना असम्भव है। पूरे उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों में सबसे ज्यादा पंजीकृत श्रमिक जनपद-प्रयागराज में हैं।

विधायक जी द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रमिकों का पंजीयन कराने तथा सभी श्रमिकों को 10 और श्रमिकों को जोड़ने हेतु आवाह्न किया गया। मण्डलायुक्त महोदय द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित सभी श्रमिकों एवं अन्य आगुन्तकों को अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस की बधाई दी गयी। मण्डलायुक्त द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित श्रमिकों एवं अन्य आगन्तुकों को संबोधित करते हुये बताया कया कि श्रमिक दिवस के अवसर पर जिन श्रमिकों के सम्मान में आज यह आयोजन किया गया है एवं हर जगह जिस विकास की बातें हो रही हैं, नये-नये आयाम जोड़ने की बातें हो रही हैं तथा नयी-नयी सड़कें, ऊंची-ऊंची इमारते बन रही हैं, उसमें श्रमिक वर्ग का बहुत ही बड़ा योगदान है। आज यदि कोई सम्मान पाने का हकदार है तो वह है श्रमिक वर्ग। श्रमिकों के श्रम को नमन करते हुये मण्डलायुक्त महोदय द्वारा श्रमिकों के प्रति सद्भावना प्रकट करते हुए उनकी आगे की पीढ़ी को किसी भी तरह की परेशानियाँ तथा कठिनाइयों न आए इसके लिए पूरी तरह से आश्वस्त किया गया। मा0 मुख्यमंत्री जी द्वारा अटल आवासीय योजना के अन्तर्गत वर्तमान में मण्डल स्तर पर विद्यालय का निर्माण कराया गया है। मुख्यमंत्री जी का सपना है कि अटल आवासीय विद्यालय योजना जनपद स्तर, तहसील स्तर एवं ब्लाक स्तर पर भी लागू किए जाने हेतु कटिबद्ध हैं। मण्डलायुक्त महोदय द्वारा अपने संबोधन में श्रमिकों के बच्चों को आश्वस्त किया गया कि अटल आवासीय विद्यालय से पढ़कर निकले हुये बच्चे 10-12 वर्ष बाद अपनी कसौटी पर पूरी तरह से खरे उतरेंगे, जो कि प्रदेश सरकार का सपना है।

उप श्रम आयुक्त द्वारा अपने संबोधन के दौरान श्रमिक दिवस के अवसर पर बताया गया कि यह कार्यक्रम वर्ष 1989 से चला आ रहा है। संगठित एवं असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों के लिये सरकार योजनायें संचालित कर उनके उत्थान हेतु कटिबद्ध है। मातृत्व शिशु हितलाभ एवं बालिका मदद योजना के अन्तर्गत उप श्रमायुक्त द्वारा बताया गया कि जो भी महिला श्रमिक पंजीकृत है, उनके प्रसूति की अवस्था में 03 माह का न्यूनतम वेतन बोर्ड द्वारा उनके बैंक खाते में भेजा जाता है। उप श्रमायुक्त द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित रोटरी क्लब ऑफ इलाहाबाद मिडटाउन के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों का स्वागत किया गया तथा रोटरी क्लब की ओर से कार्यक्रम में उपस्थित श्रमिकों को टी-शर्ट का वितरण किया गया। उप श्रमायुक्त द्वारा अपने सम्बोधन के दौरान बताया गया कि मा0 मुख्यमंत्री जी की फ्लैगशिप योजना '' अटल आवासीय विद्यालय, बेलहट कोरांव प्रयागराज में पंजीकृत निर्माण श्रमिकों के इस शैक्षणिक सत्र में कक्षा-06 में 70 बालक एवं 70 बालिका, कक्षा-09 में 70 बालक एवं 70 बालिकाओं को प्रवेशित कराया गया। उक्त योजना पूर्णतः निःशुल्क है। यह भी बताया गया कि भारत सरकार द्वारा असंगठित क्षेत्र के कामगारों हेतु ई-श्रम पोर्टल विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से असंगठित क्षेत्र के कामगारों को ई-श्रम कार्ड, प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना (पी0एम0एस0वाई0एम0), राष्ट्रीय पेंशन योजना (एन0पी0एस0) से आच्छादित कराया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा उन श्रमिकों को और उनके नियोक्ता/सेवायोजक जिनके मध्य नियोजक एवं नियोजित का सम्बन्ध विद्यमान होता है, पंजीयन की सुविधा प्रदान की गयी है। भारत सरकार द्वारा ई-श्रम पोर्टल पर प्लेटफार्म वर्कर्स/गिग वर्कर्स के पंजीयन हेतु पृथक से मॉड्यूल ऑन बोर्ड विकसित किया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाना है। उप श्रमायुक्त द्वारा यह भी बताया गया कि श्रमिक दिवस के अवसर पर आयोजित कैम्प में 500 से अधिकों श्रमिकों का पंजीयन कराया गया। जनपद-प्रयागराज में सबसे अधिक स्थानों पर कैम्प लगाया गया।

प्रयागराज मण्डल स्तर पर 01 माह से चल रहे विशिष्ट अभियान के तहत विभिन्न लेबर अड्डों, ईंट-भट्ठों, ब्लाकों, तहसीलों में लगभग 100 से अधिक कैम्पों का आयोजन किया गया जिसका समापन अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर किया गया। उप श्रम आयुक्त द्वारा यह भी कहा गया कि श्रम विभाग श्रमिकों के लिये कटिबद्ध है। उक्त कार्यक्रम में गोपाल कान्त मिश्रा प्रधानाचार्य अटल आवासीय विद्यालय, श्रीमती राधा सक्सेना, अध्यक्ष, रोटरी क्लब ऑफ इलाहाबाद मिडटाउन, रोटरी क्लब के अन्य सदस्य, उप श्रमायुक्त प्रयागराज, सहायक श्रमायुक्त, प्रयागराज, श्रम प्रवर्तन अधिकारीगण आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान उप श्रमायुक्त, उ0प्र0 प्रयागराज क्षेत्र प्रयागराज द्वारा विधायक, मण्डलायुक्त, प्रयागराज एवं सभी श्रमिकगण, श्रमिक प्रतिनिधिगण तथा अटल आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के अभिभावकों का आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में कार्यालय के सभी श्रम प्रवर्तन अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

यूपी में कोर्ट ने पूर्व एमएलए, दो पूर्व ब्लॉक प्रमुख समेत पांच लोगों को भेजा जेल

स्वतंत्र प्रभात

एमपी – एमएलए कोर्ट ने बस्ती के रुधौली से पूर्व विधायक संजय जायसवाल और दो पूर्व ब्लाक प्रमुख समेत पांच लोगों को जेल भेज दिया है। इन्हें निचले कोर्ट से वर्ष 2003 में एमएलसी चुनाव के दौरान मतगणना कक्ष में घुसकर मारपीट करने व मतपत्र लूटने के मामले में तीन-तीन वर्ष की सजा मिली है। इस सजा के खिलाफ अपील को अपर कोर्ट ने खारिज किया और उनकी जमानत अर्जी को निरस्त कर जेल भेज दिया।

वर्ष 2003 में बस्ती-सिद्धार्थनगर स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र का एमएलसी चुनाव था। इस चुनाव की बस्ती सदर तहसील सभागार में गणना तीन दिसंबर 2003 को हुई। मतगणना में 124 वोटों से भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल के जीतने की घोषणा हुई। आरोप था कि इसी दौरान सपा प्रत्याशी कंचना सिंह, उनके पति आदित्य विक्रम सिंह, मो. इरफान, बृजभूषण सिंह, त्रयंबक पाठक, अशोक सिंह, संजय जायसवाल और महेश सिंह अपने दर्जनों समर्थकों के साथ मतगणना स्थल पर आए और ड्यूटी पर तैनात सीओ को धक्का देकर मतगणना कक्ष में घुस गए। और कक्ष में बवाल मचाते हुए कई मतपत्र भी उठा ले गए। इस मामले में आरओ की ओर से कोतवाली पुलिस ने पांच आईपीसी, 7 सीएलए व लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम में आठ नामजद सहित 50 अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज किया था। मुकदमे में कुल 10 गवाह बनाए गए। गवाही और चार्जशीट के आधार पर एसीजेएम द्वितीय की अदालत ने तीन-तीन वर्ष के कारावास व दो-दो हजार रुपये अर्थदंड की सजा दी थी।

लोवर कोर्ट की सजा के खिलाफ कंचना सिंह ने 20 मई 2023 को ADJ/MP, MLA कोर्ट में अपील की। 29 अप्रैल 2025 को कोर्ट ने अपील खारिज कर दी। सभी आठ आरोपियों में से कंचना सिंह और बृजभूषण सिंह की मौत हो चुकी है। एक आरोपी पूर्व विधायक आदित्य विक्रम सिंह बीमार चल रहे हैं। पांच आरोपी पूर्व विधायक संजय जायसवाल, पूर्व प्रमुख त्रयंबक पाठक, पूर्व प्रमुख महेश सिंह, अशोक कुमार सिंह व मो. इरफान की जमानत याचिका खारिज करते हुए कोर्ट ने जेल भेज दिया। मंगलवार शाम सभी को जिला कारागार में निरुद्ध करा दिया गया।

मानसिक श्रम और शारीरिक श्रम ही किसी संस्था के विकास की होती है आधारशिला- पंकज पांडे

● इफको कर्मचारी यूनियन ने मनाया श्रम दिवस समारोह।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। इफको कर्मचारी यूनियन ने आज अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस पर एक भव्य समारोह का आयोजन किया जिसमें एक अवकाश प्राप्त कर्मचारी अमरनाथ यादव को सम्मानित करते हुए उनके कार्य कुशलता की प्रशंसा करते हुए उनका अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष पंकज पाण्डे ने कहा कि किसी भी संस्था के विकाश की आधार शिला श्रम पर ही आधारित होती है।जिसमे मानसिक और शारीरिक श्रम दोनों का महत्व होता है।मानसिक श्रम करने वाले प्रबंधन की श्रेणी में आते है जब की शारीरिक श्रम करने वाले श्रमिक होते हैं। जब यह दोनों श्रम एकजुट होकर काम करते है तभी किसी संस्था का विकाससंभव।

इफको में श्रम करने वाले मजदूर का इफको के विकास में उतना ही महत्वपूर्ण योगदान है जितना मान सिक करने वाले प्रबंधन का। उन्होंने इस अवसर पर सभी श्रमिकों का अभिनंदन करते हुए बधाई दी और उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर महामंत्री विजय कुमार यादव ने घोषणा की कि

श्रम दिवस पर यूनियन के प्रयास से सभी मजदूर और कर्मचारी को 250 ग्राम लड्डू का वितरण करने की व्यवस्था की गई है। अवसर पर कर्मचारी संघक के सभी कार्यकारिणी के सदस्य और पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुखईपुर में भगवान परशुराम जन्मोत्सव श्रद्धा और उल्लास के साथ सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

सुखईपुर (अम्बेडकर नगर) भगवान विष्णु के छठे अवतार, धर्म और न्याय के प्रतीक भगवान परशुराम जी का जन्मोत्सव ग्राम सुखईपुर में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ग्रामवासियों के सहयोग से विविध धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान परशुराम जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई, जिसके बाद उनके जीवन, आदर्शों और समाज के प्रति उनके योगदान पर विस्तृत चर्चा की गई। आयोजन में प्रेमनारायण शुक्ल, पीयूष शुक्ल, प्रद्युम्न

शुक्ल, सरस, अमन, इशु, विनायक, रितेश, शिवा सहित समस्त ग्रामवासियों की सक्रिय सहभागिता रही। समारोह के दौरान भजन-कीर्तन, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ एवं प्रसाद वितरण भी किया गया। ग्रामीणों ने इस आयोजन को एकजुट होकर सफल

बनाया और भगवान परशुराम के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया। इस तरह का आयोजन न केवल धार्मिक आस्था को सुदृढ़ करता है, बल्कि सामाजिक एकता और सांस्कृतिक विरासत को भी सशक्त करता है।

सिंचाई, विद्युत कटौती, पेयजल, जल निगम की समस्या को लेकर सकिपा का प्रदर्शन कर एडीएम को सौंपा ज्ञापन

ब्लॉक स्तर पर सरसों क्रय केन्द्र खोला जाए... अजय सोनी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में गुरुवार एक मई को पार्टी के जिला कार्यालय मंझनपुर में मासिक बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता पार्टी नेता अजय सोनी ने की। बैठक में सूखी नहरों में जलापूर्ति न होने, लगातार विद्युत कटौती होने, निर्माणाधीन जल निगम टंकियों के निर्माण में शिथिलता एवं सूखे तालाबों में पानी नहीं भराए जाने जैसे मुद्दे छाए रहे। इसके बाद पार्टी नेता अजय सोनी की अगुवाई में पार्टी कार्यकर्ताओं ने जनसमस्याओं को लेकर जिलाधिकारी कार्यालय पर प्रदर्शन किया और नारेबाजी की। साथ ही एक पांच सूत्रीय मांगपत्र अपर जिला अधिकारी अरुण कुमार गौड़ को सौंपा। सौंपे गए मांगपत्र में जिले भर में निर्माणाधीन जल निगम टंकियों के निर्माण जल्द पूर्ण कराकर जलापूर्ति शुरू कराने, अघोषित विद्युत कटौती बंद कर रोस्टर से 18 घंटे विद्युत आपूर्ति करने, सूखे तालाबों में पानी भरवाने, जिले की सभी सूखी नहरों एवं रजबहों में टेल तक जलापूर्ति करने, ब्लॉक स्तर पर सरसों क्रय केंद्र खोले जाने जैसी मांगे शामिल थी। इस अवसर पर अजय सोनी ने कहा कि ब्लॉक स्तर पर सरसों क्रय केन्द्र खोला जाए ताकि किसानो को सरसों का उचित मूल्य प्राप्त हो सके। ज्ञापन स्वीकार करते हुए अपर जिलाधिकारी अरुण कुमार गोंड ने सभी समस्ययायों के समुचित समाधान कराये जाने की बात कही है। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष मुन्ना लाल तिवारी, जिला कोषाध्यक्ष सुरेश सिंह पटेल, जिला सचिव मणि शंकर पाण्डेय, युवा जिलाध्यक्ष वेद प्रकाश यादव, सुरजीत वर्मा, जिला सचिव भैरवदीन,जिला सचिव जुम्मन अली, अखिलेश विश्वकर्मा, राजेश गौतम, अयोध्या प्रसाद आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

डीवीसी की ओर से वॉलीबॉल का आयोजन किया गया

लातेहार, झारखंड- अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर डीवीसी तूबेद कोयला खान कैंप कार्यालय में एक वॉलीबॉल मैच का आयोजन किया गया। यह मित्रवत मैच डीवीसी तूबेद और एमडीओ के बीच खेला गया। मैच का उदघाटन डीवीसी तूबेद कोयला खान के उप महाप्रबंधक (खनन) मनीष कुमार और दीपक कुमार द्वारा किया गया। इस रोमाचक मुकाबले में एमडीओ की टीम विजेता रही। खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने के लिए डीवीसी तथा एमडीओ के अनेक अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे। उप महाप्रबंधक (खनन) मनीष कुमार ने बताया कि मैच का उदेश्य कर्मचारीयों और संस्था के मध्य आपसी संबंधो को सुदृढ करना है। उपस्थित सभी लोगो ने मैच का आनंद लिया।

मजदूर दिवस के अवसर पर सफाई कर्मियों को किया सम्मानित

लातेहार, झारखंड- मजदूर दिवस के अवसर पर नगर पंचायत लातेहार द्वारा सफाई कर्मियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दौरान नगर प्रशासक राजीव रंजन ने सफाई कर्मियों को प्रशस्ति पत्र एवं शॉल देकर उनका सम्मानित किया और उनके निरंतर सेवा भावना की सराहना की.उन्होंने कहा कि सफाई कर्मी शहर को स्वच्छ और स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाते हैं, जिनके योगदान को कमतर नहीं आंका जा सकता है. प्रशासक ने कहा कि सफाई कर्मियों की मेहनत और लगन ही स्वच्छता अभियान की रीढ़ है.उन्होंने सभी सफाईकर्मियों को मजदूर दिवस की शुभकामनाएं दी और आगे भी ईमानदारी से कार्य करने की अपील की. सम्मान समारोह के अंत में सभी सफाई कर्मियों ने नगर पंचायत के इस पहल की सराहना की और अपने कार्य के प्रति और अधिक निष्ठावान रहने का संकल्प लिया.उक्त कार्यक्रम में नगर प्रबंधक राजकुमार वर्मा समेत सेनेटरी सुपरवाइजर, एवं रेवेन्यू इंस्पेक्टर आदि मौजूद थे.

टांगराईन उत्क्रमित विद्यालय में समर डे का किया गया आयोजन

पोटका, झारखंड- पोटका प्रखण्ड अंतर्गत उत्क्रमित विद्यालय, टांगराईन में शिवम् शिल्प कला की ओर से बच्चों के बीच समर डे का आयोजन किया गया।इस अवसर पर व्यक्तित्व विकास एवं चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जोकि बिट द हिट थीम के आधार पर किया गया। संस्था की ओर से विद्यालय के बच्चों के बीच व्यक्तित्व विकास हेतु सेशन लिए गए ।आयोजन जिसमे बच्चों में उनकी सोच के अनुसार टॉपिक चुनकर ड्राइंग प्रतियोगिता , स्थानीय गानों, नृत्य और कई तरह के मनोरंजक खेलों का आयोजन किया गया। संस्था की ओर से दिल्ली से आई ग्रूमिंग एक्सपर्ट पल्लवी सिंह और पटना से आर्किटेक्ट स्निग्धा साक्षी ने इन विशेष कार्यक्रम को संचालित किया। संस्था की अध्यक्ष मधु सिंह ने गर्मी से राहत हेतु बच्चों के बीच छाते, शीतल पेय और अन्य खाद्य सामग्रियों का वितरण सभी सदस्यों और विद्यालय के प्राचार्य के साथ किया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक अरविंद तिवारी ने ममता सिंह, चमन गिल, ख्वाइश एवं संस्था के सभी सदस्यों को सहृदय धन्यवाद दिया।

छात्र-छात्राओं को अंक पत्र किया गया वितरण और मेडल देकर किया गया सम्मानित

मनकापुर गोण्डा- गरीब नवाज इंटर कॉलेज खुरहसा में छात्र-छात्राओं को अंक पत्र वितरित किया गया साथ ही में कॉलेज में उच्च प्रदर्शन करने वाले छात्राओं को मेडल व अन्य पुरस्कारों से डायरेक्टर अशवद हुसैन(लकी) द्वारा सम्मानित किया पुरस्कार पाकर छात्र छात्रायें खुशी से झूम उठे अस्वद हुसेन ने छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की उन्होंने कहा कि हमारी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आप सब सदैव आगे बढ़ते रहें और इससे भी बड़े पुरस्कारों से आप सब सदैव सम्मानित होते रहे और गरीब नवाज इंटर कॉलेज का और साथ साथ में अपने माता-पिता का भी नाम आप सब सदैव रोशन करते रहे इस अवसर पर प्रधानाचार्य प्रभंजन सिंह परीक्षा पदाधिकारी शादाब अहमद नफीस खान मयंकर शुक्ला और विद्यालय के समस्त अध्यापक अध्यापिकाएं और भारी संख्या में अभिभावक गण उपस्थित रहे।

हुसैनाबाद में 'बत्ती गुल' कर वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ जताया गया विरोध

स्वतंत्र प्रभात

हुसैनाबाद/पलामू/झारखंड- ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के आह्वान पर बुधवार रात हुसैनाबाद अनुमंडलीय क्षेत्र सहित आसपास के गांवों में वक्फ संशोधन कानून 2025 के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध दर्ज किया गया। रात 9:00 बजे से 9:15 बजे तक लोगों ने अपने घरों, मस्जिदों और धार्मिक स्थलों की बत्तियाँ बुझा कर मौन प्रतिरोध जताया। इस अभियान के तहत हुसैनाबाद शहर के पठान टोली, इस्लाम गंज, चिक टोली मोहल्ला, रमज़ान बिगहा, जपला चौबे, मोहम्मदाबाद, हैदरनगर भाई बिगहा, मुंहुडर, फातमा चक बेनी खुर्द, ऊपरी कला, देवरी कला, मिस्त्री लाइन, सबनवा, गमहरिया, कठोंधा और मेहदी नगर सहित कई गांवों और मोहल्लों में सामूहिक रूप से बत्तियाँ बुझाई गईं। इसी कड़ी में हुसैनाबाद मदरसा ख़ैरुल इस्लाम, वक्फ वासला बेगम, सदर इमामबाड़ा और विभिन्न मस्जिदों में भी बिजली बंद कर प्रतीकात्मक विरोध किया गया। विशेष रूप से लंबी गली स्थित शेख मुजाहिद हुसैनाबादी के आवास पर भी लाइटें बंद कर विरोध दर्ज कराया गया। गौरतलब है कि 21 अप्रैल को उनके आवासीय परिसर स्थित इमली के पेड़ के पास से एक मौन जुलूस का आगाज भी किया गया था, जिसके बाद राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन अनुमंडल पदाधिकारी गौरांग महतो को सौंपा गया था। ज्ञापन में वक्फ संशोधन कानून को वापस लेने की मांग की गई थी।

इस बत्ती गुल आंदोलन के साक्षियों में गुलाम मोहम्मद अमीन अली खान, शाकिर अली, अब्बास अंसारी, पूर्व मुतवल्ली हसनैन जैदी, वर्तमान मुतवल्ली तक़ी रिज़वी, हाशिम अली, जुबैर अंसारी, इम्तियाज़ आलम, टीपू सुल्तान, रहमान राइन, मोबीन अहमद, हाफिज गुलाम पीर, हाफिज उमैर साहब, जफर अहमद, अरशद हुसैन, जफीर आलम, सगीर खान सहित कई सामाजिक कार्यकर्ताओं और छुस्स्र्के वरिष्ठ नेता एजाज हुसैन, नसीम खान, मन्नान खान, शकील अहमद, तौकीर सिद्दीकी, गयासुद्दीन सिद्दीकी, मसरूर अहमद ने सक्रिय भूमिका निभाई।

सोशल मीडिया पर भी छाया विरोध का रंग

विरोध प्रदर्शन सिर्फ जमीन पर ही सीमित नहीं रहा। लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में 'बत्ती गुल' करते हुए वीडियो बनाए और उसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर साझा किया, जिससे आंदोलन को व्यापक जनसमर्थन मिला। कई जगहों के वीडियो तेजी से वायरल हुए, जिसमें सामूहिक रूप से बत्तियाँ बुझाने और शांतिपूर्वक विरोध दर्ज कराने के दृश्य सामने आए। सोशल मीडिया पर लोगों ने वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ अपनी नाराजगी जताते हुए एकजुटता का प्रदर्शन किया।

15 मिनट की खामोशी ने दी गहरी आवाज

इस शांतिपूर्ण विरोध ने साबित कर दिया कि जब सवाल अधिकारों का हो, तो खामोशी भी सबसे प्रबल आवाज बन जाती है। हुसैनाबाद सहित पूरे क्षेत्र में यह संदेश गूंजता रहा कि वक्फ संपत्तियों से जुड़ी संवेदनशीलता को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

बेल पर रिहा हुए आजसू जिला अध्यक्ष आदर्श लक्ष्य, कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

देवघर, झारखंड- आजसू पार्टी देवघर जिला अध्यक्ष आदर्श लक्ष्य की जेल से बेल पर रिहाई के बाद पार्टी कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया। रिहाई के तुरंत बाद बड़ी संख्या में समर्थक और कार्यकर्ता उनके आवास पहुंचे और फूलमालाओं से उनका अभिवादन किया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष आदर्श लक्ष्य ने कहा कि वह गरीब, शोषित, पीड़ित, वंचित, विस्थापित, किसान, मध्यम वर्गीय परिवारों और मजदूरों के हक की लड़ाई को पहले से भी अधिक मजबूती से जारी रखेंगे। उन्होंने घोषणा की कि अब हर दिन उनके आवासीय कार्यालय में जनता दरबार लगाया जाएगा, जहां आम लोग निःसंकोच अपनी समस्याएं रख सकेंगे। श्री लक्ष्य ने यह भी बताया कि किसी भी आपदा या जरूरत के समय आमजन की मदद के लिए एक टोल-फ्री नंबर जल्द जारी किया जाएगा, जिससे लोग किसी भी समय—यहां तक कि रात 12 बजे भी—संपर्क कर सहायता प्राप्त कर सकेंगे। इस अवसर पर जिला वरीय उपाध्यक्ष मुरारी प्रसाद केसरी, केंद्रीय समिति सदस्य अशोक सिंह, जिला सचिव रविकांत झा एवं अविनाश कुमार यादव, जिला प्रधान सह सचिव आनंद तुरी, गौतम राय, गुरुदेव दास, संजय सिन्हा समेत कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

राजद शासन काल मे लूटा गया सरकारी खजाना- प्रमोद कुमार पटेल प्रदेश महासचिव

● "कहाँ - महिला संवाद से राजद को चिढ़ क्यों "

स्वतंत्र प्रभात

गोपालगंज (बिहार)- जद(यू0) के प्रदेश महासचिव सह सिवान जिला संगठन प्रभारी प्रमोद कुमार पटेल ने बुधवार को अपने आवासीय कार्यालय पर कहाँ की राष्ट्रीय जनता दल की महिलाओ के प्रति सोच हमेशा नकारात्मक रही हैं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव द्वारा महिला संवाद कार्यक्रम पर की गई अनर्गल टिप्पणी उनकी संकिंण मानसिकता का स्पष्ट प्रमाण है पटेल ने कहाँ की लालू परिवार पर भ्रष्टाचार और अवैध सम्पति अर्जित करने का गंभीर आरोप लगे, जो न्यायालय मे सिद्ध भी हुए ऐसे मे अब वही लोग महिला संवाद जैसे जागरूकता और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों को सरकारी धन का दुरूपयोग ठहराने का गलत प्रयास करते हैं, तो यह राजनीतिक दुर्भावना से ग्रसित स्पष्ट प्रतीत होता हैं प्रदेश महासचिव ने कहाँ की नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव को नीतीश सरकार पर बेबुनियाद सवाल उठाने से पहले अपने माता -पिता के शासनकाल का राजनीतिक इतिहास अवश्य याद करना चाहिए, ज़ब प्रदेश की महिलाएं स्वयं को असुरक्षित महसूस करती थी -और शासन व्यवस्था लूट, हत्या,भ्र्ष्टाचार, और आराजकता से ग्रस्त थी श्री पटेल ने यह भी कहाँ की महिलाओं के प्रति लालू परिवार का बिरोधाभाषि दृष्टीकोण सुरु से जगजाहिर हैं उन्हों ने बताया की नीतीश सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र मे किये गये प्रयासों से राजद के नेताओं मे चिढ़न होना स्वाभाविक है, क्योंकि यह उनकी परम्परागत राजनीति और विचारधारा से मेल नहीं खाता है द्य प्रदेश महासचिव सह पूर्व जिला अध्यक्ष ने यह भी स्पष्ट किया की महिला संवाद कार्यक्रम के जरिये गाँव -गाँव मे महिलाओं को सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही हैं, और उनकी समस्याओं पर नीतीश सरकार नितिगत स्तर पर प्रभावी कार्यवाई की जा रही हैं यह कार्यक्रम महिलाओं को जागरूक करने और सरकार और शासन -प्रशासन से सिधे संवाद का एक सशक्त खुला मंच प्रदान कर रहा है द्य प्रदेश महासचिव ने कहाँ की बिहार मे नीतीश कुमार की सरकार ने महिलाओं को सभी क्षेत्रों मे 50त्नआरक्षण मजबूत ही नहीं किया बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और स्वाभिमान के साथ पुरुषो के बराबर जीने का अधिकार दिया है जो पुरे देश मे एक मिशाल है बिहार श्री पटेल ने कहाँ की विधानसभा चुनाव 2025 मे एन डी ए की सरकार फिर से नीतीश कुमार के नेतृत्व मे बनेगी और 225 से ज्यादा सीटों पर जीत दर्ज होंगी ।

समस्तीपुर में भीषण अग्निकांड !

● घर में सोए पति-पत्नी की जलकर मौत, परिजनों ने लगाया हत्या का आरोप

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर- समस्तीपुर में भीषण हादसा हुआ है। जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के जितवारपुर हकीमाबाद गांव में बुधवार की देर रात एक घर में अचानक आग लग गई। इस आग में एक दंपति जिंदा जल गए, जिससे दोनों की दर्दनाक मौत हो गयी। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शवों का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है और घटना की जांच में जुटी है। मिली जानकारी के अनुसार हकीमाबाद पंचायत के रहने वाले लखन सहनी (उम्र 70 साल) और उनकी पत्नी पुर्णी देवी (उम्र 65) रात में सो रहे थे, तभी अचानक रात के करीब दो बजे उनके घर से आग लग गयी। आग लगने की सूचना मिलते ही परिवार और आसपास के लोग जुटे और काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन आग ने चंद मिनटों में विकराल रूप धारण कर लिया और इस भयानक आग में पति-पत्नी जिंदा जल गए. जिससे दोनों की घर में ही दर्दनाक मौत हो गई। इस हादसे में घर का पूरा समान भी जलकर राख हो गया है।

मृतक के पुत्र तेजू सहनी ने बताया कि पिताजी राज मिस्त्री का काम करते थे। हमलोग दूसरे घर में थे। पिताजी और मां सड़क किनारे वाले घर में सो रहे थे। देर रात करीब 1:40 बजे ग्रामीणों के शोर मचाने पर मेरी नींद खुली। हमलोगों ने आग बुझाने की काफी कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। फायर ब्रिगेड की टीम आई तब आग काबू पाया। तब तक काफी देर हो चुकी थी। इस आग में मां और पिताजी की झुलसने से मौत हो चुकी थी। उसने बताया कि हमारी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि किसी ने साजिश के तहत आग लगाई है। आग बुझने के बाद हमलोग अंदर गए तो देखा कि पिताजी के हाथ में खंती था। शायद दरवाजा तोड़कर बाहर निकलने की कोशिश कर रहे होंगे।

इस संबंध में पंचायत के मुखिया सुनील कुमार शोले ने बताया कि आग लगने की सूचना मिलते ही अपने सहयोगियों के साथ मौके पर पहुंचेऔर ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाने का प्रयास किया, लेकिन काफी तेजी से बढ़ रही थी। फिर सुचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने आग पर काबू पाया। अभी तक आग लगने का कारण पता नहीं चला है। वहीं, एएसपी संजय पांडे ने बताया कि पुलिस टीम को मौके पर भेजा गया है। अपने स्तर से सभी बिंदुओं पर छानबीन कर रहे हैं। परिजन साजिश के तहत हत्या का आरोप लगा रहे हैं। अगर कहीं से भी इसमें हत्या की आशंका बनती है, तो जांच के बाद उचित कार्रवाई करेंगे। फिलहाल सभी बिदुओं पर छानबीन की जा रही है।

विधायक सुरेश पासी ने फीता काटकर किया आइसक्रीम फैक्ट्री का उद्घाटन

● भाजपा जिला उपाध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष सहित क्षेत्रीय उद्योगपति एवं संभ्रांत जन रहे मौजूद

स्वतंत्र प्रभात

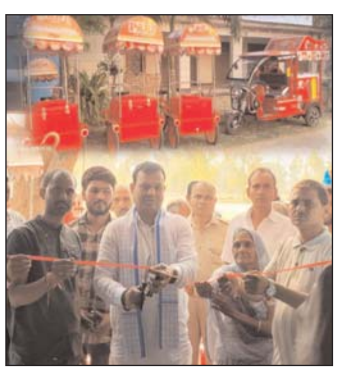

शुकुल बाजार अमेठी। परी आइसक्रीम फैक्ट्री का जैनबगंज कस्बे में भाजपा विधायक सुरेश पासी एवं फैक्ट्री संचालक बद्रीनाथ मिश्रा की माता जी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर उद्घाटन किया। सबसे पहले वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधि - विधान पूर्वक प्रकांड विद्वान द्वारा पूजन अर्चन किया गया तदोपरांत सुंदरकांड का पाठ हुआ हवन पूजन के पश्चात फैक्ट्री का उद्घाटन हुआ।क्षेत्र का सर्वांगीण विकास करने वाले तथा जनता के सुख-दुख में भागीदार रहने वाले विधायक सुरेश पासी ने कहा कि जनता की समस्याओं का समाधान करना, विधानसभा का सर्वांगीण विकास करना प्रथम प्राथमिकता है जगदीशपुर विधानसभा विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि इस आइसक्रीम फैक्ट्री के उद्घाटन से क्षेत्र के लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलेंगे, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आइसक्रीम फैक्ट्री के उद्घाटन से क्षेत्र के विकास में भी योगदान होगा, जिससे क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आइसक्रीम फैक्ट्री के उद्घाटन से स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा उन्होंने कहा हमारी सरकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार युवाओं को रोजगार मुहैया करा रही है, जहां रोजगार के नए-नए अवसर प्रदान कर रही है वहीं सरकारी नौकरियों में भर्ती के माध्यम से रोजगार मुहैया करा रही है तथा युवाओं को लघु उद्योग एवं भारी उद्योग के माध्यम से भी रोजगार मुहैया कराते हुए युवाओं को निखारने, संवारने का कार्य कर रही है। इस दौरान प्रमुख रूप से भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला, मंडल अध्यक्ष शुकुल बाजार शंकर बक्स सिंह, सोशल मीडिया जिला संयोजक प्रशांत शुक्ला, उद्योगपति मानवेंद्र विजय सिंह, पूर्व प्रमुख प्रत्याशी भूपेंद्र विक्रम सिंह, अरूणा शंकर शुक्ला, अशोक शुक्ला, सचिन तिवारी, सतीश दास जी महाराज, हरकेश मौर्य सहित क्षेत्र के सैकड़ो संभ्रांत जन व पत्रकार बंधु मौजूद रहे।

डीएम जनता दरबार में आये फरियादी आशा देवी को एक हफ्ते के अन्दर मिला राशन कार्ड

●आवेदिका आशा देवी ने जिला प्रशासन का जताया आभार

स्वतंत्र प्रभात

गोपालगंज (बिहार)- जिला पदाधिकारी का जनता दरबार राशन कार्ड से वंचित योग्य फरियादी को आठ दिनों के भीतर नया राशन कार्ड मिलने से खुशियों की सौगात लेकर आया है। उल्लेखनीय है कि 8 अप्रैल को प्रत्येक शुक्रवार की भांति डीएम के जनता दरबार में श्री मति आशा देवी ने बताया कि उन्होंने राशन कार्ड बनवाने के लिए आवेदन दिया है लेकिन सभी योग्यताओं के बावजूद राशन कार्ड निर्गत नहीं होने के कारण उन्होंने डीएम जनता दरबार में परिवाद दायर किया प्रकरण डीएम के संज्ञान में आया और वाद संख्या ष्घ्ष्ठ 605 पर जिला पदाधिकारी द्वारा तत्काल संबंधित विभाग को आवेदिका का राशन कार्ड निर्गत करने का निर्देश दिया गया जिला पदाधिकारी के निर्देश पर अविलंब जिला आपूर्ति पदाधिकारी, गोपालगंज द्वारा परिवादी से समन्वय स्थापित कर त्वरित कार्रवाई करते हुए फरियादी आशा देवी को आठ दिनों के अंदर 16 अप्रैल को राशन कार्ड निर्गत कर उपलब्ध करा दिया गया

गौरतलब है कि श्रीमती आशा देवी पति सनोज राम ग्राम तेरुआ पोस्ट फैजुलाहपुर प्रखंड बैकुंठपुर ने जिलापदाधिकारी के जनता दरबार में अपनी समस्या बताई और मदद की गुहार लगाई। जिला पदाधिकारी ने प्रकरण को गंभीरता पूर्वक लिया और उनके पहल पर हुई मदद के लिए लाभुक आशा देवी ने आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे बड़ी उम्मीद के साथ जनता दरबार में आई थीं जिला पदाधिकारी ने उनकी हर संभव मदद की जिला पदाधिकारी प्रशांत कुमार सी एच ने कहा कि जनता दरबार सरकार की प्राथमिकता का विषय है माननीय मुख्यमंत्री का निर्देश है कि जनता दरबार में आने वाले लोगों को त्वरित राहत पहुँचाई जाए।

अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रमिक सम्मान समारोह कार्यक्रम का किया गया आयोजन

●श्रमिकों के कल्याणार्थ संचालित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को दी गई सहायता राशि तथा प्रमाण पत्र

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी। अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट सभागार में श्रम विभाग द्वारा श्रमिक सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिलाधिकारी संजय चौहान ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अर्पित गुप्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने श्रमिकों के कल्याणार्थ संचालित विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को सहायता राशि तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सहायक श्रमायुक्त गोविंद यादव ने बताया कि उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अंतर्गत भवन एवं अन्य निर्माण कार्य में 12 माह में 90 दिन कार्य करने वाले श्रमिकों का रुपए 80 जमा करके 3 वर्ष हेतु पंजीयन होता है जनपद अमेठी में कुल 122178 पंजीकृत श्रमिक है, वित्तीय वर्ष 2024-25 में विभिन्न योजनाओं जैसे मातृत्व शिशु एवं बालिका मदद योजना, कन्या विवाह सहायता योजना, संत रविदास शिक्षा प्रोत्साहन योजना, निर्माण कामगार मृत्यु एवं दिव्यांता सहायता योजना, अटल आवासीय विद्यालय योजना, गंभीर बीमारी सहायता योजना, महात्मा गांधी पेंशन योजना के 303 लाभार्थियों को लाभान्वित किया गया है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिए ई-श्रम पोर्टल बनाया गया है जिसमें उनका पंजीयन होता है जनपद में

ई-श्रम पोर्टल पर 840110 कामगार पंजीकृत हैं, प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना के अंतर्गत 18 से 40 आयु वर्ग के असंगठित कामगारों द्वारा प्रतिमाह रुपए 55 से 200 निरंतर 60 वर्ष की आयु तक जमा करके 60 वर्ष की आयु होने के उपरांत रुपए 3000 मासिक पेंशन प्राप्त होगी इस योजना के तहत जनपद में 6624 लाभार्थी हैं, उत्तर प्रदेश भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के अंतर्गत पंजीकृत श्रमिकों के बच्चों के लिए अयोध्या मंडल में रुदौली में अटल आवासीय विद्यालय की स्थापना की गई है वर्ष 2025 में अटल आवासीय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में मेरिट के आधार पर जनपद अमेठी के 37 बच्चों का चयन हुआ है। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने सभी श्रमिक बंधुओं को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं दी तथा उनको संबोधित करते हुए कहा कि शासन द्वारा आप लोगों के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं संचालित की गई हैं उन योजनाओं का आप लोग लाभ ले। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्रमिकों के कल्याणार्थ संचालित सभी योजनाओं की जानकारी श्रमिक बंधुओं तक पहुंचाई जाए साथ ही निर्माण कार्य में लगे सभी श्रमिक बंधुओं का श्रम विभाग में पंजीकरण अनिवार्य रूप से कराया जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में जितनी भी निर्माण इकाई हैं उनमें कार्य कर रहे सभी श्रमिकों का पंजीकरण अनिवार्य रूप से कराया जाए। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी वीरभानु सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी व श्रमिक बंधु उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने जनसुनवाई के दौरान जनपद के दूर-दराज क्षेत्र से आए हुए शिकायतकर्ताओं की सुनी समस्याएं

●अधिकारी शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण सुनिश्चित कराएं - जिलाधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

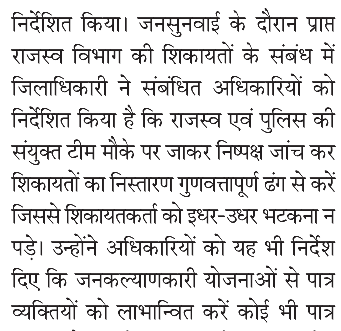

अमेठी। जिलाधिकारी संजय चौहान ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई के दौरान जनपद के दूर-दराज क्षेत्र से आए हुए शिकायतकर्ताओं की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना एवं प्राप्त शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। आज जनसुनवाई के दौरान जिलाधिकारी के समक्ष कुल 13 शिकायतकर्ताओं ने अपनी शिकायत दर्ज कराई जिसमें 07 राजस्व विभाग, 02 पुलिस विभाग, 01 आवास, 01 पूर्ति विभाग तथा 02 चकबंदी विभाग की शिकायत प्राप्त हुई जिनके गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। जनसुनवाई के दौरान प्राप्त राजस्व विभाग की शिकायतों के संबंध में जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निष्पक्ष जांच कर शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण ढंग से करें जिससे शिकायतकर्ता को इधर-उधर भटकना न पड़े। उन्होंने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि जनकल्याणकारी योजनाओं से पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करें कोई भी पात्र व्यक्ति योजना से वंचित न रहे इसका विशेष ध्यान दें।

संक्षिप्त खबरें

मोहिऊदीनपुर गांव के पंचायत भवन में हुई चोरी

जौनपुर धर्मापुर। जफराबाद थाना क्षेत्र के मोहिउद्दीनपुर गांव के पंचायत भवन को बीती रात में चोरों ने निशाना बनाया। सुबह चोरी की जानकारी होने पर मौके पर पहुची पुलिस ने जांच पड़ताल किया। बता दें कि जफराबाद थाना क्षेत्र के मोहिऊदीनपुर गांव के प्राथमिक विद्यालय कैंपस में पंचायत भवन बना हुआ है। गुरुवार को सुबह सात बजे जब विद्यालय के शिक्षक पहुचे तो देखा पंचायत भवन के कमरे का ताला तोड़कर चोरी हुई है। प्रधानाध्यापक कृष्ण कांत मधुकर ने ग्राम प्रधान अनिल यादव फौजी को सूचना दिया। ग्राम प्रधान ने मौके पर आकर डायल 112 और थाने पर सूचना दिया। चोरी की सूचना पर मौके पर डायल 112 की पुलिस और थाने के उप निरीक्षक संजय कुमार फोर्स के साथ पहुच गए। पुलिस ने काफी देर तक जांच पड़ताल किया। पंचायत भवन में लगे सोलर इन्वर्टर की दो बैटरी, छत पर लगे दो पंखे, 1 राउंडिंग चेयर, 12 फाइबर की कुर्सी को चोरों द्वारा चुरा लिया गया है। ग्राम प्रधान अनिल यादव फौजी ने पंचायत भवन में हुई चोरी की तहरीर भी पुलिस को दे दिया है।

पुरानी रंजिश को लेकर युवक को पीटा, मुकदमा दर्ज

जौनपुर सिरकोनी। जफराबाद थाना क्षेत्र के मोथहां गांव में एक युवक को दूसरे युवक ने पुरानी रंजिशंन पीट दिया। युवक की तहरीर पर थाना पुलिस से केस दर्ज कर लिया है। मोथहां गांव निवासी अभिषेक पुत्र बगेदू निषाद ने जफराबाद थाने पर दी हुई तहरीर में आरोप लगाया है कि उनका गांव के सचिन से पुराना विवाद है जिसे लेकर मंगलवार की देर रात्रि सचिन ने उन्हे मारा पीटा और जान से मारने की धमकी भी दिया। प्रभारी निरीक्षक जयप्रकाश यादव ने बताया कि तहरीर के आधार पर केस को दर्ज कर लिया गया है।

बी.ई.ओ ने सर्वाधिक उपस्थिति वाले बच्चों को किया पुरस्कृत

जौनपुर सिरकोनी। खण्ड शिक्षा अधिकारी अमरेश कुमार सिंह ने ब्लाक के पूर्व माध्यमिक विद्यालय खलीलपुर में निरीक्षण किया तथा उपस्थिति रजिस्टर को भी देखा। अप्रैल माह में सर्वाधिक उपस्थित में कक्षा 6 के अंश गौतम, 7 की छात्रा गरिमा गौतम व श्रेया यादव, तथा कक्षा 8 के आदर्श गौतम को पुरस्कृत भी किया। इस अवसर पर प्रधानाध्यापक पंकज सिंह ,मीना श्रीवास्तव, अनुपमा, माधूरी आदि रहीं।

सर्पदंश से किशोर की हालत बिगड़ी

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के बहरामपुर गांव के निकट बुधवार की देर रात को निमंत्रण से वापस लौटते समय रास्ते में एक किशोर को सांप ने डंस लिया। जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। उसे इलाज के लिए फौरन सामुदायिक स्वास्थ्य पहुंचाया गया। जहां उसका इलाज हुआ। मूलतः हुसैनगंज फतेहपुर निवासी रामचंद्र ने बताया कि वह अपनी रिश्तेदारी सातनपुर गांव से निमंत्रण के लिए बहरामपुर गांव गया था। जहां रात करीब तीन बजे 14 वर्षीय बेटे मोनू को बाइक पर पीछे बैठा कर वापस लौट रहा था। गांव के ही निकट वह सड़क किनारे खड़े होकर पीछे आ रहे अन्य रिश्तेदारों का इंतजार करने लगा। तभी बेटे को सांप ने डस लिया। हालत बिगड़ने पर उसे उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उसे जिला अस्पताल में दिखाने की सलाह दी है।

सीडीओ ने राजकीय प्रशिक्षण केन्द्र कौशल विकास संस्थान व आई0टी0आई0 का किया निरीक्षण

रायबरेली मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय ने जनपद में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के अन्तर्गत संचालित राजकीय प्रशिक्षण केन्द्र कौशल विकास संस्थान का निरीक्षण किया गया। उन्होंने संस्थान में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षणार्थियों से वार्ता कर प्रशिक्षण की गुणवत्ता की जांच की। निरीक्षण के दौरान कौशल विकास संस्थान के सीईओ ए0एम0 त्रिपाठी, प्रिंसिपल योगेन्द्र मिश्रा, जिला समन्वयक विवेक कुमार तिवारी, एमआईएस प्रबंधक राजीव कुमार सिंह, धर्मेन्द्र मिश्रा एवं अन्य उपस्थित रहे। इसके पश्चात मुख्य विकास अधिकारी द्वारा राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, गोरा बाजार रायबरेली का भी निरीक्षण किया गया। उन्होंने आईटीआई में कराई जा रही ट्रेनिंग के साथ-साथ परिसर में संचालित टाटा टेक्नोलॉजी लिमिटेड में चल रही ट्रेनिंग का भी विस्तार पूर्वक जानकारी ली गयी। निरीक्षण के दौरान नोडल प्रधानाचार्य आईटीआई रायबरेली विवेक कुमार तिवारी, प्रधानाचार्य आईटीआई बछरावां अभिषेक, प्रधानाचार्य आईटीआई ऊँचाहार पवन कुमार मिश्रा एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। अन्त में मुख्य विकास अधिकारी द्वारा कौशल प्रशिक्षण और अधिक प्रभावी तरीके से सिखाने हेतु प्रोत्साहित किया गया।

सांसद रामजीलाल सुमन पर हमला पीडीए समाज पर हमला है- राकेश मौर्य

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल के निर्देश पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं सांसद राज्यसभा रामजीलाल सुमन पर करणी सेना द्वारा हमला किए जाने एवं लगातार जान से मारने की धमकी दिए जाने पर तथा हमलावर अराजक तत्वों पर विधिसम्मत कार्रवाई ना किए जाने के विरोध में प्रदेशव्यापी धरना प्रदर्शन के क्रम में समाजवादी पार्टी जौनपुर के जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य के नेतृत्व में सपाजनों ने डॉ भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दीवानी कचहरी तिराहा, डॉ भीमराव अंबेडकर पार्क से भारी संख्या में जुलूस की शक्ल में नारेबाज़ी करते हुए अपने ग़म और गुस्से का इज़हार किया, तथा कलेक्ट्रेट परिसर में धरनास्थल पर पहुंच कर अपना विरोध प्रकट किया। उक्त अवसर पर धरने को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य ने कहा कि जिस तरह से लगातार हमारे नेता और सांसद को लक्ष्य कर हमला किया जा रहा है कहीं न कहीं ऐसे अराजक तत्वों को सरकार और प्रशासन का संरक्षण प्राप्त है, वहीं पीडीए समाज का योजनाबद्ध तरीके से उत्पीड़न किया जा रहा है ऐसे में बाबासाहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के संविधान की सुरक्षा आवश्यक है। आज पीडीए समाज की एकजुटता जागरूकता की जरूरत है तभी हम प्रभुत्ववादियों से हम पीडीए समाज को संविधान प्रदत्त अधिकार, सुरक्षा दिला सकते हैं। मछलीशहर की सांसद सुश्री प्रिया सरोज ने कहा कि देश और प्रदेश की सरकार लगातार बाबासाहब के संविधान की अवहेलना करते हुए पीडीए समाज के लोगों का खुला उत्पीड़न कर रही है। पीडीए समाज के उत्पीड़न करने वाले अराजक तत्वों को पूरा संरक्षण दे रही है।ऐसे में न्याय का राज स्थापित नहीं कर सकते।

पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव ललई ने कहा कि देश और प्रदेश की सरकारों की कार्यप्रणाली से बाबासाहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी द्वारा निर्मित संविधान और संविधान निर्माता बाबासाहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी का सम्मान खतरे में है और इसी क्रम में पीडीए समाज का हक अधिकार और सम्मान भी खतरे में है और आज पीडीए समाज की लड़ाई पूरे देश में कोई लड़ रहा है तो वो अखिलेश यादव हैं।

धरना सभा को विधायक गण तूफानी सरोज, लकी यादव, पंकज पटेल, पूर्व मंत्री दीपचंद सोनकर, पूर्व विधायक लालबहादुर यादव, पूर्व विधायक श्रद्धा यादव, पूर्व ज़िला पंचायत अध्यक्ष राजबहादुर यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष डॉ अवधनाथ पाल, जयहिंद यादव वरिष्ठ नेता दीपचंद राम, श्यामबहादुर पाल, सुश्री पूनम मौर्य, अनवारूल हक गुड्डू, रत्नाकर चौबे, श्यामनारायण बिंद, शर्मिला यादव ने भी संबोधित किया। धरना सभा में वरिष्ठ नेता राजनाथ यादव, रुखसार अहमद, राजेश यादव , श्रवण जायसवाल, निज़ामुद्दीन अंसारी, रमापति यादव, सुशील दुबे, राजेश विश्वकर्मा,

जितेंद्र यादव, डॉ सरफराज़, अमित यादव, राजन यादव, नैपाल यादव, सुरेश यादव, राजदेव पटेल, राहुल त्रिपाठी, आलोक त्रिपाठी लकी, गुलाब यादव, मालती निषाद, डॉ शबनम नाज़, हीरालाल विश्वकर्मा, सैयद आरिफ, कमलेश यादव, कमालुद्दीन अंसारी, गामा सोनकर, संजय गौतम, सुक्खू यादव, मुनव्वर अली उमाशंकर चौरसिया, प्रेमनारायण बाबा, उमाशंकर पाल, भूपेश पांडे, दीपक जायसवाल, मनोज मौर्य, जगदीश प्रसाद मौर्य गप्पू, अलमास सिद्दीकी, रमेश मौर्य, प्रवीण सरोज, ऋषि यादव, स्मारबहादुर यादव, बरसातू राम सरोज, सुहैल अंसारी, दीपक विश्वकर्मा, दा जंगबहादुर यादव, संजीव साहू, साहबलाल गौतम, हवलदार चौधरी, हरिश्चंद प्रभाकर, मुकेश यादव, विधानसभा अध्यक्ष गण रामजतन यादव, मिथिलेश यादव, वीरेंद्र यादव, सोचनराम विश्वकर्मा, राम अकबाल यादव, सूर्यभान यादव रामू मौर्य, नंदलाल यादव, नीरज पहलवान, आनंद गुप्ता, गुड्डू सोनकर, दिलीप प्रजापति, अशोक नायक, लालचंद यादव, रजनीश मिश्रा, जितेंद्र शर्मा, नीलम शर्मा, सोनी सेठ, आरती महाजन, मीरा यादव, आर बी यादव, अरविंद यादव, प्रदीप पाल, तमजीद अशरफ, धर्मेंद्र सोनकर, नवाज़ खान, प्रमोद यादव, लालचंद यादव सहित सैकड़ों की संख्या में सपाजन उपस्थित रहे। अंत में जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं सांसद राज्यसभा रामजीलाल सुमन पर हमले एवं PDA समाज के उत्पीड़न के विरोध में महामहिम राष्ट्रपति महोदया को जिलाधिकारी के प्रतिनिधि के रूप उपस्थित सिटी मजिस्ट्रेट जौनपुर को ज्ञापन को सौंपते हुए करणी सेना के अराजक तत्वों पर सख्त कार्रवाई करने हेतु सरकार को निर्देश देने की मांग की गई। धरना सभा का संचालन ज़िला महासचिव आरिफ हबीब ने किया।

विवाहिता को मारपीट कर घर से निकाला, गहने भी छीने

● पति समेत 5 के विरुद्ध दहेज प्रताड़ना समेत अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा पंजीकृत

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर गौराबादशापुर थाना क्षेत्र के चौकी धरसन्ड गांव की एक विवाहिता को ससुरालियों द्वारा प्रताड़ित करते हुए उसे मारपीट कर घर से निकाल दिया गया। विवाहिता द्वारा इसकी शिकायत पुलिस अधीक्षक डॉ कौस्तुभ से की गई, जिसके संबंध में महिला थाना पुलिस ने पति समेत 5 ससुराली जन पर दहेज प्रताड़ना गहने छीनने,व मारपीट से संबंधित गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

पुलिस के मुताबिक गौराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के चौकी धरसंड गांव निवासी लालचन्द ने अपनी पुत्री सोनी का विवाह बीते 22 मई 2012 को खुटहन थाना क्षेत्र के गौसपुर गांव निवासी संतोष कुमार के साथ किया था । विवाह के समय लालचन्द द्वारा अपनी पुत्री को उपहार स्वरूप जेवरात के जरूरत के हर सामान दिया गया था। पुलिस अधीक्षक को दिये प्रार्थना पत्र में सोनी ने बताया कि शादी के चार पांच साल बाद पति संतोष के व्यवहार में बदलाव आने लगा और वे एक अन्य महिला के चक्कर में पड़ कर जुए और शराब का सेवन करने लगे। जिसका विरोध किये जाने पर पति समेत अन्य ससुरालीजन बीते 30 अप्रैल 2024 को सोनी को मारपीट कर घर से निकाल दिया। तब से वह अपने मायके में रह रही है। आरोप है कि उस दिन ससुरालीजन ने उसके गहने भी छीन लिये।

और जब इसकी शिकायत को लेकर मेरे पिता लालचन्द मेरे ससुराल गये तो उन लोगों ने उन्हें गाली गलौज देते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए घर से भगा दिया। बुधवार को सोनी अपने पिता को लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंची। उसने अपने ससुराल वालों के ऊपर आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक से मिलकर तहरीर दिया। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर महिला थाना पुलिस ने पति संतोष, ससुर कल्पनाथ, सास मालती देवी, देवर सचिन कुमार और सौरभ के विरूद्ध दहेज प्रताड़ना समेत संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया।

मजदूर दिवस पर श्रमिकों का सम्मान कानूनी अधिकार की दी गई जानकारी

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। विश्व मजदूर दिवस के अवसर पर रानीगंज नगर पंचायत कार्यालय सभागार में तहसीलदार रानीगंज अजय संतोषी के अध्यक्षता में कानूनी जागरूकता एवं श्रमिक सम्मान कार्यक्रम आयोजित किया गया।इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए तहसीलदार ने कहा कि मजदूरों की मेहनत ही विकास की बुनियाद है।सरकारी एवं गैर सरकारी उद्योगों में बड़ी संख्या में श्रमिक कार्य करते हैं सरकार द्वारा मजदूरों के कल्याणार्थ अनेक योजनाएं संचालित हैं। जागरूकता के अभाव में लोग योजनाओं से वंचित हो जाते हैं।लोगो को उनके कानूनी अधिकार एवं उसका लाभ प्राप्त हो, शोषण के खिलाफ श्रमिको को न्याय मिल सके इसके लिए विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जनजागरूकता शिविर का आयोजन किया जाता है। कोई भी व्यक्ति प्राधिकरण में निःशुल्क कानूनी सहायता प्राप्त कर सकता है।पीएलवी महेंद्र कुमार त्रिपाठी ने बाल सेवा योजना, महिला उत्पीड़न, बाल श्रम, वैवाहिक विवाद समाधान विषय पर जानकारी दी। पीएलवी दिनेश कुमार मिश्र ने लोक अदालत के माध्यम से निस्तारित किए जाने वाले मामलो के बारे में विस्तार से बताया। पीएलवी सुरेंद्र कुमार सरोज ने रानीगंज तहसील में संचालित लीगल एड क्लीनिक के कार्यों और उद्देश्य को बताया। कार्यक्रम का संचालन पीएलवी अधिवक्ता अनिल कुमार पांडेय ने किया। अधिशाषी अधिकारी महेंद्र कुमार सिंह ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में तहसीलदार द्वारा हरिकेश मौर्य, राम किशोर, संतोष गुप्ता, सुभाष, शोभनाथ, मुकेश, सीमा, गीता, विद्या, मालती सहित एक दर्जन से अधिक महिला पुरुष श्रमिको का माल्यार्पण कर अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

रात में खनन दिन में कटान आंखें मूंदे हुए अफसर जनता हैरान

● प्रतिबंधित पेड़ों की कटान और अवैध खनन का गढ़ बना महराजगंज क्षेत्र

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज (रायबरेली) कोतवाली क्षेत्र के विभिन्न गांवों में पुलिस की मिली भगत के चलते अवैध खनन व अवैध कटान जोरो पर है, खनन माफिया आए दिन रात के अंधेरे में जेसीबी व डंफर की मदद से धरती को छलनी करते हुए देखे जा रहे हैं। वहीं अवैध कटान का भी सिलसिला क्षेत्र में बदस्तूर जारी है, बताते चलें कि जहां एक ओर प्रदेश की योगी सरकार खनन माफियाओं पर नकेल कसने के लिए पूरी तरह से तत्पर है, और जिम्मेदारों को समय-समय पर शासन से प्रभावी कार्रवाई किए जाने के निर्देश भी दिए जाते हैं, लेकिन कोतवाली पुलिस सारे आदेशों और निर्देशों को रौंद रही है, और मनबढ़ खनन माफिया व वन माफिया अवैध कार्यो को बखूबी अंजाम दे रहे हैं, और उन्हें भरपूर संरक्षण भी प्रदान किया जा रहा है।

जिसके फलस्वरूप शाम होते ही रात्रि के अंधेरे में खनन माफिया बेखौफ होकर धरती का सीना छलनी करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं, ज्ञात हो कि बीती रात महराजगंज कोतवाली क्षेत्र के कुसढ़ी सागरपुर गांव के तिराहे पर जेसीबी व डंपर द्वारा क्षेत्र के बेलवा संपर्क मार्ग से सैकड़ो ट्रॉली मिट्टी खोदकर खनन माफिया ने शासन और प्रशासन को खुली चुनौती दी है तथा बीते एक सप्ताह के अंदर कोतवाली क्षेत्र के चरी का पुरवा व रनागंज सहित कई गांवों में अवैध खनन किया गया है, सूर्यास्त होते ही खनन माफिया अवैध खनन करने में मशगूल हो जाते हैं, इलाकाई लोगों का कहना है कि कोतवाली पुलिस की मिली भगत के चलते ही यह अवैध खनन का कार्य चल रहा है, बगैर पुलिस के संरक्षण संभव नहीं है।

मामले में उप जिलाधिकारी सचिन यादव ने बताया कि सोशल मीडिया के माध्यम से मामला संज्ञान में आया है, हल्का लेखपाल विवेक सिंह को मौके पर भेज कर जांच कराई गई है मामला सही पाया गया है रिपोर्ट मिलते ही खनन विभाग को रिपोर्ट भेज कार्रवाई कराई जाएगी।

ओवरलोड मौरंग लदे ट्रक के नीचे दबकर बाइक सवार युवक की मौत

● परिवार में मचा कोहराम।

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के रायबरेली रोड स्थित रेलवे क्रॉसिंग के पास बृहस्पतिवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हो गया। टेंट हाउस का काम करके लौट रहे बाइक सवार युवक के ऊपर मौरंग से लदा ओवरलोड ट्रक पलट गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। कानपुर रोड स्थित राजपति नगर मोहल्ला निवासी 26 वर्षीय नितिन धानुक अपने सगे भाई विपिन, गुलशन और फुफेरे भाई मनीष उर्फ जतिन के साथ बाइक से टेंट का काम निपटाकर घर लौट रहा था। रेलवे क्रॉसिंग के पास नाला निर्माण कार्य के चलते जाम लगा हुआ था। रोड के दोनों तरफ वाहनों की कतारें लगी हुई थी। जाम के कारण बाइक में पीछे बैठे तीनों युवक उतर गए, लेकिन नितिन बाइक लेकर किनारे से निकलने की कोशिश करने लगा। इसी दौरान सामने से आ रहा ओवरलोड मौरंग लदा ट्रक असंतुलित होकर नितिन की बाइक पर पलट गया। नितिन ट्रक के नीचे दब गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने हाइड्रा बुलवाकर ट्रक को हटवाया और शव को बाहर निकलवाकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक चार भाइयों में सबसे बड़ा था। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया है। इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह ने बताया कि आवश्यक कार्रवाई के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा जा रहा है।

सभी विधानसभाओं का कार्यकाल 2029 तक बढ़ाकर लोकसभा-विधानसभा चुनाव एक साथ कराए जाये- गिरीश यादव

● एक देश एक चुनाव सिर्फ चर्चा का विषय नहीं, बल्कि भारत की जरूरत- कौशलेन्द्र पटेल

इकॉनामिक रिफॉर्म की दिशा में 'वन नेशन वन इलेक्शन' बड़ा कदम है- सीमा द्विवेदी

भारत मे चुनाव प्रत्येक वर्ष होते हैं जिसके परिणाम स्वरूप भारी सरकारी व्यय होता- पुष्पराज सिंह

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- वन नेशन वन इलेक्शन' पर आज जौनपुर मे चार जगह बैठक हुई पहली बैठक मुंगराबादशाहपुर मे जिला पंचायत सदस्य आलोक सिंह के अध्यक्षता मे बैठक हुई जिसके मुख्य अतिथि अजय शंकर दुबे रहे। उन्होंने बैठक को सम्बोधित करते हुये हुआ कि भारत में राज्यों के विधानसभा और देश के लोकसभा चुनाव अलग-अलग समय पर होते हैं वन नेशन वन इलेक्शन का मतलब है कि पूरे देश में एक साथ ही लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव हों सरकार ने 17 दिसंबर 2024 को संघ राज्य क्षेत्र विधि विधेयक 2024' लोकसभा में पेश किया 269 सांसदों ने इसके पक्ष में वोटिंग की 198 सांसदों ने इस बिल के विरोध में वोट डाला विपक्ष के हंगामे के बाद इस बिल को फिलहाल छ्वक्क्ष्ट में भेजा गया है। वन नेशन वन इलेक्शन पर विचार के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 2 सितंबर 2023 को कमेटी बनाई गई कमेटी ने 14 मार्च को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को अपनी रिपोर्ट सौंप दी थी।

शाहगंज मे मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य कौशलेन्द्र सिंह पटेल रहे उन्होने उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नवंबर 2020 में पहली बार 'वन नेशन वन इलेक्शन' पर बात की थी "एक देश एक चुनाव सिर्फ चर्चा का विषय नहीं, बल्कि भारत की जरूरत है हर कुछ महीने में कहीं न कहीं चुनाव हो रहे हैं इससे विकास कार्यो पर प्रभाव पड़ता है पूरे देश की विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव एक साथ होते हैं तो इससे चुनाव पर होने वाले खर्च में कमी आएगी। 17 दिसंबर 2024 को संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान लोकसभा में वन नेशन वन इलेक्शन के लिए 129वां संविधान संशोधन बिल पेश किया गया लेकिन इस बिल को विपक्ष के हंगामे के बाद JPC में भेजा गया है। 'वन नेशन वन इलेक्शन' भारत की अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे बड़ी तीसरी अर्थव्यवस्था बनाने और विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए बहुत जरूरी है।

मल्हनी विधानसभा मे गुलाबी देवी महाविद्यालय मे मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित राज्य सभा सांसद सीमा द्विवेदी ने कहा कि इकॉनामिक रिफॉर्म की दिशा में 'वन नेशन वन इलेक्शन' बड़ा कदम है इसके फायदे आगे जाकर मिलेंगे इकॉनमिक रिफॉर्म्स के नजरिए से देखें, तो जब इलेक्शन 5 साल में एक बार होने लगेंगे, तो सरकारों को आर्थिक सुधार के लिए ज्यादा वक्त मिलेगा इसलिए अगर केंद्र और राज्य सरकारों के चुनाव एक साथ कराए जाते हैं, तो हमें उसका बड़ा रिटर्न मिलेगा। प्रधानमंत्री मोदी ने इलेक्टोरल रिफॉर्म की पहल भी कर दी है. पार्लियामेंट में बिल भी

पेश किया जा चुका है वन नेशन वन इलेक्शन फिलहाल JPC में है अभी जितने इलेक्शन हो रहे हैं, उन्हें मिला दिया जाए और इलेक्शन प्रोसेस में बदलाव लाया जाए तो चुनावी खर्चों, राजकोषीय घाटे, शासन के ढांचे पर इसका सीधा असर पड़ेगा आगे जाकर ये असर फायदेमंद साबित होगा।

बदलापुर विधानसभा मे जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह के अध्यक्षता मे बैठक हुई जिसके मुख्य अतिथि खेल और युवा कल्याण मंत्री गिरीश चंद यादव रहे उन्होंने कहा कि सभी राज्य विधानसभाओं का कार्यकाल अगले लोकसभा चुनाव यानी 2029 तक बढ़ाकर पहले फेज में लोकसभा-विधानसभा चुनाव एक साथ कराए जाये दूसरे फेज में 100 दिनों के अंदर निकाय चुनाव कराए जा सकते हैं हंग असेंबली, नो कॉन्फिडेंस मोशन होने पर बाकी 5 साल के कार्यकाल के लिए नए सिरे से चुनाव कराए जा सकते हैं। विधायक रमेश मिश्र ने कहा कि इलेक्शन कमीशन लोकसभा, विधानसभा, स्थानीय निकाय चुनावों के लिए राज्य चुनाव अधिकारियों की सलाह से सिंगल वोटर लिस्ट और वोटर आई कार्ड तैयार कर सकता है कोविंद पैनल ने एकसाथ चुनाव कराने के लिए डिवाइसों, मैन पावर और सिक्योरिटी फोर्स की एडवांस प्लानिंग की सिफारिश की है। जिलाध्यक्ष पुष्पराज सिंह ने कहा कि भारत में, राज्य विधानसभाओं और संसद के सदस्यों के चुनाव के लिए आम चुनाव अलग-अलग आयोजित किए जाते हैं, जब मौजूदा सरकार का कार्यकाल समाप्त हो जाता है या किसी कारण से भंग हो जाती है। भारत में 1951-52 से 1967 तक राज्य विधानसभाओं और लोक सभा के लिए चुनाव एक साथ होते थे। यह चक्र टूट गया और वर्तमान में चुनाव हर वर्ष और कभी-कभी एक वर्ष के भीतर अलग-अलग समय पर होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारी सरकारी व्यय होता है, चुनावों में लगे सुरक्षा बलों और निर्वाचन अधिकारियों को लंबे समय तक अपने प्राथमिक कर्तव्यों से विमुख होना पड़ता है, आदर्श आचार संहिता लागू होने के कारण विकास कार्यों में बाधा उत्पन्न होती है। उक्त अवसर पर सुशील मिश्र सुधाकर उपाध्याय शनी सिंह दिलीप शर्मा बेचन सिंह प्रदीप जायसवाल गीता जायसवाल चंदन शर्मा प्रबुद्ध दुबे रागिनी सिंह मेनका सिंह राखी सिंह महेंद्र बिंद मुकेश पटेल चंद्रेश गुप्ता संतोष गुप्ता संदीप सिंह दिवाकर सिंह सर्वेश तिवारी महेंद्र तिवारी चंद्रेश विश्वकर्मा नेहा पटेल अखिल यादव आदि उपस्थित रहे।

बाल विवाह रोकने के लिए आम जनता को किया जागरूक

चित्रकूट : जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जी एन के निर्देश एवं जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज मिश्रा के मार्गदर्शन में ऑपरेशन मुक्ति अभियान के अंतर्गत मानिकपुर विकासखंड क्षेत्र के केकरामफी गांव में विज्ञान फाउंडेशन द्वारा संचालित युवा संसाधन केंद्र में बाल विवाह जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान अभिभावकों एवं ग्रामीणों को बाल श्रम एवं बाल विवाह के बारे में जागरूक किया गया। इस कार्यक्रम में चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 के परियोजना समन्वयक एवं हब फार वूमेन एंपावरमेंट की जेंडर स्पेशलिस्ट मीनू सिंह द्वारा बच्चों, महिलाओं एवं किशोरियों को बाल विवाह से होने वाले सामाजिक, शारीरिक, मानसिक दुष्प्रभावों के बारे में बताया गया। यूनिसेफके मंडलीय सलाहकार राजेश सैनी द्वारा बताया गया कि बाल विवाह कानूनी अपराध है। बाल विवाह में संलिप्त सभी लोगों को सजा एवं जुर्माने का प्राविधान है। विज्ञान फाउंडेशन के सोशल वर्कर मनीष ने बताया कि बालिकाओं को पढ़ाया जाए और 18 वर्ष के बाद ही उनकी शादी किया जाय। गांव की उपस्थित महिलाओं, किशोरियों एवं बच्चियों ने बाल विवाह न करने और न ही होने देने की शपथ ली। इस मौके पर यूनिसेफ के मंडलीय सलाहकार राजेश सैनी, सीडब्लूसी के अध्यक्ष राकेश माथुर, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 से परियोजना समन्वयक विशेष कुमार त्रिपाठी, दीपा शुक्ला, श्यामानंद एवं एएचटीयू से त्रिभुवन सिंह, सुशील कुमार, शैलेन्द्र कुमार एवं विधान फाउंडेशन से मनीष सहित गांव की महिलाएं, बच्चियां, किशोरिया, आशा, आंगनवाड़ी आदि मौजूद रहे।

विद्यालय निर्माण के लिए डीएम ने किया भूमि का निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट ब्यूरो: जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने गुरुवार को सदर ब्लाक के ग्राम पंचायत बनाड़ी में मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट विद्यालय (पूर्व माध्यमिक से कक्षा 12 तक) के प्रस्तावित विद्यालय के निर्माण के लिए भूमि का निरीक्षण किया। इसके साथ ही डीएम ने संतुष्टि समाधान दिवस का आयोजन करते हुए फरियादियों की समस्याओं को सुना। साथ ही निस्तारण के लिए सम्बन्धितों को निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने तहसीलदार कर्वी को निर्देशित किया कि निर्माण के लिए भूमि का चिन्हांकन कराकर कार्यदाई संस्था को हैंडोवर कराए। जिलाधिकारी ने कार्यदाई संस्था उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कारपोरेशन लिमिटेड यूपीपीसीएल के प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देशित किया कि भूमि का चिन्हांकन होते ही विद्यालय का निर्माण कार्य समय से कराएं। उन्होंने कहा कि स्कूल का निर्माण कार्य गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए। यह विद्यालय आरआरसी संरचना से संयुक्त, दो मंजिला, गैर आवासीय, बाल वाटिका, बहुद्देशीय हाल, स्टाफ आवास, गार्डन रूम, खेल का मैदान, आंतरिक जल आपूर्ति विद्युतीकरण से युक्त मॉडल स्कूल होगा। इस मौके पर प्रोजेक्ट मैनेजर अमर सिंह राठौर, सहायक अभियंता सुनील कुमार कनौजिया आदि मौजूद रहे।

इसके पूर्व जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने संतुष्टि समाधान दिवस का आयोजन कर जनसमस्याएं सुनते हुए सम्बन्धित अधिकारियों को समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के दिए निर्देश। डीएम ने फरियादियों की समस्याओं को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि शासन की मंशानुरूप गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें। कहा कि जमीन से सम्बन्धित मामलों में पुलिस व राजस्व की संयुक्त टीमों को मौके पर भेजकर निस्तारण कराएं। कहा कि जो भी जनसुनवाई के दौरान समस्याएं आ रही है, उनका गुणवत्तापूर्ण निस्तारण ससमय सुनिश्चित कराएं। साथ ही सम्बन्धित को निस्तारण से संतुष्टि भी मिलनी चाहिए। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक राजेश प्रसाद, अपर उप जिलाधिकारी राकेश कुमार पाठक आदि मौजूद रहे।

गमीगीन माहौल में राजकीय सम्मान के साथ हुआ सेना नायक पीयूष सिंह का अंतिम संस्कार

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट ब्यूरोः इंडियन आर्मी के गोरखा रेजिमेंट में नायक पद में तैनात सेना नायक पीयूष सिंह (35) बैंगलोर में पोस्टेड थे। दो दिन पूर्व पीयूष सिंह बीती 29 अप्रैल की सुबह पांच बजे पीटी के लिए तैयार होकर गए, तो इस दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा, हालत बिगड़ते देख मौके पर मौजूद सैनिकों ने उन्हें सैनिक अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। गुरुवार को सुबह आठ बजे पीयूष सिंह का पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव परसौंजा लाया गया। जहां इंडियन आर्मी के ऑफिसर, सैनिक व पहाड़ी थाना की सर्किल इंस्पेक्टर रीता सिंह ने पीयूष सिंह को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी। पियूष सिंह की मृत्यु के बाद से उनकी मां उर्मिला सिंह, पत्नी नेहा सिंह व परिवार का रो-रो कर बुरा हाल है। इस दौरान सदर विधायक अनिल प्रधान, पूर्व विधायक वीर सिंह पटेल, सपा नेता निर्भय सिंह पटेल, जब्बार पटेल, मीरा भारती सहित अन्य जनप्रतिनिधि, हजारों की संख्या में गांव व रिश्तेदार मौजूद रहे। परिजनों ने बताया कि पीयूष सिंह ने 2013 में आर्मी जॉइन की थी। 2015 में मध्यप्रदेश रीवा जिले के परसिया निवासी राजबहादुर सिंह की बेटी नेहा सिंह के साथ उनकी शादी हुई थी। पीयूष सिंह की एक पुत्री काव्या सिंह (8) व

पुत्र विदर्भ सिंह (4) हैं। पीयूष सिंह की मृत्यु से उनके परिवार में दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है। पिता कमलेश सिंह, माता उर्मिला सिंह, दादा सन्तराम सिंह, चाचा रामगोपाल सिंह, विजय सिंह, बद्री सिंह पटेल, संतोष सिंह, अभिमन्यु सिंह, छोटे भाई सुशांत सिंह, विकास सिंह, अमन सिंह, अंकुर सिंह, आकाश सिंह, आनंद सिंह, प्रिंस सिंह सहित पूरा परिवार में शोक में डूबा हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

गेहूं की फसल में लगी आग दमकल ने बुझाई

कानपुर। आज दिनांक 01.05.2025 को थाना सजेती गांव अलियापुर स्थित गेहूँ की फसल में आग लगने की घटना सामने आई। फायर ब्रिगेड की तत्परता और शीघ्र कार्रवाई के चलते आग पर लगभग पूर्ण नियंत्रण पा लिया गया है।मुख्य अग्निशमन अधिकारी ने जानकारी दी कि आग बुझाने का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है और स्थिति नियंत्रण में है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस घटना में कोई जनहानि अथवा किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। स्थिति पर प्रशासन की सतत निगरानी बनी हुई है और सुरक्षा मानकों का पूर्ण पालन किया जा रहा है।

इनामी अभियुक्त मोहम्मद आकिब पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

वांछित अभियुक्त के दाहिने पैर में गोली लगने से हुआ घायल

कानपुर। आज दिनांक 01/05/2025 को प्रातः लगभग 01:00 बजे गोविंद नगर पुल, डाक यार्ड, जीएमसी सिख लाइन के पास पुलिस व वांछित अपराधी के बीच मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ में पुलिस ने एक इनामिया बदमाश को गिरफ्तार किया है। सहायक पुलिस आयुक्त स्वरुप नगर इंद्रप्रकाश सिंह ने बताया कि अभियुक्त मोहम्मद आकिब के लिए डीसीपी सेंट्रल ने 25000 का इनाम घोषित किया था। इस मुठभेड़ में थाना फजलगंज पर पंजीकृत अभियोग में वांछित 25,000 के इनामिया अभियुक्त मोहम्मद आकिब के दाहिने पैर में गोली लगी। उसे उपचार हेतु हैलट अस्पताल भेजा गया। उसके कब्जे से एक तमंचा 315 बोर, दो खोखा कारतूस एवं दो जीवित कारतूस बरामद किए गए। इस संबंध में थाना फजलगंज पर पुलिस मुठभेड़ का अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्रवाई की जा रही है।

सोनभद्र में सपा का प्रदर्शन, अलीगढ़ हमले पर जताया आक्रोश

सोनभद्र, उत्तर प्रदेश। राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन के काफिले पर अलीगढ़ में हुए हमले के विरोध में समाजवादी पार्टी (सपा) कार्यकर्ताओं ने सोनभद्र कलेक्ट्रेट पर जोरदार प्रदर्शन किया। सपा कार्यकर्ताओं ने प्रदेश की कानून व्यवस्था को ध्वस्त बताते हुए सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। सपा जिलाध्यक्ष रामनिहोर यादव के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट परिसर में धरना दिया और राष्ट्रपति के नाम जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार में लोकतंत्र और संविधान के मूल्यों की लगातार अनदेखी हो रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में अराजक तत्वों को खुला संरक्षण मिल रहा है और शासन-प्रशासन इन पर कोई कार्रवाई नहीं कर रहा है। रामनिहोर यादव ने यह भी आरोप लगाया कि दलित विरोधी मानसिकता के कारण सरकार द्वारा पोषित कर्णी सेना के लोग, जो मुख्यमंत्री की जाति से जुड़े हैं, दलितों पर अत्याचार कर रहे हैं और उन पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। उन्होंने पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) की एकजुटता को सरकार की बौखलाहट का कारण बताया, जिसके चलते इस प्रकार के हमले हो रहे हैं। सपा नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि पीडीए समाज का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ तो पार्टी सड़कों पर उतरकर आंदोलन करने को बाध्य होगी, जिसकी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी।

मई दिवस - समस्याओं से ग्रस्त, खुशियों से दूर आज भी है मजबूर मजदूर

हर साल मनाया जाता है मजदूर दिवस, हर साल होती हैं तमाम घोषणाएं

स्वतंत्र प्रभात

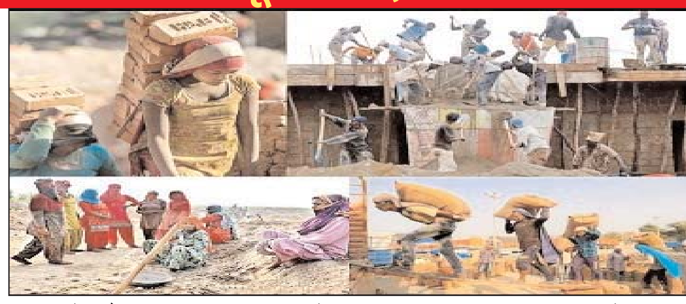

कानपुर। हर साल की तरह इस बार भी एक मई यानी मजदूर दिवस मनाया गया। रैलियां निकल गई। सभाएं हुई। समस्याओं के खिलाफ संघर्ष का ऐलान किया गया। ठीक सब कुछ वैसा ही जैसा मई यानी मजदूर दिवस पर हर साल किया जाता है। और शायद भविष्य में भी हमेशा ऐसा ही किया जाता रहेगा। इसके संदर्भ में यह भी मानना अनुचित नहीं होगा कि गरीबी शब्द ही मजदूर दिवस जैसे शब्द का सृजक है। और अगर गरीबी नहीं होती तो शायद मजदूर दिवस मनाया जाने की जरूरत ही नहीं पड़ती। एक हिसाबसे हम सभी मजदूर ही हैं बस अंतर इतना है। कोई अमीर मजदूर है तो कोई गरीब मजदूर है। - - और इनमें अमीर मजदूरों से ज्यादा है गरीब मजदूर। यह मई दिवस उन्हें गरीब मजदूरों का है। और यह हमेशा यूं ही मनाया जाता रहेगा क्योंकि ऐसा नहीं लगता कि गरीब मजदूरों की संख्या अमीर मजदूरों से ज्यादा हो जाएगी। यहां अमीर मजदूर का मतलब उन सभी से है जो गरीब मजदूरों की तरह आज भी भूखे पेट नहीं सोते। जो आज भी बुनियादी सुविधाओं से दूर हैं। जिन्हें आज भी अपनी बेटियों की शादी करने के लिए भीख मांगनी पड़ती है। गंभीर बीमारियों के इलाज के अभाव में पैसे की वजह से जो आज भी दम तोड़ देते हैं। ईद पत्थर ढोये बगैर ,रिक्शा चलाए बगैर, बोझ उठाये बगैर और फावड़ा या हल चलाएं बगैर भूखे पेट सोने या नंगे बदन रहने को मजबूत होते हैं।

संक्षेप में यह भी कहा जा सकता है कि, जिनके सपने रहते हमेशा चूर-चूर है, वो और कोई नहीं साहब, लोगों के शौक पूरे करने वाला एक मजदूर है। जैसा कि सर्व विदित है कि इन मजदूरों और श्रमिकों को सम्मान देने के उद्देश्य से हर साल दुनिया भर में मजदूर दिवस मनाया जाता है। मजदूरों के नाम समर्पित यह दिन 1 मई है। मजदूर दिवस को 'लेबर डे, श्रमिक दिवस या मई डे 'के नाम से भी जाना जाता है। श्रमिकों के सम्मान के साथ ही मजदूरों के अधिकारों के लिए आवाज उठाने के उद्देश्य से भी इस दिन को मनाते हैं, ताकि मजदूरों की स्थिति समाज में मजबूत हो सके। मजदूर किसी भी देश के विकास के लिए अहम भूमिका में होते हैं। हर कार्य क्षेत्र मजदूरों के परिश्रम पर निर्भर करता है। मजदूर किसी भी क्षेत्र विशेष को बढ़ावा देने के लिए श्रम करते हैं। हर बार मजदूर दिवस की एक थीम होती है, जिसके आधार पर इन दिन को मनाया जाता है। इस वर्ष मजदूर दिवस 2024 की थीम 'जलवायु परिवर्तन के बीच काम की जगह पर श्रमिकों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को सुनिश्चित करना। 'लेकिन यहां कितना हो पाएगा या सब कुछ करने वालों की मंशा पर ही निर्भर करता है ।

अवगत कराते चलें कि पहली बार मजदूर दिवस 1889 में मनाने का फैसला लिया गया। इस दिन को मनाने की रूपरेखा अमेरिका के शिकागो शहर से बनने लगी थी, जब मजदूर एक होकर सड़क पर उतर आए थे। 1886 से पहले अमेरिका में आंदोलन की शुरुआत हुई थी। इस आंदोलन में अमेरिका के मजदूर सड़कों पर आ गए। अपने हक के लिए मजदूर हड़ताल पर बैठ गए। इस आंदोलन का कारण मजदूरों की कार्य अवधि थी। उस दौरान मजदूर एक दिन में 15-15 घंटे काम करते थे। आंदोलन के दौरान मजदूरों पर पुलिस ने गोली चला दी। इस दौरान कई मजदूरों की जान चली गई। सैकड़ों श्रमिक घायल हो गए। इस घटना के तीन साल बाद 1889 में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन की बैठक हुई। इस बैठक में तय किया गया कि हर मजदूर से प्रतिदिन 8 घंटे ही काम लिया जाएगा। वहीं सम्मेलन के बाद 1 मई को मजदूर दिवस मनाने का फैसला लिया गया। इस दिन हर साल मजदूरों को छुट्टी देने का भी फैसला लिया गया। बाद में अमेरिका के मजदूरों की तरह अन्य कई देशों में भी 8 घंटे काम करने के नियम को लागू कर दिया गया। अमेरिका में मजदूर दिवस मनाने का प्रस्ताव 1 मई 1889 को लागू हुआ, लेकिन भारत में इस दिन को मनाने की शुरुआत लगभग 34 साल बाद हुई। भारत में भी मजदूर अत्याचार और शोषण के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। मजदूरों का नेतृत्व वामपंथी कर रहे थे। उनके आंदोलन को देखते हुए 1 मई 1923 में पहली बार चेन्नई में मजदूर दिवस मनाया गया। लेबर किसान पार्टी ऑफ हिंदुस्तान की अध्यक्षता में मजदूर दिवस मनाने की घोषणा की गई। कई संगठन और सोशल पार्टी ने इस फैसले का समर्थन किया। लेकिन आज के परिवेश में मजदूर दिवस मनाना न एक तरह से खाना पूरी जैसा है, क्योंकि मजदूर की वास्तविक परिभाषा में आने वाला व्यक्ति आज भी अपनी समस्याओं को लेकर हताश निराश और परेशान है।

नालों के ऊपर से अतिक्रमण नहीं हटाया तो होगी परेशानी

बरसात से पहले सभी नालों को साफ कराने का है लक्ष्य - मेयर

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। कानपुर नगर निगम की मेयर प्रमिला पांडेय लगातार शहर में नालों के ऊपर हुए अवैध अतिक्रमण को हटाने के ले प्रतिदिन नगर निगम की टीम, पुलिस बल व जेसीबी साथ लेकर निकल रहीं हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि लोगों को अतिक्रमण हटाने का भरपूर समय दिया गया था। अब इनपर कोई ढिलाई नहीं बरती जाएगी। उन्होंने कहा कि मानसून से पहले शहर के नाले नालियों को साफ कराना है और यदि अतिक्रमण नहीं हटाया तो सफाई नहीं हो सकती है फिर बरसात में नाले ओवरफ्लो होंगे और पानी सड़कों पर और लोगों के घरों में घुसेगा। शहर में नाली नालों के ऊपर से अतिक्रमण हटाने के अभियान के तहत आज जोन 4 में बड़े पैमाने पर नाली और नालों के ऊपर बनाए गए अवैध अतिक्रमण को खड़े होकर धवस्त करवा दिया है। मेयर ने कहा कि आप लोगों के सहयोग से शहर के सभी छह जोनों में यह अतिक्रमण हटाने का अभियान काफी तेजी से चल रहा है , मेरी कोशिश यह है कि मॉनसून के महीने में जलभराव ना हो जिससे शहरवासियों को असुविधा का सामना न करना पड़े।

जिलाधिकारी ने राजकीय इंटर कालेज बिधनू का किया निरीक्षण

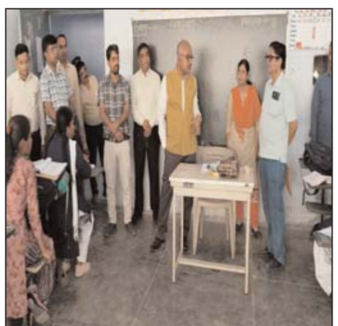

● बच्चों से पूछें नेल्सन मंडेला के जीवन से संबंधित सवाल

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह द्वारा आज राजकीय इंटर कॉलेज खेरसा, बिधनू का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी द्वारा विद्यालय में साफ - सफाई रंगाई- पुताई पढ़ाई लिखाई इत्यादि के बारे में बेसिक शिक्षा अधिकारी सुरजीत सिंह से जानकारी ली गई। जिलाधिकारी ने क्लास रूम में छात्र-छात्राओं से नेल्सन मंडेला के विषय में सवाल भी पूछे। उन्होंने छात्र-छात्राओं को बताया कि कहा कि पढ़ाई- लिखाई में उत्सुकता बहुत आवश्यक है। उन्होंने बच्चों से भविष्य में क्या बनने, के बारे में पूछा तो बच्चों ने अपने-अपने स्तर से जवाब दिए। इसके पूर्व जिलाधिकारी द्वारा राजकीय इंटर कॉलेज, खेरसा में ही मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट विद्यालय बनाए जाने हेतु संभावित जमीन का निरीक्षण किया और बेसिक शिक्षा अधिकारी से इसके क्षेत्रफल व अन्य बिंदुओं की जानकारी ली।

कुंडा पुलिस द्वारा गैंगस्टर के 05 अंतरराज्यीय अभियुक्तों पर अभियोग दर्ज

प्रतापगढ़। थाना कुण्डा, थाना संग्रामगढ़, थाना हौजखास पश्चिमी दिल्ली में पुलिस द्वारा गैर-इरादतन हत्या, हत्या का प्रयास, मारपीट, धमकी जैसे संगीन अपराध कारित करने वाले कुल 05 अभियुक्तों के विरुद्ध की गई गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही की गई है ।थाना प्रभारी कुण्डा निरीक्षक संजय कुमार सिंह के नेतृत्व में 30 अप्रैल को अन्तर्राज्यीय स्तर पर सक्रिय एक आपराधिक संगठित गिरोह के गैंगलीडर अर्जुन सरोज पुत्र शिवलाल सरोज ग्राम काजीपुर कुसेमर मुराईन का पुरवा थाना संग्रामगढ जनपद प्रतापगढ व गैंग के सदस्य संजीव कुमार शुक्ला पुत्र सत्यप्रकाश शुक्ला निवासी ग्राम 25/385 त्रिलोकपुरी थाना मयूर बिहार फेज 1 नई दिल्ली हाल पता राजीव नगर मोहम्मदाबाद थाना मोहम्मदाबाद फर्रुखाबाद,जुबैर अहमद रजा पुत्र गुलाम अहमद रजा निवासी आया 151 / 152 गली नम्बर 09, अफगानी चौक के पास थाना बजीराबाद उत्तरी नई दिल्ली, अर्जुन पुत्र किशोरीलाल निवासी मुराईन का पुरवा कुसेमर थाना संग्रामगढ़ जनपद प्रतापगढ़, पिन्टू सरोज उर्फ वीरेन्द्र सरोज पुत्र छेदीलाल निवासी ग्राम मुराईन का पुरवा कुसेमर थाना संग्रामगढ़ जनपद प्रतापगढ़ के विरूद्ध थाना कुण्डा में मु0अ0सं0 111/2025 धारा 2/3 उ0प्र0 गिरोहबन्द समाज विरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम, 1986 का अभियोग दर्ज किया गया है।

चिकित्सा अधीक्षक समेत कई कर्मचारियों पर दंडात्मक कार्रवाई

● जिलाधिकारी ने पतारा स्वास्थ्य केंद्र के निरीक्षण के बाद दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह द्वारा आज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, पतारा का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी को कई खामियां मिली। उन्होंने कर्मचारियों से पूछा कि सुबह से मरीजों के लिए कितनी बार एंबुलेंस भेजी गयी तथा औषधि वितरण केंद्र कितने बजे से कितने बजे तक खुला रहता है। जिलाधिकारी ने पूछा कि दवाओं का वितरण कौन करता है। इस पर उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। उन्होंने केंद्र में एक्सरे होने की स्थिति को जाना और पाया कि मौके पर एक्सरा तो मिला परन्तु एक्सरा टेक्नीशियन अमन वर्मा नदारद रहें जबकि उपस्थिति रजिस्टर में उसका हस्ताक्षर पाया गया, जिसकी जानकारी चिकित्सा अधीक्षक को भी नहीं थी। निरीक्षण के दौरान उन्होंने पाया कि अप्रैल महीने में मात्र 60 एक्स-रे किए गए हैं।

चिकित्सा अधीक्षक अभिषेक कटिहार ओपीडी रजिस्टर स्वयं ना भरकर अन्य कर्मचारियों से भरवाते हैं। अवलोकन में यह भी पाया गया कि केंद्र में अनुपस्थित सात कर्मचारियों की छुट्टी अंकित नहीं की गई थी जबकि चिकित्सा अधीक्षक द्वारा रजिस्टर को सीन भी किया गया। अप्रैल माह में मात्र 7 ओपीडी चिकित्सा अधीक्षक द्वारा की गई। पाया गया कि चिकित्सा अधीक्षक ओपीडी में मरीज को स्वयं नहीं देखते हैं, जिलाधिकारी ने जब इस लापरवाही के बारे में उनसे पूछा तो वे टाल - मटोल करते दिखे और संचारी रोग अभियान व अन्य व्यवस्थाओं में व्यस्त होने का हवाला देकर बहाने बनाते रहे। इस पर जिलाधिकारी ने चिकित्सा अधीक्षक समेत अन्य लापरवाह कर्मचारियों पर नाराजगी व्यक्त करते हुए वेतन रोकते हुए दंडात्मक व विभागीय कार्रवाई के निर्देश दिए।

रूद्रपुर में रिश्वत लेकर भूमि विवाद पैदा करने का आरोप, एसडीएम ने दिया जांच का आदेश

रूद्रपुर, देवरिया। तहसील रुद्रपुर अंतर्गत ग्राम जंगल इमिलिहा निवासी धर्मेन्द्र कुमार ने उपजिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि चकबंदी के दौरान लेखपाल व सहायक चकबंदी अधिकारी ने पैसे लेकर दूसरे व्यक्ति का चक उनके दरवाजे पर लगा दिया है। धर्मेन्द्र कुमार का कहना है कि उनके पिता रामप्रताप से अधिकारियों ने चक उनके दरवाजे पर लगाने के लिए रिश्वत मांगी थी लेकिन उन्होंने पैसा देने से इनकार कर दिया। इसके बाद लेखपाल और सहायक चकबंदी अधिकारी ने किसी प्रभाव में आकर दूसरे का चक जबरन उनके दरवाजे पर लगा दिया। इस फैसले से गांव में विवाद की स्थिति बन गई है और भविष्य में किसी भी गंभीर घटना की आशंका जताई जा रही है। मामले को गंभीरता से लेते हुए उपजिलाधिकारी हरिशंकर लाल ने चकबंदी अधिकारी को मौके की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

कानपुर में "हमारे वकील, हमारे मित्र" अभियान की शुरुआत

●कचेहरी में पुलिस व वकीलों में समन्वय स्थापित करने के लिए अभियान

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। आज दिनांक 1.05.2025 को पुलिस सभागार, कानपुर नगर में "हमारे वकील, हमारे मित्र" अभियान को लेकर पुलिस आयुक्त कानपुर नगर अखिल कुमार की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें संयुक्त पुलिस आयुक्त, मुख्यालय विनोद कुमार सिंह, अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था हरीश चन्दर, पुलिस उपायुक्त पूर्वी सहित अन्य पुलिस अधिकारीगण, बार एसोसिएशन के पदाधिकारी, पूर्व अध्यक्ष, महामंत्री, एल्डर्स कमेटी के सदस्यगण तथा बड़ी संख्या में अधिवक्ता बंधु शामिल हुए। बैठक का उद्देश्य अधिवक्ताओं और पुलिस प्रशासन के मध्य बेहतर संवाद, समन्वय और विश्वास को स्थापित करना रहा। चर्चा के दौरान विशेष रूप से कचहरी परिसर में पार्किंग व्यवस्था, सुरक्षा, और कार्यप्रणाली में उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर गंभीर मंथन हुआ । यह अनुभव किया गया कि दोनों पक्षों के बीच नियमित संवाद और सहयोग से कई मुद्दों का सहज समाधान संभव है। इसी भावना के अंतर्गत "हमारे वकील, हमारे मित्र" अभियान की शुरुआत की गई है। इस अभियान के तहत बीट स्तर से लेकर वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में रहने वाले अधिवक्ताओं से नियमित संवाद करें। वे अधिवक्ताओं से मिलकर उनका हालचाल लेंगे, उनकी समस्याएं जानेंगे, और समाधान के लिए यथासंभव प्रयास करेंगे। अभियान का उद्देश्य- पुलिस और अधिवक्ता समुदाय के बीच पारस्परिक विश्वास एवं समन्वय को मजबूत करना, कचहरी परिसर और न्यायिक वातावरण को और अधिक सौहार्दपूर्ण बनाना, उन नकारात्मक तत्वों को हतोत्साहित करना जो दोनों वर्गों के बीच तनाव उत्पन्न कर समाज में भ्रम फैलाते हैं, इस अभियान को सभी अधिवक्ताओं और पुलिस अधिकारियों से सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा के साथ आज से विधिवत प्रारंभ किया गया है। बैठक में मौजूद सभी गणमान्य जनों ने इस प्रयास की सराहना की और इसे सफल बनाने हेतु सहयोग का आश्वासन दिया।

गौशाला में खामियां मुख्य पशु चिकित्साधिकारी व प्रधान को नोटिस

●जिलाधिकारी ने पतारा गौशाला का किया बारीकी से निरीक्षण

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। जिलाधिकारी ने वृहद गो आश्रय स्थल, बरनाव, पतारा का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान।उन्होंने पाया कि मुख्य मार्ग से गौशाला जाने के मार्ग की हालत बहुत खराब है । गौशाला में पशुओं को हरा चारा के बजाय सूखा चारा दिया जाना पाया गया और चारे में चूनी -चोकर की मात्रा बहुत ही कम मिली। डीएम ने वहां बारीकी से निरीक्षण किया। सूखे चारे में पानी की कमी भी पाई गई। जिस पर जिलाधिकारी ने नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी व संबंधित खंड विकास अधिकारी को गौशाला की अन्य कमियों की पड़ताल कर रिपोर्ट देने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित प्रधान को कारण बताओं नोटिस जारी करने व अन्य संबंधित कर्मचारियों पर आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश देते हुए यह भी कहा कि मूक पशुओं के साथ अमानवीयता करना ठीक नहीं है।शासन से प्रतिदिन, प्रति पशु 50 व्यय करने का प्रावधान है, तब भी उन्हें पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई जा रही है, जो कि अत्यंत खेद का विषय है।

कानपुर में अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस पर गोष्ठी का आयोजन

●श्रमिक हित में श्रम विभाग द्वारा चलाई जा रहीं योजनाओं को बताया

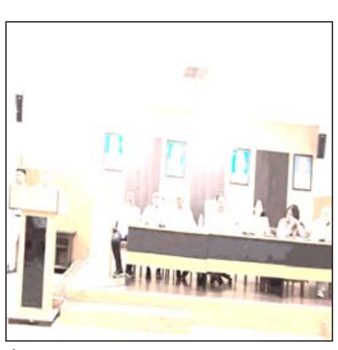

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। आज 01 मई अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर श्रम आयुक्त कार्यालय के मुख्य सभागार में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें श्रमायुक्त उ0प्र0 मार्कण्डेय शाही द्वारा मजदूर दिवस पर प्रकाश डालने के साथ ही श्रम विभाग द्वारा श्रमिकों के कल्याणार्थ विभिन्न बोर्डों द्वारा चलायी जा रही योजनाओं की जानकारी दी गयी । श्रमायुक्त द्वारा 4 श्रम संहिताओं में गैप्स एण्ड डायवर्सन दूर कर नयी नियमावलियाँ प्रकाशित किये जाने पर भी प्रकाश डाला गया साथ ही गोष्ठी में उपस्थित अनिल उपाध्याय, महामंत्री भारतीय मजदूर संघ तथा श्री सुखदेव मिश्रा, भारतीय मजदूर संघ द्वारा विश्वकर्मा जयन्ती 17 सितम्बर को मजदूर दिवस घोषित किये जाने सम्बन्धी की गयी माँग के सम्बन्ध में श्रमायुक्त उ0प्र0 द्वारा इस सम्बन्ध में प्रस्ताव तैयार कर शासन के निर्णयार्थ प्रेषित किये जाने हेतु विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया ।

गोष्ठी में सेवायोजक बलराम नरूला द्वारा अपने विचार रखते हुए कहा गया कि जब उद्योग फले-फूलेगा तभी श्रमिकों का उत्थान हो सकेगा । विद्याकान्त तिवारी, हिन्द मजदूर सभा, एस0ए0एम0 जैदी, एक्टू श्री राणाप्रताव सिंह आदि ने अपने विचार व्यक्त किये । गोष्ठी में अपर श्रमायुक्त सौम्या पाण्डेय, श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव, उप श्रमायुक्त पंकज सिंह राना, श्री अजय कुमार मिश्रा आदि के साथ-साथ कार्यालय के समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे । अन्त में धन्यवाद ज्ञापन अजय कुमार मिश्रा, उप श्रमायुक्त द्वारा दिया गया ।

सिंचाई विभाग की भूमि पर अवैध कब्जा रोकने की कवायद शुरू

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। पट्टी तहसील क्षेत्रांतर्गत नहर के किनारे की अधिकांश जमीनों पर लोग अवैध रूप से कब्जा कर अपने खेतों में मिला लिए हैं, दूसरी तरफ बगल के खातेदारों द्वारा भूमि बेचने पर नहर सीमा की जानकारी न होने के कारण उसे भी बेच देते हैं।कब्जा लेने के दौरान विवाद शुरू हो जाता है।विवाद से बचने व अवैध कब्जा हटाने के लिए इसका सीमांकन करने के लिए विभाग द्वारा कवायद शुरू की गई, जिसके चलते शारदा सहायक खंड 51 नागापुर रजबहा नहर के किनारे की भूमि पर अवैध कब्जा होने के कारण उसके 10 किलोमीटर से 41 किलोमीटर तक बगल के स्थित गांव में नाप करके अवैध कब्जदारों से सिंचाई विभाग की जमीन मुक्त कराई जाएगी जिसमें विकासखंड मंगरौरा के साथ ही विकासखंड बाबा बेलखरनाथ धाम के कुछ गांव शामिल हैं।प्रीतम सराय गांव से लेकर अमसौना गांव तक जहां ज्यादा कब्जा है। वहां प्रभावी कार्यवाही करने के लिए नहर विभाग द्वारा उप जिला अधिकारी पट्टी तनवीर अहमद को पत्र भेज कर कार्यवाही करने के लिए आग्रह किया है, जिसके चलते एसडीएम पट्टी ने राजस्व कर्मीयों को निर्देशित किया है कि तत्काल टीम बनाकर के सीमांकन कार्यवाही पूर्ण की जाय।

आगजनी में दो घरों की गृहस्थी खाक, बछड़े की हुई मौत

प्रतापगढ़। चूल्हे की चिंगारी से घर में अचानक आग लग गयी। इससे दो घरों की गृहस्थी खाक हो गयी। वही गंभीर रूप से झुलसे एक बछड़ा की भी मौत हो गयी। लालगंज कोतवाली के रिसालपुर अलीपुर में राम आसरे सरोज के घर गुरूवार की सुबह खाना बनाते समय चूल्हे से निकली चिंगारी से आग लग गयी। इससे गृहस्थी का सामान जलकर नष्ट हो गया। वहीं आग की लपटें पडोसी फूलचन्द्र के घर भी पहुंच गयी। फूलचंद्र का भी घर का सामान जल गया। वही छप्पर में बंधा एक बछडा गंभीर रूप से झुलस गया। उसकी भी थोड़ी ही देर में मौत हो गयी। हालांकि परिजनों ने जान जोखिम में रखकर गाय को किसी तरह बाहर निकाल लिया। ग्रामीणों ने घंटो मशक्कत कर किसी तरह आग पर काबू पाया। आगजनी में दोनों दलित परिवारों को काफी नुकसान हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

पटेल नगर में पानी के पिछे वोट बैंक की राजनीति चल रही है जनता पानी के लिए दर दर भटक रही हैं टैंकर बहाली का इंतजार

नई दिल्ली पटेल नगर विधानसभा क्षेत्र में पानी पर राजनीति करके नेता लोग अपनी नेता गिरी चमका रहे हैं जनता जल के लिए त्राहिमाम कर रही है टैंकर बहाली के इंतजार में जनता सभी को ज्ञात हो कि पिछले सप्ताह में दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने 1111 टैंकर को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया लेकिन वह टैंकर पटेल नगर विधानसभा से पिछले पांच दिनों से लापता हो गए जल बोर्ड के अधिकारियों से बात की गई तो उन्होंने बताया कि सत्ता पक्ष के लोग जब फोन करेंगे तब पानी का टैंकर भेजा जाएगा यानी लोकतंत्र में जनता की कोई किमत नहीं है उधर टैंकर माफिया ठेकेदार अपनी हद जमाना चाहते हैं सत्ता पक्ष को इस बात का अंदाजा होना चाहिए कि टैंकर को हरी झंडी देने के बाद टैंकर हड़ताल पर चले गए जनता के द्वारा इसमें किसी बड़े नेता की सोची समझी साजिश बताई जा रही है 40 डिग्री टेंपरेचर में जनता को पानी के लिए तड़फा रहे हैं सत्ता पक्ष और स्थानीयविधयक को जनता की हाय लगेगी

मजदूर दिवस के अवसर पर विधिक साक्षरता जागरूकता शिविर आयोजित किया गया

शहडोल, मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, जबलपुर के मार्गदर्शन तथा माननीय प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश / अध्यक्ष महोदय श्री काशीनाथ सिंह एवं श्री श्रीकृष्णन बुखारिया, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, शहडोल के निर्देशानुसार एवं श्री सुशील कुमार अग्रवाल जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति, बुढ़ार की अध्यक्षता में दिनांक 01.05. 2025 मजदूर दिवस के उपलक्ष्य में मजदूरों को उनके अधिकारों एवं उनके कार्यो के प्रति दायित्व बताया जाकर जागरूक किया गया। साथ ही यह भी बताया कि मजदूरों में कुशल मजदूर, अकुशल मजदूर की श्रेणी में किस तरह के मजदूर आते है, मजदूरों की बीमा, कलेक्ट्रेट दर की मजदूरी के संबंध में जागरूक किया। साथ विधिक साक्षरता/ जागरूकता शिविर आयोजन कर इसमें गरीब एवं निम्न तबके के लोगों को जिनकी आय उचित नहीं है, उनको किस तरह से विधिक सहायता उपलब्ध कराया जा सकता है, तत्संबंध में जानकारी दी गयी। उक्त शिविर की अध्यक्षता श्री सुशील कुमार अग्रवाल जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष तहसील विधिक सेवा समिति द्वारा फल वितरित कर की गयी। साथ ही अन्य न्यायिक अधिकारी श्री विजेन्द्र रावत न्यायिक मजिस्ट्रेट वरिष्ठ खण्ड, श्रीमती आकांक्षा तेकाम, न्यायिक मजिस्ट्रेट वरिष्ठ खण्ड, के द्वारा शिविर में उपस्थित होकर सहभागिता प्रदान की गयी।

बच्चों में पुस्तक वितरण

सिद्धार्थनगर। नगर पंचायत बिस्कोहर के वार्ड नं0 03 शक्ति नगर भरौली व कैथवलिया विद्यालय के बच्चों में गुरुवार को निः शुल्क वितरण का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष अजय गुप्ता ने कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती के प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नगर पंचायत अध्यक्ष अजय गुप्ता ने कक्षा 6, 7, 8 के बच्चों में निशुल्क पुस्तक वितरण किया। उन्होंने बच्चों को लगन और मेहनत से पढ़ाई करने लिए कहा।इस दौरान सभासद प्रतिनिधि लालजी जायसवाल, प्रधानाध्यापक संजय पाण्डेय, अमन चौरसिया, शिवपत उपाध्याय, उत्तम शर्मा आदि मौजूद रहे।

बैंक से निकले व्यक्ति की जेब से उड़ाए 34 हजार रुपये

मथुरा। कस्बा राया में दो शातिर महिलाओं ने बैंक से रुपये निकाल कर ला रहे व्यक्ति की जेब से रुपये पार कर दिए। चोरी की घटना सीसीटीवी में कैद हो गयी। बताया गया गांव आशा की गढ़ी निवासी गिरजि सिंह गुरुवार को बैंक से 34 हजार रुपये निकाल कर हाथरस मथुरा मार्ग पर परचून की दुकान से सामान कुछ सामान खरीदने लगे। इस दौरान पीछे खड़ी दो शातिर महिलाओं ने दुकानदार से चिप्स का पैकेट खरीदने के बहाने उनकी जेब में रखे 34 हजार रुपये पार कर दिए। पैसे चोरी की घटना सीसीटीवी में कैद हो गयी। पीड़ित ने घटना की सूचना थाना राया में दी। सूचना पर पहुची पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर महिलाओं की तलाश शुरू की है।

गोंडा में जानलेवा हो रहे पुल- रेलिंग के अभाव में मौत को दावत, बरसात से पहले खतरे की घड़ी

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। जिले में विकास के नाम पर बने पुल अब लोगों की जान के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। कई स्थानों पर वर्षों पुराने पुलों पर रेलिंग तक मौजूद नहीं है। हालात इतने गंभीर हैं कि रोजमर्रा की आवाजाही में लोग जान जोखिम में डालकर इन पुलों को पार कर रहे हैं। अब जब बरसात का मौसम दस्तक देने को है, तो यह समस्या और विकराल रूप लेने वाली है। पानी के बहाव, सड़क पर फिसलन और कम दृश्यता के कारण बिना रेलिंग वाले पुल सीधे मौत की दहलीज़ बन सकते हैं।

हादसों की बढ़ती कड़ी- एक पुल, कई ज़िंदगियाँ खत्म

मंगल नगर से सिसई बीरपुर ,गेंधारिया को जोड़ने वाले संपर्क मार्ग पर स्थित विसुही नदी पर बने पुल से पिछले साल बरसात एक साइकिल सवार की गिरकर मौत हो गई। जो बहराइच के ग्राम पंचायत मल्लोह निवासी विपुल मिश्रा की पहचान किया गया था। लेकिन पुल पर सुरक्षा रेलिंग का न होना प्रमुख कारण रहा। यह पुल वर्ष 1996 से सरयू ड्रेनेज खंड प्रथम, गोंडा के अधीन है, लेकिन अब तक इसकी कोई मरम्मत नहीं कराई गई।

जनता बेहाल, प्रशासन निढाल

पूर्व भाजपा जिला कार्यकारिणी समिति के सदस्य मलखान सिंह कोरी ने बताया कि रेलिंग की मरम्मत व निर्माण के लिए उन्होंने कई बार विभागीय अधिकारियों को पत्र सौंपे, लेकिन आज तक न कोई निरीक्षण हुआ, न कार्य प्रारंभ। "यह केवल लापरवाही नहीं, बल्कि जानबूझ कर की जा रही उपेक्षा है।

बरसात में और बढ़ेगा खतरा

स्थानीय ग्रामीणों और जनप्रतिनिधियों का कहना है कि जब सड़कें फिसलनभरी होंगी और नदी का जलस्तर बढ़ जाएगा, तब इन पुलों से गुजरना और भी खतरनाक हो जाएगा। खासतौर पर स्कूली बच्चे, बुजुर्ग, महिलाएं और दोपहिया वाहन चालकों के लिए ये पुल जानलेवा साबित हो सकते हैं।

अधिकारियों के सम्पर्क करने पर नहीं उठ रहे फोन

ड्रेनेज खंड के अधिक्षण अभियंता तथा अधिशासी अभियंता से सम्पर्क किया गया लेकिन फोन की घंटिया बजती रही लेकिन कोई जबाब नहीं माला।

जनता की मांग – बरसात से पहले हो कार्रवाई

ग्रामीणों की साफ मांग है- जिले में जितने भी पुल बिना रेलिंग के हैं, उनकी त्वरित जांच कर मरम्मत की जाए। खासकर बरसात के मौसम के पहले सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। यदि समय रहते कार्रवाई नहीं हुई, तो आने वाले दिनों में ऐसी और मौतें प्रशासन की नैतिक जिम्मेदारी बन जाएंगी।

निष्कर्ष

गोंडा जैसे जिले में जहां पुल गांवों को जोड़ने का एकमात्र ज़रिया हैं, वहां इनकी अनदेखी किसी भी कीमत पर स्वीकार्य नहीं हो सकती। यह सिर्फ एक बुनियादी सुविधा नहीं, बल्कि आम जनता की सुरक्षा से जुड़ा विषय है। उम्मीद की जानी चाहिए कि शासन-प्रशासन इस चेतावनी को गंभीरता से ले और समय रहते कदम उठाए।

दीपक गोदारा की IAS परीक्षा में सफलता पर दिल्ली देहात द्वारा भव्य अभिनंदन समारोह आयोजित

स्वतंत्र प्रभात

नई दिल्ली भरथल गाँव निवासी युवा दीपक गोदारा की संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) की सिविल सेवा परीक्षा में 92वीं रैंक प्राप्त करने पर दिल्ली देहात के लोगों एवं जाट समाज द्वारा उनका भव्य अभिनंदन किया गया। यह कार्यक्रम बमरौली स्थित सुल्तान फार्म हाउस में आयोजित किया गया, जिसमें समाज के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया।दीपक गोदारा ने कठिन परिश्रम, अनुशासन और समर्पण के बल पर यह प्रतिष्ठित उपलब्धि प्राप्त की है। उनकी इस सफलता से न केवल परिवार, बल्कि सम्पूर्ण समाज गौरवांवित हुआ है।इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री विजय लोचव ने की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय युवा चेतना मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं फेडरेशन ऑफ साउथ एंड वेस्ट डिस्ट्रिक्ट वेलफेयर फोरम के चेयरमैन श्री रणबीर सिंह सोलंकी, पालम गांव 360 के प्रधान श्री सुरेंद्र सोलंकी, दादादेव प्रबंधन कमेटी (पालम 12 गांव) के नव-निर्वाचित प्रधान श्री ओमवीर सोलंकी, निगम पार्षद श्रीमती सुनीता रामनिवास, दिलबाग सोलंकी, तेजपाल नसीरपुर सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।सभी अतिथियों ने दीपक गोदारा को पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र सोलंकी ने कहा, ÷दीपक समाज के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं और वह प्रशासनिक सेवा के माध्यम से समाज का नाम रोशन करेंगे। वहीं श्री रणबीर सिंह सोलंकी ने अपने संबोधन में कहा दीपक जैसे युवा देश के कर्णधार हैं। उनकी तपस्या और लगन से अन्य युवाओं को भी प्रेरणा लेनी चाहिए। हमें विश्वास है कि वे पारदर्शी और भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन की दिशा में सकारात्मक योगदान देंगे।

आम आदमी पार्टी के सीनियर कार्यकर्ता निगम पार्षद अंकुश नारंग एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाएंगे

स्वतंत्र प्रभात

प्रदीप यादव

नई दिल्ली पटेल नगर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष का नाम फाइनल कर दिया है आम आदमी पार्टी के तरफ से अंकुश नारंग दिल्ली एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी निभाएंगे आम आदमी पार्टी ने इसकी जिम्मेदारी अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा की है आम आदमी पार्टी ने कहा की सूचित करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि पटेल नगर विधानसभा क्षेत्र से रंजीत नगर के वार्ड नंबर 87 से पार्षद अंकुश नारंग को दिल्ली नगर निगम में विपक्ष के नेता के रूप में चुना गया है अंकुश नारंग ने भी पत्र को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किया और धन्यवाद कहा आम आदमी पार्टी ने अंकुश नारंग को राष्ट्रीय संयुक्त सचिव मुंबई प्रभारी के साथ-साथ जम्मू कश्मीर में सह प्रभारी पद पर सौंप रखा है अब एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका निभाएंगे एमसीडी में अब भाजपा की सरकार है लिहाजा अंकुश नारंग को बतौर विपक्ष की आवाज बुलंद करनी होगी सभी को बता दें कि आम आदमी पार्टी ने एमसीडी में मेयर चुनाव से दूरी बना ली थी इसके चलते एमसीडी में भाजपा की एक तरफ जीत हो गई बीजेपी के राजा इकबाल सिंह ने मेयर पद पर और जय भगवान यादव ने डिप्टी मेयर पद पर जीत हासिल की है अब दिल्ली में भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार है इसी के बीच अंकुश नारंग एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष की भूमिका जोरदार तरीके से निभाएंगे वही पटेल नगर विधानसभा में चौमुखी विकास के लिए पहचाने जाने वाले अंकुश नारंग प्रत्येक पटेल नगर वासियों के दिल पर सीधा राज करते हैं अंकुश नारंग के एक आवाज पर पूरा पटेल नगर विधानसभा अंकुश नारंग के साथ खड़ा हो जाता है इसी के प्रति अंकुश नारंग पटेल नगर के बेटा कहे जाते हैं आने वाले समय में देखने योग्य वाली बात होगी कि अंकुश नारंग नेता प्रतिपक्ष की भूमिका दिल्ली के एमसीडी में कैसे निभाते हैं फिलहाल में पटेल नगर की जनता को अंकुश नारंग पर भरपूर भरोसा है

उत्कृष्ट कार्य के लिए सीडीओ ने किया सम्मानित

मथुरा। जलागम विकास घटक प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के दूसरे चरण के अंतर्गत दिये गये कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से गुणवत्ता के साथ समय पर पूरा करने वाले कर्मचारियों को मुख्य विकास अधिकारी मनीष मीना ने अपने कार्यालय में सम्मानित किया। इस दौरान जिला कृषि अधिकारी अश्वनी कुमार भी मौजूद रहे। उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मान पाने वालों में श्रीमती किरण चौधरी, अवर अभियंता संदीप कुमार, अवर अभियंता विक्रम सिंह, वरिष्ठ सहायक मनोज कुमार, वरिष्ट सहायक मनोज कुमार सिंह आदि थे। सभी कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। मुख्य विकास अधिकारी मनीष मीना ने बताया कि जनपद के बलदेव ब्लॉक में संचालित यह योजना क्षेत्रीय लोगों को रोजगार सृजन, जन संरक्षण, उत्पादन प्रणाली एवं प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने में सहायक होगी।

समस्तीपुर में तेज रफ्तार हाइवा ने महिला को कुचला! मौके पर हुई मौत, घायल बेटे की हालत गंभीर

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर में गुरुवार की सुबह सड़क हादसे में एक महिला की कुचलकर मौत हो गई। घटना विभूतिपुर थाना क्षेत्र के खोकसाहा गांव में संस्कृत विद्यालय के पास की है, जहां टोटो पर अपने बेटे के साथ सवार एक महिला टोटो से सड़क पर गयी। इस दौरान विपरीत दिशा से आ रही तेज रफ्तार हाइवा ने उन्हें कुचल दिया। इस हादसे में महिला मौके पर ही मौत हो गयी, जबकि उसका दो साल का बेटा घायल हो गया। मृतक महिला की पहचान विभूतिपुर पतैलिया पंचायत निवासी पंकज दास की पत्नी सृष्टि देवी के रूप में हुई है। वह अपने बेटे के इलाज के लिए टोटो पर सवार होकर दलसिंहसराय जा रही थीं। इसी दौरान संस्कृत विद्यालय के पास टोटो का अगला चक्का सड़क पर रखी ईंट से टकरा गया। वाहन बेकाबू हो पलट गया और सृष्टि नीचे गिर गईं।

इसी दौरान विपरीत दिशा से आ रही अनियंत्रित हाइवा ने महिला को कुचल दिया। जिससे मौके पर ही महिला की मौत हो गयी और उसका बेटा गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जिसे स्थानीय लोगों ने निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। वहीं महिला की मौत से परिजनों में मातम छाया हुआ है। बताया गया है सृष्टि की शादी पांच साल पहले हुई थी। उनके दो बच्चे हैं। उनके पति हरियाणा में मजदूरी करते हैं। ग्रामीणों के अनुसार, इस स्थान पर पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। सड़क किनारे निर्माण सामग्री का अव्यवस्थित ढंग से रखा गया। जिससे लोंगो को आने जाने में काफी परेशानी होती है। वहीं बालू और गिट्टी के ढेर और खराब सड़क हादसों का कारण बन रहे हैं। स्थानीय लोगों ने इस जगह पर शीघ्र सड़क निर्माण कराने की मांग की है। इस मामले में विभूतिपुर थानाध्यक्ष आनंद कश्यप ने बताया कि सुचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। हाइवा को जब्त कर लिया गया है और आगे की कार्रवाई की जारी है।

ग्रामीण क्षेत्र में खेल मैदान बनने से गांव में छिपी प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा- जगदंबिका पाल

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। किसान भाईयों के बच्चे खेल का प्रैक्टिस कर सकते हैं। प्रैक्टिस करके जिले का व देश का नाम रोशन करेंगे। इसके साथ ही साथ भारत सरकार एवं प्रदेश सरकार खिलाड़ियों के प्रति संवेदनशील है। यह बातें सांसद जगदंबिका पाल ने कहीं। वह बुधवार को देर शाम बर्डपुर ब्लाक के ग्राम पंचायत बर्डपुर न0 3 में सुभाष मॉडल पार्क 38.47 लाख की लागत से निर्मित खेल मैदान के उद्घाटन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेल मैदान बनाने से गांव में छिपी हुई प्रतिभाओं को आगे बढ़ाने का मौका मिलेगा।

इस अवसर पर विधायक श्यामधनी राही ने कहा कि भारत सरकार /प्रदेश सरकार द्वारा सभी ग्राम पंचायतों में खेल मैदान बनाने का कार्य कर रही है जिससे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी खेल में उत्कृष्ठ प्रदर्शन कर जनपद स्तर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच सके। कार्यक्रम को जिलाध्यक्ष भाजपा कन्हैया पासवान, जिलाधिकारी डा राजा गणपति आर, मुख्य विकास अधिकारी जयेन्द्र कुमार, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट आयुष अग्रवाल आदि ने सम्बोधित किया। इस दौरान सांसद प्रतिनिधि एसपी अग्रवाल, जिला विकास अधिकारी गोपाल प्रसाद कुशवाहा, डीसी मनरेगा संदीप सिंह,

खण्ड विकास अधिकारी विजय सिंह, विनय श्रीवास्तव, मोहम्मद अजहर, अशुतोष, विशाल सिंह, मनोहर बरनवाल, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि निसार अहमद, ग्राम प्रधान मोमिना खातून, अंशिका पटेल, रेखा चौधरी सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

आतंकी हमले के मृतकों की आत्मशांति को तीर्थ पुरोहितों ने किया अनुष्ठान

मथुरा। गुरुवार को अखिल भारतीय तीर्थ पुरोहितों महासंघ द्वारा पहलगांव हमले में मारे गए हिंदू पर्यटकों की आत्मशांति के लिए महानगर के लालगंज स्थित प्राचीन जागेंद्र नाथ महादेव मंदिर पर महंत आचार्य दीपक शास्त्री के निर्देशन में भगवान सदाशिव परिवार का पूजन संकल्प कर गंगाजल से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विशेष रुद्राभिषेक कर भगवान महाकाल से इस्लामिक आतंकवाद में मारे गए हिन्दू पर्यटकों की आत्मा को सदगति प्रदान करने की कामना की। महासंघ के ब्रजमंडल महामंत्री यज्ञदत्त शास्त्री द्वारा देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मांग करते हुए कहा कि कब तक अपने ही देश में हिन्दू मरता रहेगा अब वक्त आ चुका है देश आपकी ओर विश्वास की आस लगाए बैठा है कि आतंवादियों और उनका पोषण करने वाले पाकिस्तान को हिंदुओं पर हमला करने से पहले सौ बार सोचना पड़ जाये। अभिषेक कर श्रद्धांजलि देने वालों में आचार्य लालजीभाई शास्त्री, पंडित अमित भारद्वाज, पंडित मुरारीलाल उपाध्याय गोपाल चतुर्वेदी पत्रकार नीरज चतुर्वेदी विकास तिवारी आदि थे।

जिलाधिकारी ने निमार्ण कार्य का किया निरीक्षण, गुणवत्ता ठीक न पाए जाने पर जताई नाराजगी

● डीएम ने जेई को प्रतिकूल प्रविष्ट देने का दिया निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय नौगढ़ के एडिशनल डारमेट्री का जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्धारा भवन के गुणवत्ता को चेक किया गया। बीम में हनी काम्बिंग पायी गयी। जिस पर जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 ने वर्तमान निर्माण में दो प्रतिशत कटौती करने का निर्देश दिया।शोहरतगढ़ क्षेत्र के ग्राम सड़क योजना अन्तर्गत शोहरतगढ़ चेतिया मार्ग महमुदवा ग्रान्ट का जिलाधिकारी ने निरीक्षण किया । निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 द्वारा सड़क की लम्बाई व चौड़ाई को नापकर तथा सड़क को खुदवाकर देखा गया। गुणवत्ता मानक अनुरूप ठीक पाया गया। तथा विकास खण्ड शोहरतगढ़ के हाई स्कूल नीवी में स्वच्छ पेयजल की सुविधा, शौचालय, अतिरिक्त कक्षा-कक्ष,प्रयोगशाला, मल्टी परपज हाल एवं पुस्तकालय निर्माण कार्य का जिलाधिकारी ने निरीक्षण किया । निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी डा0 राजा गणपति आर0 ने निर्माण में प्रयोग हो रहे ईट की गुणवत्ता ठीक न पाये जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए 10 प्रतिशत कटौती करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही शेष बचा हुआ कार्य समय से एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्था सीएनडीएस के जे0ई0 निहाल को प्रतिकूल प्रविष्टि देने का निर्देश दिया।

अभूतपूर्व बंदः मथुरा ने महसूस किया लॉकडाउन वाला सन्नाटा

● दुकान बंद रहीं, ठेल ढकेल तक रहीं नदारद

बंद तो बहाना था आतंक के खिलाफ गुस्सा दिखाना था

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा बंद के दौरान बाजारों में पसरा सन्नाटा।

मथुरा। मथुरा ने एक बार फिर लॉकडाउन वाला सन्नाटा महसूस किया। हालांकि इस बार कोई किसी को टोक नहीं रहा था, नहीं पुलिसकर्मी बैरियर लगा कर रोक रहे थे। बावजूद इसके बाजारों में सन्नाटा पसरा था और लोग घरों से बाहर नहीं निकले। शायद उन्होंने घर बैठे ही अंदाजा लगा लिया था कि बाजार पूरी तरह बंद है और बाहर निकलने का कोई मतलब नहीं है। हालांकि शिक्षण संस्थाएं खुली, अगर कहीं चहल पहल थी तो वह स्कूल कॉलेज ही थे। बाकी सब सन्नाटे के आगोश में था। हालांकि दोपहर दो बजे बाद इक्का दुक्का खाने पीने की दुकानें खुली और देखा देखी दूसरी दुकानें भी शाम तक खुल गई, हालांकि तब तक मथुरा बंद का उद्देश्य पूर्णतः सफल हो गया था। इस बीच मथुरा ने राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का जीवंत उदाहरण पेश किया। सन्नाटे के बीच मथुरा ने बंद के कुछ घंटों में राष्ट्रीय भावनाओं की मूक अभिव्यक्ति की गूंज महसूस की। शाम को लोग यह चर्चा करते दिखे कि इस तरह का सफल बंद उन्होंने अपने जीवन में नहीं देखा। चर्चा करने वालों में हर उम्र के लोग शामिल थे। अभी तक यह देखा गया था कि असरदार करे जाने वाले बंद का असर भी होलीगेट के आसपास के बाजारों की दुकानों के गिरे हुए शटरों से आंका जाता था। पहलगांव में हुई आतंकी घटना के विरोध में गुरुवार को बंद के आह्वान का असर समूचे मथुरा शहर में एकरूपता से देखने को मिला। शहर के बाहरे इलाकों में भी दुकानें पूरी तरह से बंद थीं। इस बार न कोई झंडा लेकर और नहीं कोई डंडा लेकर बाजार बंद कराने निकला था। न युवाओं की टोलियां ही बाजार में नारेबाजी करते हुए घूम रहीं थीं। यह राष्ट्रीय भावनाओं से लबरेज बंद था जिसे लम्बे समय तक मथुरा याद रखेगा। विश्व हिंदू परिषद के आव्हान पर व्यापारी संगठन, बार एसोसिएशन, होटल एसोसिएशन आदि ने भी इस बंद का समर्थन किया। यह एक तरह से संयुक्त आह्वान और मूक समर्थन था जिसका असर बंद वाले दिन दिखा।

रजिस्ट्री कार्यालय में नहीं हुआ काम, बार भी समर्थन में रहा

मथुरा बार एसोसिएशन के सचिव शिवकुमार लवानिया ने डीजे, डीएम, प्रधान परिवार न्यायाधीश, पीठासीन अधिकारी एमएसीटी व जिला उपभोक्ता फोरम को भेज पत्र में कहा है कि 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर स्थित पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा भीवत्स नरसंहार के विरोध में संपूर्ण भारत बंद का आवाहन किया गया है। जिसके कारण अधिवक्तागण एवं वादकारीगण न्यायालय आने में असमर्थ हैं। इन सभी हालात को देखते हुए बार एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रदीप कुमार शर्मा एडवोकेट के निर्देशानुसार समस्त अधिवक्तागण आज पूर्ण दिवस न्यायिक कार्य से विरक्त रहे। इसके चलते गुरुवार को जिला न्यायालय में वकीलों ने कोई काम नहीं कर अपना विरोध प्रदर्शित किया। रजिस्ट्री कार्यालय में भी दस्तावेज लेखकों ने घटना के विरोध में आज रजिस्ट्री ऑफिस के बाहर गेट पर ताला लगा दिया। इसके चलते कोई भी रजिस्ट्री कराने के लिए कार्यालय पर नहीं आया। दस्तावेज लेखक निबंधन समिति के अध्यक्ष सुरेश चौधरी, संरक्षक सोहनलाल शर्मा, सचिव केके चौधरी, उपाध्यक्ष रामकिशन पाठक एड, प्रेम सिंह, द्वारकाप्रसाद, शर्मा, कोषाध्यक्ष अनिल चतुर्वेदी ने इस घटना के विरोध में रजिस्ट्री कार्यालय पर प्रदर्शन करते हुए मथुरा बंद का समर्थन किया। इस बंद के चलते सिविल लाइन्स क्षेत्र में पुलिस लाइन, जिला न्यायालय परिसर के बाहर वाले रोड पर जाम जैसे हालात नजर नहीं आए।

देहात में बंद का बेअसर रहा

महानगर में जहां बंद अभूतपूर्व रहा वहीं देहात में बंद का असर नहीं दिखा। कोसीकला, गोवर्धन, राया, वृंदावन आदि बाजार और कस्बों में बंद को लेकर लोगों में चर्चा तो रही लेकिन दुकान और प्रतिष्ठान विधवत खुले। राया में हमेशा की तरह बाजार में प्रतिष्ठान खुले रहे और सड़कों पर लोगों की चहल-पहल रही। निजी स्कूल, अस्पताल अन्य संस्थान भी खुले रहे। सभी प्रतिष्ठानों, कैबिनों पर व्यवसाय चालू होने के साथ यात्रियों ने भी रोजाना की तरह बसों, टैक्सियों ऑटो रिक्शाओं में आवागमन किया।

जिला अस्पताल में पैथोलॉजी की छत का का हिस्सा गिरा

● टाइल्स लगने से सीनियर पैथोलॉजिस्ट हुआ घालय

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। जिला अस्पताल में पैथोलॉजी लैब कक्ष की छत का प्लास्टर गुरुवार की दोपहर में गिर गया। सीनियर पैथोलॉजिस्ट इसमें घायल हो गये। पैथोलॉजी में कार्यरत कर्मचारियों ने इस पर नाराजगी जताई है। कर्मचारियों का कहना है कि करीब छह महीने पहले इस कक्ष में कार्य हुआ था। जिस समय कार्य किया जा रहा था उसी समय यह बताया गया कि कार्य संतोषजनक नहीं किया जा रहा है। छह महीने भी नहीं हुए कि छत पर लगाई गई सीलिंग गिर गई है। हालांकि गनीमत रही कि जिस समय घटना हुई कोई मरीज लैब में नहीं थी। मरीज होते तो उन्हें भी चोट लग सकती थी। टायल्स गिरने से अफरा तफरी मच गई। सीनियर पैथोलॉजिस्ट के घायल होने की सूचना पर चिकित्सक और अस्पताल प्रशासन के लोग मौके पर पहुंच गए। हादसे में घायल सीनियर पैथोलॉजिस्ट आरके चूड़ामणि का हालचाल जाना। आरके चूड़ामणि ने घटना पर नाराजगी जताई और कहा कि आदसा बडा हो सकता था। मरीज लैब में नहीं थे यह अच्छा रहा। उन्हें भी चोट लग सकती थी। उन्होंने कहा कि यह बताए जाने के बाद भी कि लैब कक्ष में ठीक से काम नहीं हुआ है और वह अन्य कर्मियों के साथ काम करते समय असुरक्षित महसूस करते हैं उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया गया। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि अब इस ओर ध्यान दिया जाएगा। काम कराने वाली फर्म के खिलाफ भी कार्यवाही की जाएगी। इस घटना को लेकर सीएमएस की अनुपस्थित में डा. अमन सक्सेना ने बताया कि पैथोलॉजी लैब की छत गिरने से स्वास्थ्यकर्मी घायल हुए हैं। छह माह पूर्व लैब में ऐजिंग का काम हुआ था जो घटना हुई है इस की जांच कराई जाएगी।

सीनियर पैथोलॉजिस्ट के सिर में लगी चोट।

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस भट्ठा मजदूरों को किया गया जागरूक

श्रम कार्यालय के अधिकारियों ने श्रमिकों से किया सीधा संवाद

मथुरा। अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस की अवसर पर श्रम विभाग एवं समाजसेवी संस्थाओं के द्वारा ईट भट्ठा मजदूरों को उनके हित में विभिन्न श्रम कानून की जानकारी देकर जागरूक किया गया इसी के साथ उन्हें उनके अधिकारों के बारे में बताया गया तथा कार्य स्थल पर मालिकों के द्वारा कौन-कौन सी आवश्यक सुविधाएं दी जानी चाहिए इसके लिए भी उन्हें अवगत कराया गया। सहायक श्रम आयुक्त एमएल पाल ने उपस्थित विभिन्न ईट भट्टों पर कार्य करने वाले मजदूरों को संबोधित करते हुए बताया मजदूरों को उनका हक दिलवाने के लिए दर्जनों भर श्रम कानून देशभर में लागू है यदि कोई सेवायोजक किसी मजदूर को निर्धारित समय से अधिक कार्य करवाता है तो उसका अतिरिक्त पैसा दिया जाने का प्रावधान है कोई मालिक मजदूर को पैसा नहीं देता है उसके लिए भी कानून में व्यवस्था है मौसम के अनुकूल जीवन उपयोगी वस्तुओं का प्रबंधन भी मालिकों के द्वारा किया जाना आवश्यक है। इस अवसर पर एसपी पाण्डेय श्रम प्रवर्तन अधिकारी द्वारा भीषण गर्मी से बचाव के बारे में सावधानी बरतने व बचाव के उपाय बताए गये। कार्यक्रम आयोजन में स्वयं सेवी संगठन सीईसी एवं जनसाहस सस्था द्वारा सहयोग किया गया। इस अवसर पर नीलम श्रम प्रवर्तन अधिकारी, श्रीमती लोकेश, आलोक रंजन, ललित नरेंद्र कुमार एवं आलोक के अलावा भारी संख्या में महिला पुरुष मजदूर उपस्थित रहे।